परिशिष्ट-एक,
"परीक्षा योजना"

(1) चयन दो चरणों में होगी, प्रथम चरण ऑनलाइन परीक्षा एवं द्वितीय चरण साक्षात्कार।

ऑनलाइन परीक्षा	–	300 अंक
साक्षात्कार	–	30 अंक
कुल	–	**330 अंक**

(2) **ऑनलाइन परीक्षाः–**

(i) ऑनलाइन परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रकार के एक प्रश्न पत्र निम्नानुसार होगाः–

प्रश्न पत्र

प्रश्नों की संख्या 150	**3:00 घंटे**	**अंक 300**
भाग 1 – सामान्य ज्ञान	– 50 प्रश्न (100 अंक)	
भाग 2 – संबंधित विषय	– 100 प्रश्न (200 अंक)	
कुल	**– 150 प्रश्न (300 अंक)**	

(3) ऑनलाइन परीक्षा के प्रश्न पत्र वस्तुनिष्ठ (बहु विकल्प प्रश्न) प्रकार के होंगे, प्रत्येक प्रश्न के लिये चार संभाव्य उत्तर होंगे जिन्हें अ, ब, स एवं द में समूहीकृत किया जाएगा जिनमें से केवल एक उत्तर सही/निकटतम सही होगा, उम्मीदवार को उत्तर पुस्तिका में उसके द्वारा निर्णित सही/निकटतम सही माने गये अ, ब, स या द में से केवल एक विकल्प का चयन करना होगा।

(4) प्रश्न पत्र में ऋणात्मक मूल्यांकन का प्रावधान होगा। ऋणात्मक मूल्यांकन हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाएगाः –

$$MO = M \times R - {}^{1}/_{3} M \times W$$

जहां MO = अभ्यर्थी के प्राप्तांक, M = एक सही उत्तर के लिए निर्धारित प्राप्तांक अथवा प्रश्न विलोपित किए जाने की स्थिति में पुनः निर्धारित प्राप्तांक, R = अभ्यर्थी द्वारा दिए गए सही उत्तरों की संख्या तथा W = अभ्यर्थी द्वारा दिए गए गलत उत्तरों की संख्या है। उक्त सूत्र का प्रयोग कर प्राप्तांकों की गणना दशमलव के चार अंकों तक की जाएगी।

(5) पाठ्यक्रम की जानकारी **परिशिष्ट–दो** में दी गई है।

(6) प्रश्न पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में होगा।

(7) ऑनलाइन परीक्षा के अन्तर्गत उम्मीदवारों को प्रश्न पत्र में कम से कम 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों के मामले में अर्हकारी अंक केवल 23 प्रतिशत होंगे।

(8) **साक्षात्कारः**– साक्षात्कार के लिए कोई अर्हकारी न्यूनतम अंक नहीं है।

(9) **साक्षात्कार** के लिए आमंत्रित किये जाने वाले उम्मीदवारों की संख्या, विज्ञापन में दिए गए रिक्त स्थानों की संख्या से लगभग तीन गुनी होगी। केवल वे उम्मीदवार, जिन्हें आयोग द्वारा ऑनलाइन परीक्षा में अर्ह घोषित किया जावेगा, वे साक्षात्कार के लिए पात्र होंगे।

(10) **चयन सूचीः**– उम्मीदवार का चयन ऑनलाइन परीक्षा एवं साक्षात्कार में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर गुणानुक्रम एवं प्रवर्गवार किया जाएगा।

□□□□□

परिशिष्ट-दो,
''पाठ्यक्रम''

भाग-1 :: सामान्य ज्ञान ::

1. भारत का इतिहास एवं भारत का स्वतंत्रता आंदोलन।
2. छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं स्वतंत्रता आंदोलन में छ.ग. का योगदान।
3. भारत का भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक भूगोल। (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)
4. भारत का संविधान एवं राजव्यवस्था, छ.ग. का प्रशासनिक ढांचा, स्थानीय शासन एवं पंचायती राज।
5. भारत की अर्थव्यवस्था, वाणिज्य, उद्योग, वन एवं कृषि। (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)
6. छ.ग. की जनजातियां, बोली, तीज, त्यौहार, नृत्य, पुरातात्विक एवं पर्यटन केंद्र
7. समसामयिक घटनाएं एवं खेल (भारत एवं छ.ग. के संदर्भ में)
8. पर्यावरण।

PART-1 :: GENERAL KNOWLEDGE ::

1. History of India and Indian national movement.
2. History of Chhattisgarh and Contribution of Chhattisgarh in national movement.
3. Physical, Social and Economic geography of India. (With special reference to Chhattisgarh)
4. Constitution of India and Polity, Administrative structure of Chhattisgarh, Local Government of Chhattisgarh and Panchayati Raj.
5. Economy, Commerce, Industry, Forest and agriculture of India. (With special reference to Chhattisgarh)
6. Tribes, Special tradition, Teej and festival, Dance, archaeological and tourist centres of Chhattisgarh.
7. Current affair and sports (With reference to India and Chhattisgarh)
8. Environment.

भाग-2 :: संबंधित विषय ::

(01) व्याख्याता, संहिता सिद्धान्त हेतुः-

1. संहिता में उपलब्ध अध्ययन एवं अध्यापन पद्धति–तन्त्रयुक्ति, तन्त्रगुण, तन्त्रदोष, ताच्छिल्य, वादमार्ग, कल्पना, अर्थाश्रय, त्रिविध ज्ञानोपाय, पद, पाद, श्लोक, वाक्य, वाक्यार्थ की अध्यापन विधि वृहदत्रयी में उल्लेखित चतुष्क एवं विभिन्न स्थानों का अर्थ एवं उपयोगिता।
2. पाण्डुलिपि विज्ञान – संग्रहण, संरक्षण सूचीकरण समन्वयन के माध्यम से महत्वपूर्ण संपादन, प्राप्ति (विभिन्न स्त्रोतों में पाए जाने वाले सबसे स्वीकार्य तत्वों को शामिल करते हुए पाठ का एक महत्वपूर्ण संशोधन), सुधार (सुधार के लिए परिवर्तन) और पाण्डुलिपियों की मूल आलोचना (महत्वपूर्ण विश्लेषण) संपादित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन।
3. सुश्रुत संहिता के अनुसार बीज चतुष्ट्य सिद्धांत (पुरूष, व्याधि, कियाकाल, औषध)
4. न्याय (मैक्सिम्स) का परिचय एवं उपयोगिता – जैसे शिलापुत्रक न्याय, कपिंजलाधिकरण न्याय, गुणाक्षर न्याय, गोबलीवर्द न्याय, नपृष्ठ, गुरूओ वदन्ती न्याय, श्रृंगगृहक न्याय, छत्रिनो गच्छन्ति न्याय, शतपत्रभेदन न्याय, सूचीकटाह न्याय।
5. वर्तमान समय में संहिता की उपयोगिता एवं महत्व।
6. जीवन शैली जन्य विकारों के संबंध में वर्तमान युग में संहिता में वर्णित आदर्श जीवनशैली की नैतिकता और सिद्धांतों का महत्व।
7. समकालीन विज्ञान के साथ मौलिक सिद्धांतों की व्याख्या एवं सह–संबंध।
8. आयुर्वेद में सिद्धांत की परिभाषा, प्रकार एवं प्रकार के व्यावहारिक उदाहरण।
9. संहिता में वर्णित आयु एवं आयु के घटक।
10. कारण–कार्यवाद का सिद्धांत, एवं इसकी आयुर्वेद के अनुसंधान के उन्नयन में उपयोगिता।
11. आयुर्वेद एवं दर्शन के अनुसार सृष्टी उत्पत्ति के सिद्धांत एवं इसकी प्रकिया।
12. त्रिस्कंध (हेतु, लिंग, औषधि) की उपयोगिता एवं महत्व, इसकी अध्यापन, अनुसंधान तथा चिकित्सकीय कार्य में आवश्यकता।
13. विभिन्न मौलिक सिद्धांतों के व्यावहारिक पक्षः त्रिदोष, त्रिगुण, पुरूष एवं आत्मनिरूपण, षड्पदार्थ, आहार–विहार, परीक्षा (प्रमाण) की व्यापकता एवं महत्व।
14. शरीर प्रकृति एवं मानस प्रकृति के ज्ञान का महत्व।
15. आयुर्वेद एवं षड्दर्शन के सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन।
16. संपूर्ण चरक संहिता, चक्रपाणी कृत आयुर्वेद दीपिका की व्याख्या के साथ।
17. चरक संहिता पर उपलब्ध सभी व्याख्याओं के बारे में परिचयात्मक जानकारी।
18. सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान एवं शारीर स्थान के साथ आचार्य डल्हण कृत निबंध संग्रह की व्याख्या।
19. अष्टांग हृदयम सूत्र स्थान के साथ अरूण दत्त कृत सर्वांगसुन्दरी की व्याख्या।
20. सुश्रुत संहिता एवं अष्टांग हृदय पर उपलब्ध सभी व्याख्याओं के बारे में परिचयात्मक जानकारी। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, अष्टांग संग्रह में वर्णित सिद्धांतों का विश्लेषण विशेष रूप से लोक पुरूष साम्य, षड्पदार्थ, प्रमाण, सृष्टि उत्पत्ति, पंच महाभूत, पीलूपाक, पिठरपाक, कारण कार्यवाद, तन्त्रयुक्ति, न्याय (मैक्सिम्स), आत्मतत्व सिद्धांत।
21. सत्कार्यवाद, आरंभवाद, परमाणुवाद, स्वभावोपरमवाद, स्वभाववाद, यदृच्छावाद एवं कर्मवाद का महत्व।
22. सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त एवं मीमांसा सिद्धांत की व्यावहारिक उपयोगिता।
23. स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आयुर्वेद का विकास।
24. आयुर्वेद का वैश्वीकरण।
25. आयुष, सी.सी.आई.एम., सी.सी.आर.ए.एस., आर.ए.व्ही. विभागों का परिचय।
26. त्रिदोष सिद्धांत।
27. पंचभौतिक सिद्धांत।
28. मानसतत्व एवं इसके चिकित्सा सिद्धांत।
29. नैष्ठिकी चिकित्सा।
30. चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों की व्यावहारिक उपयोगिता।
31. पत्र–पत्रिकाएं, इसके प्रकार एवं लेखों की समीक्षा।

(02) व्याख्याता, रचना शरीर हेतुः-

01. गर्भावकान्ति शारीर का निरूक्ति, शुक व शोणित का लक्षण व विशेषता, गर्भोत्पादक भाव और बीज, बीजभाग, बीजभागावयव की व्याख्या, गर्भ पोषण कर्म, गर्भवृद्धिकर भाव, मासानुमासिकी गर्भवृद्धि, भ्रूण रक्त परिसंचरण। ऋतुमति व सद्यः गृहीत गर्भा के लक्षण का विस्तार व व्याख्या।
02. यमल गर्भ, अनस्थि गर्भ।
03. आधारभूत भ्रूण विज्ञान एवं यथाकम भ्रूण विज्ञान।
04. अनुवांशिकी और गर्भज विकार के आधारभूत सिद्धांत का ज्ञान
05. 'कोष्ठ' एवं 'कोष्ठांग' का विस्तृत निरूक्ति व व्यूत्पत्ति, प्रस्तेय कोष्ठांग की संरचना का अध्ययन, पुरूष एवं स्त्री जननांग का अध्ययन।
06. परिभाषा व विस्तृत विवरण
07. सेवनी, कला का निरूक्ति, परिभाषा व्याख्या तथा उनका आधुनिक अंश व व्यवहारिक दृष्टिकोण।
08. स्नायु, कण्डरा, रज्जु, संघात, जाल आदि का सामान्य परिचय।

क्रमशः

09. सिरा, धमनी एवं स्रोतस की निरूक्ति, परिभाषा, व्युत्पत्ति, पर्याय, संख्या और प्रकार, सिरा, धमनी एवं स्रोतस का रचनात्मक भिन्नता वेध्य एवं अवेध्य सिराओं का व्याख्या, सिरा, धमनी एवं स्रोतस का वैज्ञानिक महत्व आधुनिक रचना विज्ञान के संदर्भ में।
10. मर्म की निरूक्ति, परिभाषा, संख्या, लक्षण, सुश्रुत के अनुसार रचना भेद षडंगत्वम्, अभिघातज वर्गीकरण त्रिमर्म चरक के अनुसार, मर्माभिघात् व मर्म विद्ध का ज्ञान, प्रत्येक मर्म का विस्तृत अध्ययन तथा उनका शल्य तंत्र में वैज्ञानिक व शल्यात्मक महत्ता का अध्ययन।
11. अस्थि का सामान्य परिचय व विस्तृत व्याख्या, भिन्नता, अस्थियों की संख्या व प्रकार। प्रत्येक अस्थि का विस्तृत अध्ययन, अस्थि उद्‌भवन और व्यवहारिक रचनात्मक अध्ययन।
12. संधि की निरूक्ति, परिभाषा, व्युत्पत्ति लक्षण, संख्या, प्रकार व चिकित्सकीय रचनात्मकता का अध्ययन।
13. पेशीयों की निरूक्ति, परिभाषा, व्युत्पत्ति लक्षण, संख्या, प्रकार व चिकित्सकीय रचनात्मकता का अध्ययन।
14. पंचज्ञानेन्द्रियों की व्याख्या, आयुर्वेद व आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में (ज्ञानेन्द्रिय, आंख, कान, नाक, जिव्हा, और त्वचा तथा इनका चिकित्सकीय रचनात्मकता)
15. षट् चंक–स्थिति, योगाा में महत्व, इडा पिंगला, सुषुम्नानाडी का विस्तृत अध्ययन।
16. मस्तिष्क, मेरूरज्जू का रचनात्मक अध्ययन पिरधिय तंत्रिका तंत्र, व तंत्रिका जाल का महत्व स्वतंत्र व परतंत्र नाडत्री संस्थान, मस्तुलुंग मस्तिश्क के सिरा व विवर (नाड़ी) मस्तिष्क के गुहीय तंत्र, मस्तिष्क का रक्त परिसंचरण, मस्तिष्क आवरण कला का नैदानिक महत्व।
17. अंतः स्रावी ग्रंथि और बहिस्रावी ग्रंथी :– का विस्तृत अध्ययन।

(03) व्याख्याता, क्रिया शरीर हेतुः–

01. पंचमहाभूत का सिद्धांत।
02. लोकपुरूष साम्य का सिद्धांत।
03. सामान्य विशेष सिद्धांत की उपयोगिता।
04. विभिन्न मतानुसार पुरूष के संगठन एवं चिकित्सा पुरूष की उपयोगिता।
05. आयुर्वेद में गुर्वादि गुणों की उपयोगिता।
06. त्रिदोष सिद्धांत का सामान्य विवरण।
07. त्रिगुण, त्रिदोष, पंचमहाभूत, इंद्रियों का परस्पर संबंध।
08. ऋतु, दोष, रस, गुण का परस्पर संबंध।
09. त्रिदोष की स्थिति दिन, रात्रि, ऋतु और आहार ग्रहण के परिपेक्ष्य में।
10. प्रत्येक व्यक्ति के प्रकृति निर्माण में दोष की भूमिका।
11. स्वास्थ्य को बनाए रखने में दोष की भूमिका।
12. सामान्य स्थान, सामान्य गुण, एवं सामान्य कर्म। विशिष्ट स्थान, विशिष्ट गुण, एवं कर्म के आधार पर वात के पांच उपभेद।
13. पित्त दोष के सामान्य स्थान, गुण एवं कर्म। विशिष्ट स्थान, विशिष्ट गुण, एवं कर्म के आधार पर वात के पांच उपभेद (पाचक, रंजक, आलोचक, भ्राजक, साधक) अग्नि और पित्त के मध्य विभिन्नता एवं सामनता।
14. कफ दोष, सामान्य स्थान, गुण एवं कर्म। विशिष्ट स्थान, विशिष्ट गुण, एवं कर्म के आधार पर वात के पांच उपभेद (बोधक, अवलम्बक, क्लेदक, तर्पक, श्लेषक)।
15. कियाकाल, दोषवृद्धि, दोषक्षय के विशेष सिद्धांत का प्रायोगिक शरीर कियात्मक अध्ययन।
16. धातु पोषण विधि। धातु पोषण के विभिन्न सिद्धांत का वर्णन (क्षीर दधि, केदारी, कुल्या, खलेकपोल इत्यादि) ।
17. धातु– धातु उत्पत्ति की निरूक्ति एवं सभी धातुओं का (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) सामान्य परिचय, विस्तार, विशेषता, मात्रा, गुण, पंचभौतिक संगठन एवं कार्य का विस्तृत वर्णन।
18. सभी धातुओं का प्रायोगिक शरीर कियात्मक अध्ययन–दोष धातु क्षय का प्रत्यक्षीकरण / धातु प्रदोशज विकार का वर्णन।
19. दोष एवं धातु के आपसी संबंध के परिप्रेक्ष्य में आश्रय एण्ड आश्रयी भाव का विस्तष्त वर्णन।
20. अष्टविध सार के विशिष्ट लक्षण का विस्तृत वर्णन। रसवह, रक्तवह, मांसवह, मेदवह अस्थिवह, मज्जावह, शुक्रवह स्त्रोतस का विस्तृत वर्णन।
21. ओज की निरूक्ति, स्थान, पर्याय, निर्माण, विस्तृत गुण, मात्रा, वर्गीकरण और कार्य का वर्णन। व्याधिक्षमत्व का विस्तृत वर्णन, बल वृद्धिकर भाव, बल का वर्गीकरण, श्लेष्म और बल व ओजस के बीच आपसी संबंध।
22. ओज का शरीर कियात्मक अध्ययन, नैदानिक कारण और ओज क्षय, विस्त्रंस, एवं व्यापद का प्रत्यक्षीकरण। ओज के शरीर कियात्मक और नैदानिक महत्ता का वर्णन
23. "उपधातु" का सामान्य परिचय एवं निरूक्ति, प्रत्येक उपधातु का निर्माण, पोषण, गुण विस्तार एवं कार्य का विस्तृत वर्णन।
24. शुद्ध और दूषित स्तन्य की विशिष्ट लक्षण और विधि का निर्धारण करना और स्तन्य के क्षय व वृद्धि का प्रत्यक्षीकरण।
25. शुद्ध व दूषित आर्तव के विशिष्ट लक्षण, रज एवं आर्तव के मध्य भिन्नता, आर्तव स्त्रोतस का शरीर कियात्मक अध्ययन।
26. त्वचा का अध्ययन।
27. "मल" की परिभाषा, मूत्र व पुरीष की परिभाषा, निर्माण प्रकिया, गुण, मात्रा एवं किया का अध्ययन। मूत्र व पुरीष के वृद्धि एवं क्षय का प्रत्यक्षीकरण करना।
28. स्वेदवह स्रोतस की परिभाषा निर्माण प्रकिया, गुण, मात्रा एवं किया का अध्ययन। स्वेद के निर्माण प्रकिया का अध्ययन, स्वेद के वृद्धि एवं क्षय का प्रत्यक्षीकरण करना।
29. प्रत्येक धातु मल के परिभाषा, निर्माण प्रकिया, गुण, मात्रा एवं किया का अध्ययन।
30. "प्रकृति" की विभिन्न परिभाषा एवं पर्याय का अध्ययन, प्रकृति को प्रभावित करने वाले कारक और देय प्रकृति के भेदों का अध्ययन।
31. पंचज्ञानेन्द्रियां का शारीर कियात्मक अध्ययन एवं शब्द, स्पर्श, रूप रस, गंध का शारीर कियात्मक वर्णन। इंद्रियपंचक व कर्मेन्द्रिय का शारीर कियात्मक अध्ययन।
32. मन की परिभाषा, गुण, कर्म एवं विषय का अध्ययन।
33. आत्मा की परिभाषा व गुणों का अध्ययन, परमात्मा व जीवात्मा के बीच भिन्नता। आत्मा के विशिष्ट लक्षणों का अध्ययन।
34. बुद्धि का स्थान, प्रकार व कर्म, धी, धृति एवं स्मृति का शारीर कियात्मक।
35. निद्रा व तन्द्रा की परिभाषा और भेद का वर्णन, निद्रा का शारीर कियात्मक और नैदानिक महत्व, स्वप्न उत्पत्ति और स्वप्न भेद।
36. विशिष्ट इंद्रिय, बुद्धि, स्मृति, प्रज्ञा एवं उत्तेजनाओं का शरीर कियात्मक अध्ययन।
37. निद्रा का शरीर कियात्मक अध्ययन, वाणी एवं अभिव्यक्ति का शारीर कियात्मक अध्ययन।
38. आहार की परिभाषा एवं आहार का महत्व।
39. आहार पाचनः आहार पाक प्रकिया, अन्नवहस्त्रोत्स का वर्णन। अवस्थापाक और निष्ठापाक का वर्णन। आहार पाक, सार और किट विभाजन में दोष की भूमिका। एब्जॉर्पशन ऑफ सार, उत्पत्ति एण्ड उदीर्ण ऑफ वात पित्त, कफ।
40. कोष्ठ की निरूक्ति, कोष्ठ का वर्गीकरण एवं प्रत्येक कोष्ठ का गुणात्मक अध्ययन।
41. अग्निः– निरूक्ति, महत्ता, वर्गीकरण,। जठराग्नि, भुताग्नि एवं धात्वाग्नि का कार्य गुण एवं स्थान का वर्णन।
42. अग्नि का शारीर कियात्मक अध्ययन एवं चिकत्सा में वर्णन।
43. अन्नवह स्त्रोतोदुष्टि की निरूक्ति और नैदानिक कारण एवं विशेषता। अन्नवह स्रोतस का प्रायोगिक शारीर कियात्मक अध्ययन– : अरोचक, अजीर्ण, अतिसार, ग्रहणी, छर्दि, परिणामशूल, अग्निमांद्य।
44. मानव के पाचनतंत्र में कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन्स के उपापचय की विधि का विस्तृत वर्णन। विभिन्न पाचक रस एवं उसके एन्जाइम के कार्य की किया विधि, लार ग्रंथि, अमाशय, अग्नाश, छोटी आंत, बड़ी आंत, यकृत में पाचन व अवशोषण की कार्य विधि का वर्णन।
45. आंत की गति विधि (डिग्लूटिशन, पेरिसटालसिस, डेफिकैशन आदि.) और उनके नियंत्रण का वर्णन।
46. अन्नवाही नालिका में वमन, अतिसार, माल अब्जार्पशन अत्यादि का प्रायोगिक शरीर कियात्मक अध्ययन।
47. आंत्र माइकोबायोटा और स्वास्थ्य और रोग में उनकी भूमिका से संबधित हाल ही में समक्ष। रिसेन्ट अन्डरस्टैडिंग रिलैटेड टू द गट माइकोबायोटा एण्ड देयर रोल इन हेल्थ एण्ड डिजीज।
48. प्रोटीन्स, वसा एवं कार्बोहाइड्रेट्स के जैव रासायनिक संरचना, गुण एवं वर्गीकरण का परिचय।

क्रमशः

49. प्रोटीन, वसा एवं कार्बोहाइड्रेट्स के उपापचय में अतंर्भूत विधि का विस्तृत वर्णन।
50. जीवनीय द्रव्य का स्त्रोत, दैनिक आवश्यकता, शारीर कियात्मक कार्य, शारीर कियात्मक आधार पर जीवनीय तत्वों की कमी एवं अधिकता से होने वाले लक्षण एवं चिन्ह का वर्णन।
51. तंत्रिका संस्थान का शारीर कियात्मक अध्ययन, तंत्रिका संस्थान के न्यूरांन्स के तंत्रिका आवेग के प्रसारण के कार्य विधि का सामान्य परिचय।
52. केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र, परिसरीय तंत्रिका तंत्र एवं स्वायत्व तंत्रिका तंत्र का अध्ययन। तंत्रिका तंत्र के संवेदी एवं प्रेरक तंत्रिकाओं के कार्य। मस्तिष्क एवं मेरूरज्जु के विभिन्न भागों का कार्य। हाइपोथैलेमस एवं लिम्बीक संस्थान का कार्य।
53. अंतः स्त्रावी तंत्र का शारीर कियात्मक अध्ययन। महिला और पुरूष के प्रजनन तंत्र का शारीर कियात्मक अध्ययन। वसीय तंतु और उसके कार्य। व्याधिक्षमत्व का शारीर कियात्मक अध्ययन। हृदवह संस्थान का शारीर कियात्मक अध्ययन। श्वसन संस्थान का शारीर कियात्मक अध्ययन। रक्त कायात्मक प्रणाली का कार्य। मांस का शारीर कियात्मक अध्ययन। उत्सर्जन तंत्र का शारीर कियात्मक अध्ययन। त्वचा का कार्य व संरचना, स्वेदवह ग्रंथि और सेवेसियस ग्रंथि का कार्य और संरचना।
54. भू आकृतिक (फिजियोग्राफ), कम्प्यूटरीकृत सस्यमिति (स्पाइरोमेटरी), जैव रासायनिक एनालाइजर, पल्स ऑक्सीमीटर, एलिसा रीडर, हीमेटोलॉजी एनालाइजर, ट्रेडमील, बायोरीदम्स का वर्तमान में अध्ययन।
55. तंत्रिका प्रतिरक्षा अंतः स्त्रावी शरीर विज्ञान का वर्तमान में उन्नति।
56. स्टेम सेल शोध में वर्तमान उन्नति।

(04) व्याख्याता, द्रव्यगुण हेतुः-

1. द्रव्य क नाम ज्ञान का महत्व, वेद में औषधि के नामरूप ज्ञान की औषधि के विभिन्न नामों एवं पर्यायों की भावार्थ पूर्ण व्युत्पत्ति।
2. औषधि से संबन्धित रुपज्ञान, पौधों के विभिन्न अवयवों का स्थूल (मैक्रोस्कोपिक) एवं सूक्ष्म (माइक्रोस्कोपिक) वर्णन।
3. वैदिक शब्द कोश, बृहत्रयी, भावप्रकाश एवं राजनिघण्टु में वर्णित औषध तथा आहार द्रव्यों पर्याय।
4. आयुर्वेदिक फॉर्मेकोपिया ऑफ इण्डिया में सूचीबद्ध औषधीय पादपों के स्वरूपात्मक विशिष्ट लक्षण, पर्याय एवं मूलनाम (बेसोनीम्स)।
5. अनुक्त द्रव्य (एक्स्ट्राफॉर्मेकोपियल ड्रग्स) औषधकोश में नहीं कहे गये। औषध द्रव्य के नाम रूप का ज्ञान, संदिग्ध द्रव्य (कॉनट्रोवर्सियल ड्रग्स) विनिश्चय।
6. जैवविविधता, संकटापन्न प्रजातियों का ज्ञान।
7. पारम्परिक ज्ञान आंकिक संग्रहालय (टी के डी एल) के संबंध में जानकारी, औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम के प्रासंगिक भाग का परिचय, चमत्कारिक उपचार अधिनियम बौद्धिक सम्पदा अधिकार एवं आयुर्वेदिक औषधियों के आयात निर्यात सम्बधी विनियम का परिचय।
8. उत्तक संवर्धन तकनीक का ज्ञान।
9. अनुवांशिक रूप से संशोधित पादपों का ज्ञान।
10. आयुर्वेद एवं पारम्परिक चिकित्सा में औषधियों की कियाविधि के मौलिक सिद्धांत।
11. रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म के उपयोगी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन तथा टीकाकारों (चक्रपाणि दत्त, डल्हण , अरुण दत्त , हेमाद्री एण्ड इन्दू) के इन पहलुओं पर विचार।
12. वृहत्रयी एण्ड लघुत्रयी में यथापरिमाषित कर्मों का व्यापक अध्ययन।
13. वर्तमान शोध समीक्षा सहित भारतीय आयुर्वेदिक भैशजसंग्रह (आयुर्वेदिक फार्माकोपिया ऑफ इंडिया) तथा भावप्रकाश में सूचीबद्ध द्रव्यों के गुण एवं कर्म का विस्तृत अध्ययन।
14. आहार द्रव्यों का विस्तृत अध्ययन, कृतान्न वर्ग सहित वृहत्रयी एवं विभिन्न निघण्टुओं मे वर्णित आहार वर्गों का अध्ययन।
15. विभिन्न संस्थानों पर कार्य करने वाली औषधियों के औषधिय सिद्धांतो का ज्ञान।
16. दर्द निवारक, ज्वरनाशक, शोथनाषक, मधुमेह नाशक, उच्च रक्तचाप रोधी, वसाह्रासक, व्रणनाशक, हृदयरक्षात्मक, यकृतरक्षात्मक, मूत्रल, एडेप्टोजन्स (वयस्थापक), केन्द्रिय तन्त्रिका तन्त्र की गतिविधियों के मूल्यांकन हेतु प्रयोगात्मक औषध विज्ञान का मौलिक ज्ञान।
17. भारीधातु विश्लेषण, कीटनाशक अवशेषों एवं कवकीय कैंसर जनकों का ज्ञान।
18. रोगाणुरोधी एवं कवकनाशी गतिविधियों के मूल्यांकन का ज्ञान।
19. भैशज्य प्रयोगसिद्धांत, भैशज्य मार्ग, विविध कल्पना, भैषज सम्मिश्रण विज्ञान के सिद्धांत, मात्रा, अनुपान औशध ग्रहण काल, सेवनकाल अवधि, पथ्य, अपथ्य समग्र व्यवस्था पत्रक।
20. समयोग–विरूद्ध सिद्धांत एवं उसका महत्व।
21. वृहत्त्रयी, चक्रदत्त, योगरत्नाकर और भावप्रकाश में यथा वर्णितक प्रमुख पादपों के संबन्धित आमयिक प्रयोग।
22. आयुर्वेद एवं पारम्परिक चिकित्सा में वर्णित फार्मेकोविजिलेन्स (दवा सुरक्षा) का ज्ञान।
23. जी.सी.पी. के दिशा निर्देशानुसार नैदानिक औषधि विज्ञान एवं नैदानिक औषध अनुसंधान का ज्ञान।
24. फार्मेकोजिनोमिक्स (प्रकषति के आधार पर औषध कियाविधि का ज्ञान) का ज्ञान।
25. निघण्टु की व्युत्पत्ति, उनकी प्रासंगिकता, उपयोगिता तथा मुख्य विशेषताएं।
26. पर्याय रत्नमाला, धनवन्तरी निघण्टु, हृदयदीपक निघण्टु, अश्टांग निघण्टु, राज निघण्टु, सिद्धमंत्र निघण्टु, भावप्रकाष निघण्टु, मदनपाल निघण्टु, राजबल्लभ निघण्टु, माधव द्रव्यगुण, कैयदेव निघण्टु, सोढ़ल निघण्टु, शालिग्राम निघण्टु, निघण्टु रत्नाकर, निघण्टु आदर्ष तथा प्रिय निघण्टु कर्ताओं के नाम, काल एवं विषय सामग्री।
27. शार्ङ्गधर संहिता एवं आयुर्वेदिक फॉर्मुलरी ऑफ इन्डिया (ए. एफ. आइ) में उल्लेखित औषध कल्पनाओं का विस्तृत अध्ययन।
28. पोषक आहार, वर्ण्य, आहार योगज, भोजनपूरक आदि पर सामान्य जागरूकता।
29. पादप सत्व, पादप रंग (स्वादिष्टता कारक) जायका संरक्षक (औषधि संरक्षक) का ज्ञान।
30. भारत सरकार के आयुष विभाग एवं आई.सी.एम.आर. द्वारा प्रकाशित शास्त्रीय औषधीय पादप का प्रमुख आधुनिक भैषज कार्यो पर समीक्षात्मक ज्ञान ।

(05) व्याख्याता, रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना हेतुः-

01. रसशास्त्र का इतिहास एवं कमिक विकास, रसेश्वर दर्शन की संकल्पना, रसशास्त्र के आधारभूत सिद्धांत, रसशास्त्र में प्रयुक्त विशिष्ट परिभाषा प्रकरण।
02. प्राचीन तथा अर्वाचीन यंत्रोपकरणों का विस्तृत ज्ञान तथा उनके अर्वाचीन रूपांतरण जैसे यंत्र, मूषा, पुट, कोष्ठी, भ्राष्ट्री, मफल फरनेन्स तथा उसके हिटींग एप्लाएन्सेस (उपकरण), ओवन, ड्रायर आदि। (लघु तथा वृहत् स्तर पर रसौषधियों के निर्माण में प्रयुक्त)
03. संस्कार, अग्नि, जल तथा अन्य द्रव, काल, पात्र आदि का अध्ययन तथा औषधीकरण में उनका महत्व।
04. भावना एवं मर्दन का सिद्धांत एवं महत्व प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्राइडिंग तकनीकों का ज्ञान।
05. विभिन्न शोधन, जारण, मूर्च्छन एवं मारण विधियों का विस्तृत ज्ञान। पुट का सिद्धांत एवं परिभाषा, पुट प्रकार तथा विशेषताएँ, भस्मीकरण में विभिन्न पुटों का महत्व, पुट में निहित द्रव्य की औषधीय (चिकित्सीय) कार्मुकता, भस्म परीक्षा विधि एवं भस्म निर्माण की आधुनिक विधियों से तुलना, अमृतीकरण एवं लोहितीकरण।
06. सत्व, द्रुति का विस्तृत ज्ञान, सत्व शोधन, मृदुकरण, सत्वमारण।
07. प्रतिनिधि द्रव्य का सिद्धांत तथा संदिग्ध द्रव्यों की चर्चा।
08. प्राप्ति स्रोत के आधार पर पारद एवं उसके यौगिकों के संबंध में प्राचीन तथा अर्वाचीन ज्ञान। भौतिक रासायनिक विश्लेषण, ग्राह्य–अग्राह्यत्व, पारद दोष, पारद गति, पारद शोधन, अष्ट संस्कार, अष्टादश संस्कार, हिंगुलोत्थ पारद, पारद जारण का सिद्धांत, मूर्च्छन, बंधन, पक्षछेद तथा मारण, चिकित्सकीय गुण तथा उपयोग।
09. महारस, उपरस, साधारण रस, धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, विष, उपविष, सुधावर्ग, लवणवर्ग, क्षारवर्ग, सिकता वर्ग तथा रसशास्त्र में प्रयुक्त अन्य द्रव्यों का निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत विस्तृत अध्ययन – भू–रासायनिक/खनिज विज्ञानीय/जीव विज्ञानीय, प्राप्ति स्त्रोत, भौतिक रासायनिक विश्लेषण, ग्राह्य–अग्राहत्व, शोधन, मारण विधि, द्रव्यों के चिकित्सकीय गुण तथा उपयोग।
10. मैनुफैक्चरिंग फार्मेकोपियल स्टैण्डर्डस का विस्तृत ज्ञान, संग्रह विधि, सवीर्यतावधि, प्रभावकारी चिकित्सीय मात्रा, अनुपान, विकार शांति उपाय। भस्म तथा पिष्टियों के निर्माण के लिए उन्नत तकनीक एस.ओ.पी. तथा क्वालिटी कंट्रोल का निर्धारण।

क्रमशः

11. भस्म – अभ्रक भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, कासीस भस्म, स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, ताम्र भस्म, लौह भस्म, मण्डूर भस्म, नाग भस्म, वंग भस्म, यशद भस्म, त्रिवंग भस्म, पित्तल, कांस्य एवं वर्तलौह भस्म, शंख भस्म, शुक्ति भस्म, कपर्दिका भस्म, गोदंती भस्म, प्रवाल भस्म, मृगश्रृंग भस्म, मयूर पिच्छ भस्म, कुक्कुटाण्ड त्वक भस्म, हीरक भस्म, माणिक्य भस्म।
12. द्रावक – शंख द्रावक।
13. पिष्टी – प्रवाल पिष्टी, माणिक्य पिष्टी, मुक्ता पिष्टी, जहर–मोहरा पिष्टी, तृणकांतमणि पिष्टी इत्यादि।
14. खरलीय रसायन, पर्पटी, कूपीपक्व एवं पोट्टली रस के लिए मेनुफेक्चरिंग, फार्मास्युटिकल स्टेण्डर्ड्स का विस्तृत ज्ञान, संग्रह विधि, सवीर्यतावधि, कार्मुकता, चिकित्सीय मात्रा, अनुपान, उन्नत निर्माण विधियाँ, एस.ओ.पी. तथा क्वालिटी कंट्रोल का निर्धारण।
15. रसार्णव, रसहृदय तंत्र, रसरत्न समुच्चय, रसेन्द्र चिन्तामणि, रसेन्द्र चूड़ामणि, रस रत्नाकर, रसाध्याय, रस कामधेनु, आनंदकंद, सिद्ध भैषज मणिमाला, आयुर्वेद प्रकाश, रसतरंगिणी, भैषज्य रत्नावली, रसामष्त आदि ग्रंथों का अध्ययन (तत्संबंधित टीका सहित), ड्रग तथा कास्मेटिक एक्ट 1940 के प्रथम शैड्यूल में वर्णित पुस्तकों का अध्ययन, वृहत्त्रयी के तत्संबंधित अंशों का अध्ययन।
16. भैषज्य कल्पना का इतिहास एवं क्रमिक विकास, भेषज तथा औषध की संकल्पना, भैषज्य कल्पना के आधारभूत सिद्धांत, भैषज्य कल्पना में प्रयुक्त परिभाषाएँ।
17. शुष्क तथा आर्द्र औषधियों की ग्राह्यता अग्राह्यता तथा उनके संग्रहण, संरक्षण, सवीर्यतावधि से संबंधित शास्त्रोक्त तथा आधुनिक संकल्पनाएँ।
18. औषध ग्रहण मार्ग, औषध मात्रा, अनुपान, सहपान, औषध सेवन काल, कालावधि पथ्य अपथ्य का विस्तृत ज्ञान। (पोसोलॉजी)
19. निम्न औषध कल्पनाओं – पंचविध कषाय कल्पना, चूर्ण रसक्रिया, घन, अवलेह, प्रमथ्या, मंथ, पानक, शर्करा, क्षीर पाक, ऊष्णोदक, औषध सिद्धोदक, षडंगोदक, तण्डुलोदक लाक्षारस, अर्क, सत्व, क्षार, लवण, मसी, गुटिका, वटिका, मोदक, गुग्गुल, वर्ति आदि के विनिर्माण मानकीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण, फार्मेकोपियल स्टेण्डर्ड मानकीकरण, संरक्षण, सवीर्यतावधि संबंधित विस्तृत ज्ञान तथा तत्संबंधित नवीनतम मानक संचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) का विकास। स्नेह कल्पना अच्छ–स्नेह की संकल्पना, स्नेह प्रविचारणा एवं मूर्च्छना, स्नेहपाक, स्नेह पाक के प्रकार एवं स्नेह सिद्धी लक्षण आवर्तन, स्नेहकल्प कार्मुकता (फार्मेकोकाइनेटिक्स एण्ड फार्मेकोडायनेमिक्स), औषधियों के अवशेषण में स्नेह की भूमिका, कृतान्न एवं भैषज सिद्ध अन्न कल्पना, आहारोपयोगी वर्ग, औषध एवं आहार की संकल्पना (कान्सेप्ट ऑफ मेडिसिनल एण्ड फंक्शनल फूड) पूरक आहार (डायटरी सप्लीमेंट) एवं पौष्टिक औषधीय पदार्थ (न्यूट्रास्यूटिकल्स)। संधान कल्पना, मद्य वर्ग, शुक्तवर्ग, आसवयोनि एल्कोहलिक एवं एसिटिक (अम्लीय), फरमेन्टेशन (संधान) संधान कल्प, कार्मुकता (फार्मेकोकाइनेटिक्स एवं फार्मेकोडायनेमिक्स), संधान तकनिकियों में आधुनिक विकास। एल्कोहल युक्त औषध कल्पनाओं संबंधित वैधानिक नियंत्रण का ज्ञान। बाह्य प्रायोगार्थ कल्पना–लेप, उपनाह, उद्वर्तन, अवचूर्णन / अवधूलन, अभ्यंग, धूपन, मलहर, मुख, कर्ण, नासा नेत्रोपचारार्थ कल्पना, बस्ति कल्पना, बस्तियंत्र निर्माण, बस्ति भेद, अनुवासन एवं आस्थापन बस्ति, कर्म काल एवं योग बस्ति आदि। बस्ति कल्प (माधुतैलिक, पिच्छाबस्ति आदि) इवाकुएशन एवं रिटेंशन एनीमा से आस्थापन एवं अनुवासन बस्ति की तुलना।
20. आयुर्वेदिक भैषज्य कल्पों के संबंध में निम्न प्रक्रियाओं का अध्ययन।
21. एक्सट्रेक्शन तथा एक्सट्रेक्शन की विधियाँ मैसेरेशन, परकोलेशन, डिस्टीलेशन, इन्फ्यूजन तथा डिकॉकशन।
22. लिक्विड्स – क्लेरीफाइड लिक्विड, सिरप, इलिक्जिर, फिल्ट्रेशन तकनिकियाँ।
23. सॉलिड डोजेज फॉर्म्स – पाउडर (चूर्ण), साइज रिडक्शन, सेपरेशन तकनिकी पार्टिकल साइज निर्धारण, मिश्रण (मिक्सिंग) के सिद्धांत, टेबलेट्स (वटी) – टेबलेट बनाने की विधियाँ सपोजिटरीस (वर्ति कल्पना), पेसरीस तथा कैप्सूल, सस्टेन्ड रिलीज डोजेस फॉर्म्स।
24. सेमी सॉलिड डोजेस फार्म्स – इमल्शन्स, सस्पेंशन, क्रीम तथा आइटमेन्ट्स, नेत्र कल्पों का स्टरलाईजेशन (निर्जिवीकरण)।
25. विविध सौन्दर्य प्रसाधन कल्पनाओं का परिचय।
26. शुष्कीकरण (ड्राईंग) – ओपन एयर ड्राईंग, क्लोज्ड एयर ड्राइंग फ्रिजी ड्राइंग, वैक्यूम ड्राइंग तथा अन्य शुष्कीकरण विधियाँ, फार्मास्युटिकल्स एक्सीपिएन्ट्स।
27. शास्त्रोक्त ग्रंथों का अध्ययन विशेष रूप से चकदत्त, शारंगधर संहिता, भैषज्य रत्नावली, भाव प्रकाश, योग रत्नाकर, वृहत्त्रयी से संबंधित भाग, आयुर्वेदिक फार्माकोपिया ऑफ इंडिया, आयुर्वेदिक फार्मुलरी ऑफ इंडिया।
28. रसचिकित्सा, क्षेत्रीकरण, रसजीर्ण, लौह जीर्ण, औषधि सेवन, अशुद्ध एवं अपक्व, अविधि रस द्रव्य सेवन विकार एवं विकार शांति उपाय।
29. औषध मार्ग एवं द्रव्य संयोजन का विस्तृत अध्ययन, मात्रा, अनुपान और प्रयोग विधि उसका चिकित्सकीय प्रभाव और प्रयोग विशेष रूप से द्रव्य की कार्मुकता निम्नलिखित दिए गए औषध योगों का विस्तष्त विवेचन।

1. खरलीय रस, श्वास कुठार रस, त्रिभुवन कीर्ति रस, हिंगुलेश्वर रस, आनंद भैरव रस, महालक्ष्मी विलास रस, बसंत कुसुमाकर रस, बसंत मालती रस, वृहत वात चिन्तामणि रस, लघु सूत शेखर रस, सूतशेखर रस, रामबाण रस, चन्द्रकला रस, योगेन्द्र रस, हृदयार्णव रस, ग्रहणी कपाट रस, गर्भपाल रस, जलोदरारि रस, मृत्युंजय रस, लघुमालिनीबसंत रस, अर्शकुठार रस, कृमि मुदगर रस, सूचिकामरण रस, त्रिनेत्र रस, स्मृतिसागर रस, वात गजांकुश रस, अग्निकुमार रस, एकांगवीर रस, कामदुधा रस, पूर्ण चन्द्रोदय रस, प्रताप लंकेश्वर रस, महावातविध्वंसक रस, कस्तूरीभैरव रस, अश्वकंचुकी रस, गुल्मकुठार रस, महाज्वरांकुश रस, चन्द्रामृत रस, कफकेतु रस, प्रभाकर वटी, प्रवाल पंचामृत रस, गंधक रसायन, चतुर्भूज रस, नवजीवन रस, शोणितार्गल रस, रक्तपित्तकुलकंडन रस, क्रव्याद रस, गर्भचिन्तामणि रस, चिन्तामणि रस, त्रैलोक्यचिन्तामणि रस, प्रदरान्तक रस, वंगेश्वर रस, बृहतवंगेश्वर रस श्वासकासचिन्तामणि रस, आरोग्यवर्धनी वटी, चन्द्रप्रभावटी, अग्नितुण्डी वटी, शंख वटी।
2. कुपीपक्व रस – रससिन्दूर, मकरध्वज, सिद्धमकरध्वज, समीरपन्नग, स्वर्णवंग, मल्लसिंदूर रसकर्पूर, रसपुष्प, माणिक्य रस।
3. पर्पटी रस – रसपर्पटी, लोहपर्पटी, ताम्रपर्पटी, स्वर्णपर्पटी, गगनपर्पटी, विजय पर्पटी, पंचामष्त पर्पटी, श्वेतपर्पटी, बोलपर्पटी।
4. पोट्टली रस – रसगर्भपोट्टली, हेमगर्भपोट्टली, मल्लगर्भ पोट्टली, हिरण्यगर्भ पोट्टली, शंखगर्भ पोट्टली, लोकनाथ रस, मृगांक पोट्टली।
5. लोह एवम् मण्डूर कल्प – अयस्कृति, लौह रसायन, अम्ल पित्तांतक लौह, चंदनादि लौह, धात्री लौह, नवायस लौह, पुटपक्व विषमज्वरांतक लौह, शिलाजत्वादि लौह, ताप्यादि लौह, सप्तामृत लौह, धात्री लौह, अमृतसार लौह, शंखामृत लौह, प्रदरांतक लौह, रोहितक लौह, पुनर्नवा मण्डूर, शतावरी मण्डूर, तार मण्डूर, त्रिफला मण्डूर, मण्डूर वटक इत्यादि।
30. निम्न कल्पों का औषध पथ निश्चिती एवं संयोजन का विस्तृत ज्ञान, मात्रा अनुपान तथा प्रयोग विधि, चिकित्सीय कार्मुकता एवं उपयोग, संभावित क्रिया विधि का विवेचन।

–पंचविधकषाय एवं उपकल्पना, आर्द्रक स्वरस, तुलसी स्वरस, वासा पुटपाक स्वरस, निम्ब कल्क, रसोन कल्क, कुलत्थ क्वाथ, पुनर्नवाष्टक क्वाथ, रास्नासप्तक क्वाथ, धान्यक हिम, सारिवादि हिम, पंचकोल फाण्ट, तण्डुलोदक, मुस्तादि प्रमथ्या, खर्जूरादि मंथ, षडंगपानीय, लाक्षारस, अर्जुन क्षीरपाक, रसोन क्षीरपाक, चिंचा पानक, चंदन पानक, वनप्सा शार्कर, निम्बु शार्कर, अमृतासत्व, आर्द्रक सत्व, अजमोदा अर्क, यवान्यादि अर्क, कृतान्न एवम् भैषज सिद्ध आहार कल्पना – यवागू, (कृत एंड अकृत), अष्टगुणामण्ड, लाजा मण्ड, पेया विलेपी, कृशरा, यूष, मुद्गा यूष, कुलत्थ यूष, सप्तमुष्टिक यूष, खड, काम्बलिक, राग, षाडव, मांसरस, वेशवार। कटवर, दधि, दधि मस्तु, तक्र, घोल, उदश्वित्, मथित, छछ्छिका इत्यादि। चूर्ण सितोपलादि चूर्ण, तालिसादि चूर्ण, त्रिफला चूर्ण, हिंग्वाष्टक चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण, भास्कर लवण चूर्ण, सुदर्शन चूर्ण, महासुदर्शन चूर्ण, गंधर्व हरितकी चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण, हिंग्वादि चूर्ण, एलादि चूर्ण, दाड़िमाष्टक चूर्ण, त्रिकटु चूर्ण, वैश्वानर चूर्ण, गंगाधर चूर्ण, जाति फलादि चूर्ण, नारायण चूर्ण, इत्यादि। गुटिका – आरोग्यवर्धनी वटी, चन्द्रप्रभावटी, चित्रकादि गुटिका, संजीवनी वटी, लशुनादि वटी, लवंगादिवटी, व्योषादि वटी, खदिरादि वटी, कांकायन वटी, अभयादि मोदक, मरिच्यादि गुटिका, आमलक्यादि गुटिका, संशमनी वटी, कुटजघन वटी, अमरसुन्दरी वटी शिवगुटीका, एलादि वटी, कस्तुर्यादि गुटिका, अर्शोघ्नवटी। गुग्गुलु – योगराज गुग्गुलु, महायोगराज गुग्गुलु, त्रयोदशांग गुग्गुलु, कांचनार गुग्गुलु, रास्नादि गुग्गुलु त्रिफला गुग्गुलु, सिंहनाद गुग्गुलु, गोक्षुरादि गुग्गुलु, कैशोर गुग्गुलु, पंचतिक्त गुग्गुलु, अमृतादि गुग्गुलु, वातारि गुग्गुलु, लाक्षादि गुग्गुलु, आभा गुग्गुलु, नवक गुग्गुलु, नवकार्षिक गुग्गुल।
31. स्नेह कल्पना – स्नेह मूर्च्छना, घृत मूर्च्छना, तैल मूर्च्छना, शतावरी घृत, जात्यादि घृत, कल घृत, दाड़िमादि घृत, क्षीरषट्पलघृत, महात्रिफलाघृत, धंनवतरि घृत, अमृतप्राशघृत, कल्याणकघृत, ब्राम्हीघृत, चांगेरी घृत, पंचतिक्त घृत, सुकुमारघृत, पंचगव्यघृत, सिद्ध तैल – महानारायण तैल, महामाष तैल, बल तैल, निर्गुण्डी तैल, षडबिन्दु तैल, विषगर्भ तैल, सहचरादि तैल, जात्यादि तैल, अपामार्ग तैल, तुवरक तैल, क्षीरबला तैल, लाक्षादि तैल, अणुतैल, कुमकुमादि तैल, हिंगुत्रिगुण तैल, कोटुमचुकादि तैल, प्रसारिण्यादि तैल, अर्क तैल, पिण्ड तैल, कासिसादि

क्रमशः

तैल, रसकिया अवलेह, खण्ड इत्यादि, दार्वीरस किया, वासावलेह, ब्रम्हरसायन, च्यवनप्राशन अवलेह, कुष्माण्ड अवलेह, दाड़िमावलेह, बिल्लवादि अवलेह, कण्टकारि अवलेह, हरिद्राखण्ड, नारिकेल खण्ड, सौभाग्यशुण्टी पाक, अमृतभल्लातक कंश हरीतकी, चित्रक हरीतकी, व्याघ्री हरीतकी, बाहुशाल गुड़, कल्याणक गुड़। संधान कल्प – लोध्रासव, कुमार्यासव, उशीरासव, चंदनासव, कनकासव, सारिवाद्यसव, पिप्पल्यासव, लोहासव, वासकासव, कुटजारिष्ट, अक्षारिष्ट, रक्तामृतार्क। दशमूलारिष्ट, अभयारिष्ट, अमृतारिष्ट, अशोकारिष्ट, सारस्वतारिष्ट, अर्जुनारिष्ट, खदिरारिष्ट, अश्वगंधारिष्ट, विडंगरिष्ट, तकारिष्ट, महाद्राक्षासव, मृतसंजीवनी सुरा, मैरेय, वारूणी, सिंधु, कांजी, धान्याम्ल, मधु सुक्त, पिंडासव, अन्य कल्प – फलवर्ती, चंद्रोदयवर्ती, अर्कलवण, नारिकेल लवण, त्रिफला मसी, आपामार्ग क्षार, स्नूहीक्षार, क्षार सूत्र अतसी, उपनाह, सर्जरस, मल्हर, गंधक मल्हर, सिंधुरादि मल्हर, शतधौत घृत, सहस्रधौत घृत, सिक्थ तैल, दशांग लेप, दोषघ्न लेप, भल्लातक तैल, पातन, ज्योतिष्मति तैल, बाकुची तैल, दशांग धूप, अशोघ्न धूप, निशादि नेत्र बिन्दु, मधुतैलिक बस्ति, पिच्छा बस्ति, यापना बस्ति।

32. सामान्य फार्मेकोलॉजी, फार्मेकोलाजी के सिद्धांत, फार्मेकोडायनेमिक्स एवं फार्मेकोकायनेटिक्स, एब्जोर्बशन, डिस्ट्रिब्यूशन, मेटाबोलीज्म एवं एक्सक्रिसन, मेकेनिज्म ऑफ एक्शन, डोज डिटरमिनेशन एवं डोज रिसपोन्स, स्ट्रक्चर, एक्टिवीटी रिलेशनशिप, रूट्स ऑफ ड्रग एडमिनीशट्रेशन, फेक्टर्स, मोडिफाईंग ड्रग इफैक्ट, बायो अवेलेबिलिटी एण्ड बायो इक्वीवेलेंस, ड्रग इंटरेक्शन, टॉक्सीसिटी, प्रिक्लीनिकल, इवैल्यूएशन–एक्सपेरिमेन्टल फार्मेकालॉजी (बायो एसे, इन विट्रो इन वाईवो, सेल लाईन स्टडीज, एनिमल एथिक्स।)
33. क्लीनिकल फार्मेकोलॉजी, इवाल्युऐशन ऑफ न्यू केमिकल इनटाइटी फेसेस एण्ड मेथड्स ऑफ क्लीनिकल रिसर्च, एथिक्स इनवॉल्वड इन ह्यूमन रिसर्च।
34. एलीमेंटल कॉन्सटीट्यूवेन्ट ऑफ ह्यूमन बॉडी एण्ड इट्स फिजियोलॉजिकल इंपोर्टेन्स डेफिसिऐन्सिज एण्ड फेसेज ऑफ वेरियस एलीमेन्ट्स (भाईको न्यूट्रीएन्ट्स)
35. टॉक्सीसिटी ऑफ हेवी मेटल्स एवं चिलेशन थैरेपी।
36. नॉलेज ऑफ टॉक्सीसिटी एवं फार्मेकोलॉजिकल एक्टीविटीस ऑफ हर्बोमिनरल कम्पाउण्ड्स।
37. फार्मेकोविजिलेन्स का विस्तृत ज्ञान – नेशनल एण्ड इंटरनेशनल सिनेरियो, फार्मेको विजिलेंस ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स।
38. स्कोप एण्ड इवोलुशन ऑफ फार्मेसी इन्फोरमेशन रिसोर्सेस इन फार्मेसी एण्ड फार्मास्युटिकल साईंस।
39. फार्मास्युटिकल डोसेज फार्म डिजाइन (प्रि.फोर्मुलेशन)
40. पैकेजिंग मटेरियल्स एण्ड लेबलिंग।
41. मैनेजमेंट ऑफ फार्मेसी, स्टोर एण्ड इंवेन्टरी मैनेजमेंट, पर्सनल मैनेजमेंट, गुड़ मैनुफैक्चरिंग प्रैक्टीसेस रिलेटेड टू आयुर्वेदिक ड्रग इंडस्ट्री।
42. फार्मास्युटिकल मार्केटिंग, प्रोडक्ट रिलिज एण्ड विडड्रॉल्स।
43. हॉस्पीटल डिस्पेंसिंग एण्ड कम्युनिटी फार्मेसी।
44. पेटेंटिंग एण्ड इंटेलेक्चुअल प्रापर्टी राइट्स।
45. लॉज गवर्निंग आयुर्वेदिक ड्रग्स – रेलिवेंट रेगुलेटरी प्रोविजन्स ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स इन ड्रग एण्ड कॉस्मेटिक्स एक्ट 1940 एण्ड रूल्स 1945 लॉज परटेनिंग टू ड्रग्स एण्ड मैजिक रेमेडीज (आब्जेक्सनेबल एडवरटाइजमेंन्ट) एक्ट–1954 प्रिवेन्शन, ऑफ फूड, एडलटरेशन (पी.एफ.ए.) एक्ट, फूट स्टेन्डर्डस एण्ड सेफ्टी एक्ट–2006, लॉज परटेनिंग टू नार्कोटिक्स, फैक्ट्री एण्ड फार्मेसी एक्टस, कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट–1986.
46. रेगुलेटरी अफेयर रिलेटेड टू इन्टरनेशनल ट्रेड एण्ड प्रेक्टीसेस ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग।
47. इंट्रोडक्शन टू आयुर्वेदिक फार्माकोपिया ऑफ इंडिया, फार्मुल्री ऑफ इंडिया
48. इंट्रोडक्शन टू इंडियन फार्माकोपिया, ब्रिटिश एण्ड यूनाइटेड स्टेट्स फार्माकोपिया, फार्माकोपिया कोडेक्स.
49. इंट्रोडक्शन टू ट्रेडिशिनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी।

(06) व्याख्याता, अगदतंत्र हेतुः-

1. अगदतंत्र का वैदिक काल, संहिता काल, संग्रह काल एवं आधुनिक काल में कमानुसार विकास।
2. विष की परिभाषा, विष के गुण, ओज एंव मद्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन, विष की सम्प्राप्ति, विष प्रभाव, विष वेग, वेगान्तर एवं विष कार्मुकता (विष के कर्म एवं विष की गति)।
3. उपविष का वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन, आधुनिक विषविज्ञान के संदर्भ में।
4. आयुर्वेद एवं आधुनिक मतानुसार विषों की परीक्षा।
5. स्थावर विष इसकी परिभाषा, व्याख्या, भेद एवं प्रमुख लक्षण, स्थावर वानस्पतिक, खनिज एवं यौगिक विषों की सामान्य विषाक्त लक्षण एवं चिन्ह।
6. जांगम विष का अध्ययन एवं अधिष्ठान (जन्तु विष एवं जन्तुजन्य रोग)। सर्प का प्राचीन एवं आधुनिक मतानुसार अध्ययन, सर्पदंश के कारण एवं प्रकार, सर्पविष का संघटन एवं औषधीय कर्म। सविष दंश के लक्षण एवं निदान। वृश्चिक विष, लूताविष, गृहगोधिका, मूषक, अर्लक, माक्षिका एवं मूषक के विषाक्त लक्षण, उनसे उत्पन्न रोग एवं संचारी रोगों की उत्पत्ति में उनकी भूमिका। शंका विष एवं उनकी चिकित्सा विष संकट एवं विष कन्या।
7. गर विष एवं दूषी विष तथा इनकी विविधताएं, लक्षण, चिन्ह, चिकित्सा एवं आधुनिक प्रासंगिकता। ऑख, नाक, फुफ्फुस, एवं त्वचा में अनुर्जता की अभिव्यक्तियों सहित अनुर्जताओं का विस्तृत अध्ययन।
8. मद्य विष, तंत्रिका तंत्र पर कार्यकारी पदार्थों का विस्तृत अध्ययन एवं मदकारी द्रव्यों के कुप्रभाव (निदान, चिकित्सा एवं नशा मुक्ति)
9. विषजन्य जनपदोध्वंसनीय रोगों के संदर्भ में समसामयिक अध्ययन (विषजन्य, सामुदायिक स्वास्थ्य समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, औद्योगिक प्रदूषण आदि के लक्षण, चिकित्सा प्राचीन एवं अर्वाचीन मतानुसार।
10. विरूद्धाहार की संकल्पना, आधुनिक एवं आयुर्वेदिक मतानुसार आहार विष एवं सात्म्यासात्म्य।
    1) ड्रग इन्ड्रेक्शन एवं इन्कप्पीटिबीलिटी, औषधि सतर्कता (फार्माको विजलेन्स) का गहन अध्ययन।
    2) विष चिकित्सा के मौलिक सिद्धांत।
    3) विभिन्न प्रकार के स्थावर विष के सामान्य एवं विशेष चिकित्सा।
    4) विभिन्न प्रकार के जांगम विष के सामान्य एवं विशेष चिकित्सा। (जन्तु विष, कीटविष, सर्पदंश एवं अन्य जन्तुजन्य रोग)
    5) विष की आत्यायिक चिकित्सा, प्रतिविष तथा प्रतिषिरा की निर्माणविधि, उपयोग एवं उपद्रव।
    6) चर्तुविंशति उपक्रम (24 मैनेजमेंट प्रोसीजर्स)
    7) गरविष एवं दुषीविष की चिकित्सा, आंख, नाक, फुफ्फुस, त्वचा में उत्पन्न अनुर्जता की चिकित्सा।
    8) औषधजन्य विषाक्तता का निदान एण्वं चिकित्सा।
    9) संस्पर्शजन्य विष (पादुका, वस्त्र, आभरण, मुखलेप, विषबाधा आदि के कारण एवं उसकी चिकित्सा।
    10) आहार विषाक्तता की चिकित्सा।
    11) विषजन्य मृत्यु का कारण, संदिग्ध विषाक्तता में चिकित्सक के कर्तव्य एवं मरणोत्तर विष परीक्षण।
    12) अतिरिक्त शारीरिक विधियों (डायलिसिस आदि) विष निर्हरण हेतु।
11. व्यवहार आयुर्वेद की परिभाषा, इसकी उत्पत्ति प्राचीन एवं आधुनिक काल में।
12. व्यक्तिगत पहचान एवं इसका चिकित्साविधिक महत्व।
13. मृत्यु एवं इसका चिकित्साविधिक महत्व (थैनेटोलॉजी)
14. श्वासारोध जन्यमृत्यु एवं इसका चिकित्सा विधिक महत्व।
15. मृत्यु के कारण उपवास, ताप एवं शीतजन्य अभिघात, विद्युतघात, तडिताघात।
16. मरणोत्तर परीक्षा। (चिकित्सा विधिक शव परीक्षा)
17. रासायनिक या नाभिकीय विस्फोट के कारण क्षत/अभिघात।
18. अभिघात (व्रण/क्षत या उपहति) तथा इनका व्यवहार आयुर्वेदीय परीक्षण।
19. नपुंसकता एवं बंध्यत्व–व्यवहार आयुर्वेदिय दृष्टि से महत्व। कृत्रिम गर्भाधान एवं सैरोगैसी मातृत्व का व्यवहार आयुर्वेद दृष्टि से महत्व।
20. व्यभिचार एवं अप्राकृतिक कामवासना।
21. कौमार्य, सगर्भता, प्रसव, गर्भपात, शिशुदत्या तथा धर्मजता के संबंध में विधि कानून एवं अधिनियम।
22. भारमीय दण्ड संहिता, अपराधिक दण्ड प्रकिया संहिता से संबंधित अधिनियम का अध्ययन, उदाहरण– भारतीय साक्ष्य अधिनियम, जन्मपूर्व लिंग परीक्षण अधिनियम, नर्सिंग होम अधिनियम, मानव अंगप्रत्योपण अधिनियम, औषधि प्रसाधन अधिनियम–1940, नार्कोटिक ड्रग्स एवं साइकोट्रॉपिक सब्स्टेंसेस अधिनियम–1985, फार्मेसी अधिनियम–1948, ड्रग्स एवं मैजिकल रेमिडीज (विरोधागत विज्ञापन), अधिनियम–1954, औषध एवं प्रसाधन निर्माण अधिनियम – 1955, शारीर रचना अधिनियम इत्यादि एवं सरकार द्वारा समय–समय पर दिए गए संबंधित अधिनियम।

क्रमशः

23. भारतीय न्यायालय एवं न्यायिक प्रक्रिया, न्यायालिक विज्ञान प्रयोगशाला, मानसिक विकार एवं व्यवहार आयुर्वेदीय विवेचन।
24. चिकित्सा के कर्तव्य एवं विशेषाधिकार, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद की संरचना, कार्य एवं न्यायाधिकार। सी.सी.आई.एम. के अंतर्गत नियमावली का संचालन।
25. राज्य–भारतीय चिकित्सा परिषद की संरचना, अधिकार एवं कर्तव्य। चिकित्सक रोगी संबंध।
26. रोगी का अधिकार, इच्छामृत्यु, व्यवसायिक गोपनीयता एवं विशेषाधिकार। व्यवसायिक उपेक्षा एवं अनाचार, क्षतिपूर्ति बीना पालिसी, उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम का चिकित्सा अभ्यास में महत्व।
27. चिकित्सक के आचार एवं नियम, चिकित्सक के प्रकार, प्राणाथिसर एवं रोगाभिसर चिकित्सक की पहचान, चिकित्सक के गुण, चिकित्सक के उत्तरदायित्व, चतुर्विध वैद्यवृत्ति, चिकित्सक का रोगी के प्रति कर्तव्य, वैद्य सदवृत्तम्, अपूज्य वैद्य –वृत्ति के संबंध में, महिला रोगी संबंध। विष द्रव्यों का शोधन, मारण एवं संस्करण। अगदतंत्र में उपयोग होने वाले विभिन्न योगों की कार्मुकता (फार्मेकोडायनेमिक्स) आयुर्वेदिक एवं आधुनिक मतानुसार, औषधि विज्ञान का अध्ययन एवं प्रतिविष का उपयोग।
28. आयुर्वेदिक एवं आधुनिक दृष्टिकोण से औषधि निर्माण विज्ञान का मूलभूत सिद्धांत। विष द्रव्य एवं संदिग्ध द्रव्यों का रासायनिक, विश्लेषणात्मक एवं प्रयोगशालीय परीक्षण। विष के परीक्षण में उपयोग होने वाले विभिन्न यंत्रों/ उपकरणों का प्रयोग। चिकित्सीय विषविज्ञान की प्रस्तावना, प्रयोगात्मक विषविज्ञान की प्रस्तावना, अक्सिकोजिनोमिक्स सर्वे की प्रस्तावना। परंपरागत एवं स्थानीय विष चिकित्सा सम्प्रदाय का अध्ययन।

(07) व्याख्याता, स्वस्थ्वृत्त हेतुः-

01. आयुर्वेद के अनुसार समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा।
02. स्वास्थ्य की व्यापकता, आइसवर्ग फिनोमिनोन ऑफ डिसिसेस के अनुसार स्वास्थ्य के आयाम।
03. दिनचर्या– संपूर्ण वर्णन चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट एवं भावमिश्र के अनुसार।
04. दिनचर्या प्रक्रिया का संभावित शारीरिक प्रभाव।
05. रात्रिचर्या का भावमिश्र एवं अन्य शास्त्रोक्त वर्णन।
06. विभिन्न देशों में दिन और रात का कम।
07. ऋतुचर्या का शास्त्रोक्त वर्णन – आचार्य चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भेलसंहिता एवं भावमिश्र के अनुसार।
08. विभिन्न भारतीय राज्यों में ऋतु का प्रसार।
09. विश्व के विभिन्न देशों में ऋतुओं का कम।
10. ऋतुसंधियों मे शोधन का कम।
11. वेग के सिद्धांत, प्रकार एवं धारणीय व अधारणीय वेग का कियात्मक अध्ययन।
12. आचार्य चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट एवं शारंगधर के अनुसार प्राचीन आहार व्यवस्था।
13. शास्त्रोक्त आहार वर्ग एवं आधुनिक आहार का तुलनात्मक अध्ययन।
14. भारत के विभिन्न राज्यों में मुख्य आहार वर्णन।
15. विभिन्न देशों में विशेष आहार एवं उनका जलवायु से संबंध।
16. युवावस्था, किशोरावस्था, वृद्धावस्था, गर्भवती महिलाएँ और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए संतुलित आहार का सिद्धांत।
17. आहार द्वारा कुपोषण, अल्पपोषण एवं अधिक पोषण में बचाव। (आहार का महत्व)
18. आहार सेवन की विधियाँ आचार्य चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट्ट के अनुसार।
19. शाकाहारी एवं मांसाहारी भोजन के लाभ एवं हानि।
20. विरूद्धाहार – आयुर्वेद एवं आधुनिक मतानुसार उदाहरण।
21. सदवृत्त – चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट्ट के अनुसार तुलना।
22. प्रज्ञापराध – कारण, प्रभाव एवं निवारण।
23. आचार रसायन – नित्य रसायन।
24. स्वास्थ्य के लिए रसायन किया विधि।
25. स्वास्थ्य के लिए वाजीकरण किया विधि।
26. मानसिक स्वास्थ्य में आयुर्वेद का महत्व।
27. व्याधिक्षमत्व – आधुनिक एवं आयुर्वेद सिद्धांत।
28. स्वास्थ्य शिक्षा के सिद्धांत।
29. आयुर्वेद एवं आधुनिक विज्ञान में अनुवांशिकी।
30. सामुदायिक स्वास्थ्य का सिद्धांत।
31. रोकथाम के सिद्धांत – आयुर्वेद मतानुसार।
32. आधुनिक चिकित्सा अनुसार बचाव के सिद्धांत, बचाव के स्तर, स्टेजेस ऑफ इन्टरवेनशन।
33. वेब ऑफ कासेषन ऑफ डिसिसेस मल्टीफैक्टोरियल कासेसन।
34. रोगों के पौराणिक इतिहास।
35. पर्यावरण एवं सामुदायिक स्वास्थ्य।
36. डिसइन्फेक्शन प्रेक्टीसेस फार द कम्यूनीटी मार्डन एण्ड आयुर्वेदिक।
37. टीकाकरण (प्रतिरक्षण) कार्यक्रमों में आयुर्वेद का योगदान।
38. पर्यावरण तथा सामुदायिक स्वास्थ्य।
39. डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार आतुरालय, सुतिकागार, कुमारागार, पंचकर्मगार तथा महानास (कीचन) की मानक रूप रेखा।
40. डिस्पोसल ऑफ वेस्ट–रिफ्यूज, सिवेज, मेथेड्स ऑफ सिवेज डिस्पोजल इन सिवर्ड एण्ड अन सिवर्ड एरियास।
41. व्यावसायिक स्वास्थ्य, कृषिशास्त्र तथ ई.एस.आई. में आयुर्वेद का महत्व।
42. कीट विधा तथा मानवीय शास्त्र का वैज्ञानिक महत्व एवं उसकी नियंत्रात्मक इकाई।
43. संकामक रोगों में परजीवी का अध्ययन।
44. स्कूल स्वास्थ्य सेवा एवं आयुर्वेद का सम्भाविक योगदान।
45. जनसांख्यिकी एवं परिवार नियोजन।
46. परिवार कल्याण कार्यक्रम एवं उसका आयुर्वेद में योगदान।
47. जराजन्य समुदाय की जटिल समस्या तथा उसका महत्व।
48. निःशक्तजनो की देखभाल।
49. जीवनशैली जन्य विकार एवं इसमें आयुर्वेद का योगदान।
50. हेल्थ टुरिज्म आयुर्वेदिक रीसॉर्ट मैनेजमेण्ट पंचकर्म एण्ड एलाईट प्रोसिजर ।
51. सामाजिक चिकित्सा विज्ञान।
52. आधुनिक विज्ञान के अनुसार महामारी का विवेचन।
53. जनपदोध्वंस का समीक्षात्मक मूल कारण।
54. जनपदोध्वंस से होने वाली विभिन्न प्रकार के बीमरियों का संपूर्ण वर्णन।
55. संचारी रोगों के लिए सामान्य जाँच।
56. यौन संचारित रोग और उनके नियंत्रण।
57. आयुर्वेद की दृष्टि से संकामक रोग।
58. महामारी की जाँच।
59. महामारी के नियंत्रण।
60. रोग प्रतिरोधक (व्याधि क्षमत्व)।
61. व्याधि क्षमत्व की आयुर्वेदिक विधि।
62. यात्रियों को स्वास्थ्य संबंधी सलाह।
63. अस्पताल अलगाव वार्ड और जैव अपशिष्ट प्रबंधन।
64. राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में आयुर्वेद का योगदान।
65. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य मंत्रालय का स्वास्थ्य प्रशासन आदेश।
66. आयुष राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रम (एन.आर.एच.एम.), राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य कार्यक्रम (एन.यू.एच.एम.) का प्रबंधन, कार्य एवं कार्यक्रम।
67. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेन्सी/ संगठन एवं उनके वर्तमान क्रियाकलाप।
68. आपदा प्रबंधन।
69. अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर संकामक रोगों से जुड़े आंकड़े।
70. महत्वपूर्ण सांख्यिकी।
71. योग का इतिहास एवं कमागत उन्नति।
72. योग के विभिन्न विधायें।
73. राजयोग (अष्टांगयोग) पतंजली के दर्शन योगसूत्र के अनुसार।
74. हठयोग प्रदीपिका, घेरण्ड संहिता एवं शिव संहिता के अनुसार "हठयोग"।
75. कर्मयोग दर्शन भागवत गीता के अनुसार।
76. मत्रयोग, लययोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग।
77. शरीर एवं मन पर योग का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, प्रचीन एवं आधुनिक अवधारणा।
78. स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर की अवधारणा।
79. पंचकोष की अवधारणा, षड्चक्र और कुण्डलनी की अवधारणा।
80. षड्किया के उपचारात्मक प्रभाव।
81. निम्न रोगों पर योग अभ्यास के उपचारात्मक प्रभाव–डायलिसिस, हाइपरटेंसन, कार्डियोवस्कुलर डिसारडर्स, ओबेसिटी, अस्थमा, पाइल्स, इरिटेबल बाउल सिन्ड्रोम, इक्जिमा, सोरयेसिस, स्ट्रेस डिसारडर्स, आई डिस्ऑर्डरस, हेडऐक, जुवेनाइल डेलीक्वेन्सी, मेंटल रिटारडेषन, डिप्रेशन न्युरोसिस, सेक्सुअल डिसफंक्शन, युटेराइन डिस्ऑर्डर्स, कैंसर इत्यादि।

क्रमशः

82. आयुर्वेद में योग – मोक्ष की अवधारणा, मोक्ष के साधन, नैष्ठिकी चिकित्सा, तत्वस्मृति सत्याबुद्धि, योगी नाम बलम् ऐश्वर्यम् (च.स.शा. 1 और 6)।
83. निसर्गोपचार का इतिहास।
84. प्राकृतिक चिकित्सा में भारतीय शिक्षा का मौलिक / मूल सिद्धांत
85. प्राकृतिक चिकित्सा में भारतीय शिक्षा के मौलिक सिद्धांत और इनकी चिकित्सीय उपयोगिता।
86. अभ्यंग के विभिन्न प्रकार और उनके चिकित्सीय उपयोगिता।
87. एक्युपंक्चर और एक्युप्रेशर की अवधारणा / संकल्पना।
88. कोमोथैरेपी और मैग्नेटोथैरेपी का सिद्धांत।

(08) व्याख्याता, प्रसूतितंत्र-स्त्रीरोग हेतुः-

01. स्त्रीशरीर के मूत्रवह संस्थान एवं प्रजनन संस्थान की संरचना का अनुप्रयुक्त अध्ययन, श्रोणि एवं पेल्विक फ्लोर, श्रोणिगुहा का आकलन एवं गर्भशिर।
02. यौवनावस्था (प्यूबर्टी) से संबंधित शरीरक्रियात्मक ज्ञान, तंत्रिकीय–अंतःस्त्रावीग्रन्थि तंत्र एवं विकृति का अध्ययन, मासिक चक्र का न्यूरोइन्डोक्राइनोलॉजिकल नियंत्रण, आर्तव, ऋतुचक्र, स्त्रीबीज एवं पुंबीज।
03. गर्भसंभव सामाग्री, गर्भाधान, गर्भाधान के पूर्व परामर्श एवं देखभाल, पुंसवन, गर्भ की षड्धात्वात्मकता, गर्भावक्रान्ति, गर्भ के मातृजादि भाव, गर्भवृद्धी, गर्भ के निर्माण और विकास में पंचमहाभूतों का योगदान, गर्भाशय अवयव उत्पत्ति, प्रजनन के मूलभूत तथ्य– बीज निर्माण, निषेचन, गर्भाधान एवं मानव भ्रूण का प्रारंभिक विकास।
04. अपरा, गर्भोदक, जरायु, नाभिनाड़ी।
05. अपरा, गर्भोदक, गर्भावरण (मेम्ब्रेन्स्) और नाभिनाड़ी– इनका निर्माण, संरचना, कार्य एवं असामान्यतायें, गर्भपोषण, गर्भशारीर क्रिया की विशेषता, गर्भ लिंग उत्पत्ति, गर्भ वर्णोत्पत्ति, गर्भ की मासानुमासिक वृध्दी, गर्भ शरीर का रक्त परिसंचरण, गर्भ की वृध्दी एवं विकास क्रम।
06. बीज, बीजभाग, बीजभागावयव जन्य गर्भागविकृति, गर्भ की अनुवांशिक विकृतियाँ, गर्भ की अन्य कुरचनात्मक (टिरेटॉलाजिकल) असामान्यतायें ।
07. गर्भिणी निदान, गर्भावस्था का सापेक्ष निदान, गर्भकालीन मातृशरीरगत परिवर्तन के लक्षण, दौहृद, गर्भावस्था के सामान्य एवं विशिष्ट निदान, गर्भावस्था के समय होने वाले शरीर रचनात्मक एवं शरीर क्रियात्मक परिवर्तन, गर्भावस्था से संबंधित अंतःस्त्रावीग्रन्थि तंत्र के कार्यों का अध्ययन, गर्भावस्था से संबंधित इम्यूनोलॉजी का अध्ययन।
08. गर्भिणी परिचर्या, मासानुमासिक पथ्य–अपथ्य एवं गर्भोपघातकर भाव, प्रसव पूर्व जाँच देखभाल– परिक्षण, जाँच एवं चिकित्सकीय प्रबंधन।
09. गर्भ संख्या निर्णय– बहुपत्यता (मल्टीपल प्रग्नेंसी) ।
10. गर्भव्यापद– गर्भस्त्राव एवं गर्भपात के निदान, लक्षण एवं चिन्ह, उपद्रव, चिकित्सकीय प्रबंधन एवं चिकित्सा। उपविष्टक, नागोदर / उपशुष्क, लीनगर्भ, गूढगर्भ, जरायुदोष, अन्तर्मृतगर्भ, गर्भशोष, गर्भक्षय, भूतहृत गर्भ, रक्तगुल्म।
11. गर्भपात, गर्भशयान्तर्गत गर्भ विकास अवरोध (आई.यू.जी.आर.), गर्भाशयान्तर्गत गर्भ मृत्यु (आई.यू.एफ.डी.), अपस्थानिक सगर्भता (एक्टोपिक प्रग्नेंसी), गेस्टेशनल ट्रोफोब्लास्टिक नियोप्लेजिया।
12. गर्भिणीव्यापद– गर्भिणी व्यापदों का निदान पंचक एवं चिकित्सा।
13. गर्भावस्था के उपद्रवों की पूर्व पहचान, विभेदक निदान एवं उनका शीघ्र चिकित्सकीय प्रबंधन–इमेसिस ग्रविडेरम एवं हाईपर इमेसिस ग्रविडेरम, गर्भिणी पाण्डु, गर्भावस्थाजन्य उच्चरक्तचाप, पूर्व–आक्षेपक (प्री एक्लेम्पसिया), आक्षेपक (एक्लेम्पसिया), प्रसव पूर्व रक्तस्त्राव, आर.एच. इन्कम्पेटिबिलिटी। मेडिकल, सर्जिकल एवं गायनेकोलॉजिकल विकृतियों से जटिल गर्भावस्थाओं का प्रबंधन एवं इनका संबंधित विशेषज्ञों से परामर्श कर सामुहिक उपचार का दृष्टीकोण।
14. गर्भास्था में होने वाले संक्रमण– टॉक्सोप्लाज्मोसिस, वाइरल इन्फेक्शन्स्– रुबेला, साइटोमेगाली वायरस, हिपेटाइटिस बी, हर्पिस। सिफलिस एवं अन्य यौन संचारी संक्रमण– एच.आई.वी., एच.आई.वी. का माता से शिशु में संक्रमण की रोकथाम (पी.एम.सी.टी.) ।
15. गर्भावस्था से संबंधित जातहारिणीयाँ ।
16. गर्भावस्था के उपद्रव युक्त होने पर माता और गर्भ के स्वास्थ्य का आधुनिक निदानात्मक साधनों के उपयोग से मूल्यांकन।
17. गर्भ की असामान्यताओं का प्रसवपूर्व निदान एवं उनकी उपयुक्त देखभाल, पी. एन.डी.टी. एक्ट और उसका अनुकरण।
18. विशेष अध्ययन–अष्टांगहृदय शारीर प्रथम अध्याय–गर्भावक्रान्ति, सुश्रुत संहिता शारीर तृतीय अध्याय– गर्भावक्रान्ति, चरक संहिता शारीर अष्टम अध्याय– जातिसूत्रीय।
19. प्रसव परिभाषा, प्रसव काल, प्रसव प्रारंभ का कारण, प्रसवकालीन गर्भ स्थिती, आवी, सूतिकागार।
20. प्रसव अवस्थायें एवं उनकी परिचर्या।
21. गर्भसंग, विलम्बित प्रसव, मूढ़गर्भ एवं अपरासंग के निदान संप्राप्ति, लक्षण एवं चिन्ह, रोकथाम एवं चिकित्सकीय प्रबंधन।
22. प्रसव की विभिन्न अवस्थाओं की जटिलतायें।
23. हाइरिस्क गर्भावस्था का प्रसव प्रबंधन, प्रसव पूर्व–आक्षेपक विषमयता (प्री एक्लेम्पटिक टॉक्सेमिया), आक्षेपक (एक्लेम्पसिया), डायबिटीस, हृदय रोग (कार्डियक डिसीस), एस्थमा, इपीलेप्सी, प्रसव पूर्व रक्तस्स्त्राव, प्रीटर्म प्रीमेच्योर मेम्ब्रेन्स् रप्चर, प्रसवकाल–पूर्व एवं प्रसव–कालातीत बहुगर्भावस्था (प्रीटर्म एवं पोस्टटर्म मल्टीपल प्रग्नेंसी), गर्भशयान्तर्गत गर्भविकास अवरोध (आई.यू.जी. आर.), एवं एच.आई.वी.– (एड्स)।
24. मृतगर्भ (स्टिलबर्थ) – निदान, जटिलतायें एवं चिकित्सकीय प्रबंधन।
25. नवजात शिशु का परिक्षण एवं प्रबंधन।
26. बर्थ एसफिक्सिया का चिकित्सकीय प्रबंधन।
27. नवजात शिशुओं की जन्मजात कुरचनाओं का पता लगाना एवं उनके सुधार हेतु समय से रेफर किया जाना।
28. सूतिका की परिभाषा, काल मर्यादा, परिचर्या, सूतिका व्याधियाँ एवं उनकी चिकित्सा।
29. स्तनसम्पत्, स्तन्य उत्पत्ती, स्तन्य सम्पत्, स्तन्य परिक्षा, स्तन्यवृध्दी एवं स्तन्यक्षय, स्तन्यदुष्टि के निदान, लक्षण एवं चिकित्सा, स्तनशोथ एवं स्तनविद्रधि।
30. स्तन्यनिर्माण का शमन ।
31. सूतिकावस्था की सामान्य एवं असामान्य स्थिती ।
32. रक्ताधान– रक्ताधान एवं रक्त के घटक द्रव्यों का प्रतिस्थापन।
33. प्रसवविज्ञान में द्रव एवं इलक्ट्रोलाइट्स की मात्रा के असंतुलन का प्रबंधन।
34. अष्टांगहृदय शारीरस्थान द्वितीय अध्याय– गर्भव्यापद, सुश्रुतसंहिता निदानस्थान अष्टम अध्याय– मूढ़गर्भनिदान, सुश्रुतसंहिता चिकित्सा स्थान पंद्रवां अध्याय– मूढ़गर्भ चिकित्सा।
35. स्त्री प्रजनन संस्थान एवं मासिक चक्र की विकृतियाँ, स्त्री प्रजनन अंगों की जन्मजात कुरचनायें, आर्तवदुष्टी, आर्तववृध्दी, आर्तवक्षय, असृग्दर, अनार्तव एवं कष्टार्तव, प्रजनन अंगों के संक्रमण एवं यौन संक्रमित संक्रमण, असामान्य योनिगत स्त्राव, योन्यार्श, योनिकन्द, गुल्म, ग्रन्थि, अर्बुद, गर्भशयगत असामान्य रक्तस्त्राव, इन्डोमेट्रीओसिस, पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम, स्त्री प्रजनन अंगों के कर्कटार्बुद (नियोप्लाजिया), स्त्री प्रजनन संस्थान को प्रभापित करने वाली अंतःस्त्रावीग्रन्थि तंत्र की विकृतियाँ, सोमरोग।
36. यानिव्यापद– योनिव्यापदों का विभिन्न आचार्यों द्वारा वर्णित विस्तृत अध्ययन, उनके विमर्श और योनिव्यापदों का आधुनिक स्त्रीरोग के सभी संभावित तुलनात्मक रोगों से साम्यता।
37. बंध्यत्व।
38. स्तनरोग– स्तनशोथ, स्तनकीलक, स्तनविद्रधि, स्तनग्रन्थि, स्तनअर्बुद का विस्तृत अध्ययन। स्तन का परीक्षण, ब्रेस्टलम्प का निदान एवं विभेदक निदान।
39. गर्भनिरोधन के उपाय– आयुर्वेदीय दृष्टीकोण से गर्भनिरोधक एवं गर्भपातक योग, अस्थायी गर्भनिरोधन, गर्भनिरोधन विषय के क्षेत्र में आधुनिकतम ज्ञान, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के उन्नयन हेतु राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम। सामाजिकी प्रसवविज्ञान एवं जैविकी सांख्यिकी (मेटरनल एवं पेरिनेटल मोर्टेलिटी) ।
40. स्थानिक चिकित्सा।
41. स्थानिक चिकित्सा कर्मो का विस्तृत अध्ययन– योनिपिचु धारण, योनिवर्ति, धूपन, धावन, परिषेक, कल्कधारण, उत्तरबस्ति, अग्निकर्म एवं क्षारकर्म।
42. रजोनिवृत्ति– रजोनिवृत्तिकालीन लक्षण (क्लाइमेक्ट्रिक) एवं रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज)।
43. वृध्दावस्था में स्वास्थ्य की देखभाल (जेरियाट्रिक्स हेल्थ केयर)।
44. आधुनिक निदानात्मक तकनीक एवं परिक्षण उपायों का अध्ययन।
45. स्त्रीरोग में प्रयोग किए जाने वाले महत्वपूर्ण द्रव्य।
46. स्त्रीरोग में पंचकर्मचिकित्सा ।
47. विशेष अध्ययन– चरकसंहिता चिकित्सास्थान तीसवाँ अध्याय– योनिव्यापद चिकित्सा, सुश्रुतसंहिता उत्तरतंत्र तीसवाँ अध्याय– योनिव्यापद प्रतिषेध अध्याय, काश्यपसंहिता कल्पस्थान– शतपुष्पा शतावरी लशुन कल्प अध्याय।
48. प्रसवविज्ञानीय एवं स्त्रीरोग संबंधी शल्यकर्मों के सामान्य सिध्दांत। प्रसवविज्ञानीय एवं स्त्रीरोग संबंधी शल्यकर्मों में एनालजेसिया एवं एनेस्थेशिया ।

क्रमशः

49. प्रसवविज्ञान में शल्यक्रिया प्रयोग संबंधी निर्णयात्मक तकनीक। शल्य क्रियाजन्य उपद्रवों (काम्पलीकेशन्स) के निदान एवं उनका प्रबंधन।

50. डायलेटेशन एवं इवेकुएशन, हिस्टेरेक्टॉमी, सुरक्षित गर्भपात सेवाओं के प्रावधान– केसेस का चयन, तकनीक एवं उपद्रवों का प्रबंधन, संक्रमित गर्भपात (सेप्टिक एबार्शन), अपराधिक गर्भपात (क्रिमिनल एबार्शन), चिकित्सकीय गर्भ समापन कानून (एम.टी.पी. एक्ट), सरवाइकल इनकम्पीटेंस, इस्ट्रूमेंटल डिलीवरी (फॉरसेप्स वैक्यूम एक्सट्रेक्शन), सिजेरियन सेक्शन, प्लेसेंटा का निर्हरण (मैनुअल रिमूवल), सिजेरियन हिस्टेरेक्टॉमी ।

51. स्त्रीरोग संबंधी शल्यकर्म– स्त्रीरोग संबंधी मेजर एवं माइनर शल्यकर्मों हेतु केसेस का चयन, तकनीक एवं उपद्रवों का प्रबंधन। गर्भाशय मुखदहन (सरवाईकल कॉटेराइजेशन), पॉलीपेक्टॉमी, मायोमेक्टॉमी, सिस्टेक्टॉमी, अण्डाशय निर्हरण (उफोरेक्टॉमी), संतति प्रतिबंधक शल्यकर्म (सर्जिकल स्टरलाइजेशन प्रोसिजर्स), गर्भाशय भ्रंश हेतु गर्भशय निर्हरण शल्यकर्म (हिस्टेरेक्टॉमी सर्जीकल प्रोसिजर्स फॉर जेनाइटल प्रालेप्स), जननांगों के सौम्यार्बुदों का शल्यकर्म प्रबंधन (सर्जिकल मैनेजमेंट ऑफ बेनाइन जेनाइटल नियोप्लाज्म), प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग में हुए अभिनव विकास (रीसेंट एडवांसेस इन ऑब्सटेट्रिक्स एण्ड गायनेकोलॉजी)– निदानात्मक एवं चिकित्सात्मक (डायग्नोस्टीक एण्ड थेरेप्यूटिक्स), शॉक एवं इसका चिकित्सकीय प्रबंधन, रक्ताधान, द्रव एवं इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन, फ्ल्युड थेरेपी, दस्तावेजों का संधारण (रिकार्ड कीपिंग), प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग में नैतिक एवं वैधानिक समस्यायें, प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग के चिकित्सकीय एवं वैधानिक (मेडिकोलीगल) पक्ष– नैतिकता सूचना और परामर्श (इथिक्स कम्यूनिकेशन एण्ड काउंसिलिंग), प्रसूतितंत्र एवं स्त्रीरोग गहन चिकित्सकीय देखभाल।

(09) व्याख्याता, कौमारभृत्य हेतुः-

1. प्राकृत बीज–बीजभाग–बीजभागअवयव एवं तद्जन्य विकृति ।
2. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आयुर्वेदिक आनुवंशिकी, शुक्र शोणित दोश, बीज–बीजाभाग–बीजभाग अवयव विकृति, मातृज एवं पितृज भाव, यज्जह पुरूषीय एवं अतुल्य गोत्रिय मापदण्ड (अच्छे संतान के लिए)
3. आधुनिक आनुवांशिकी।
4. मौलिक सिद्धांत, कोशिका, कोशिका विभाजन, केन्द्रिका, डी.एन.ए., गुणसूत्र, वर्गीकरण कैरियोटाईप मालिक्यूलर एवं कोशिकाजनन प्रकरण जीन की संरचना एवं आण्विक जांच, मानवीय गुणसूत्र संरचना, संख्या एवं वर्गीकरण, गुणसूत्र निर्माण प्रकिया, बंधन स्वरूप, एकल जीन वंशानुक्रम स्वरूप, आटोसोमल एवं लिंग गुणसूत्र वंषानुक्रम का स्वरूप, मध्यवर्ती स्वरूप एवं मल्टीपल एलील्स, परिवर्तन (म्यूटेशन्स), नॉन मेन्डेलिन, वंशानुक्रम, माईटोकॉण्ड्रियल वंशानुक्रम, जिनोमिक इम्प्रिंटिंग पैरेन्टल डाईसोमी, काईटेरिया फॉर मल्टीफैक्टोरियल वंशानुक्रम।
5. रोगजनन : पैथोजेनेसिस ऑफ कोमोसोमल एबरेशन्स एवं उनके प्रभाव, पुनः संयोजक डी.एन.ए. रिकॉबीनेन्ट डी.एन.ए., अनुवंशिक वंशानुक्रम, इनबार्न एरर्स ऑफ मेटाबोलिज्म, कोमोसोमल एबनार्मल्टीस, आटोसोमल एवं लिंग गुणसूत्र विकृति, सिण्ड्रोम्स, मल्टीफैक्टोरियल पैटर्न ऑफ वंशानुक्रम, टिरेटोलॉजी, कैंसर आनुवंशिकी – हिमैटोलॉजिकल मैलिग्नेन्सिज, फार्मेकोजेनेटिक्स, गुणसुत्रीय विकास, कोमोसोमल एब्रेसन्स (क्लाईनफेल्टर, टर्नर एण्ड डाउन्स सिण्ड्रोम्स), आनुवंशिक परामर्श, नैतिकता और आनुवंशिकी।
6. प्राकृत बीज – बीजभाग – बीजभागअवयव एवं तद्जन्य विकृति, गर्भ (एम्ब्रियो), गर्भावस्था, शुक्राणु, डिम्ब (ओवम), शुक्राणुजनन (स्पर्मेटोजेनेसिस), अण्डजनन (ऊजिनेसिस), डिम्बसंरचना, स्पर्म इन द मेल जेनाईटल ट्रैक्ट, स्पर्म इन द फिमेल जेनाईटल ट्रैक्ट, एक्टिवेशन एवं कैपासिटेशन ऑफ स्पर्म, गर्भ मासानुमासिक वृद्धि एवं विकास (आयुर्वेदिक एवं अधुनिक मतानुसार) प्रथम सप्ताह विकास (फर्स्ट वीक ऑफ डव्हलपमेन्ट), द्वितीय सप्ताह विकास (सेकण्ड वीक ऑफ डव्हलपमेन्ट), तृतीय सप्ताह विकास (थर्ड वीक ऑफ डव्हलपमेन्ट), चतुर्थ से अष्ट सप्ताह विकास (फोर्थ टू ऐट वीक ऑफ डव्हलपमेन्ट) ।
7. बालक में प्रकृति निर्माण एवं उसका मूल्यांकन– बाल, कुमार यौवन, प्रकृति के अनुसार पथ्य–अपथ्य।
8. अपरा, अपरा निर्माण, अपरा कार्य, अपरा विकार।
9. नाभिनाड़ी (अम्बलाईकल कॉर्ड), नाभिनाड़ी का निर्माण एवं संरचना, गर्भ पोषण, यमलगर्भ, गर्भ वृद्धिकर भाव, गर्भ उपघातकर भाव, मातृ औषध आहार का प्रभाव एवं इलनेस ओवर फीटस।
10. टिरैटोलॉजी इन्चलुडिंग डिफैक्ट्स ऑफ बीज आत्मा, कर्म, काल, आसय, आदि कॉजेटिव फैक्टर्स फोर टिरैटोजैनेसिटी मोड ऑफ एक्शसन्स ऑफ टिरैटोजेन्स क्रिटिकल पीरिएड्स।
11. जन्मजात देखभाल एवं जन्मजात जटिलता।
12. बच्चों के लिए विशिष्ट जातहारिणी के वैज्ञानिक अध्ययन।
13. प्रसवपूर्व निदान।
14. सामान्य जन्मजात विकार, सहज हृदय विकार, जलषीर्शक, खण्डौष्ठ, खण्ड तालु, सन्निरूद्ध गुद पाद–विकृति, ट्रेकियोओइसोफेजियल फिस्टूला (टी.ओ. एफ.), स्पाईना बाईफिडा, मेनिंगोसील, मेनिंगोमाईलोसील, पाईलोरिक स्टेनोसिस।
15. नवजात शिशु परिभाषा, वर्गीकरण ।
16. नवजात शिशु परिचर्या एवं प्राण प्रत्यागमन।
17. सामान्य नवजात शिशु परिचर्या।
18. समय पूर्व एवं समय पश्चात् जात शिशु परिचर्या।
19. प्रसवकालीन अभिघातज व्याधि, उप शीर्षक, भग्न, मस्तिष्क अंतर्गत रक्तस्राव।
20. नवजात शिशु परीक्षणः आयु परीक्षण, आधुनिक परिपेक्ष्य में नवजात शिशु परीक्षण एवं गर्भाशय काल परीक्षण।
21. कुमारागार : नवजात शिशु कक्ष प्रबंधन,नवजात शिशु गहन चिकित्सा ईकाई, नर्सरी योजना, कर्मचारी कार्य व्यवस्था चिकित्सकीय दस्तावेज, चिकित्सकीय दस्तावेज, विसंक्रमणीकरण, नर्सरी में उपकरण के प्रयोग की जानकारी।
22. नवजात शिशु व्याधि, निम्न ताप व्याधि (हाइपोथर्मिया), श्वास अवरोध, उल्वक, रक्त विशमयता, कामला, आक्षेपक, पाण्डु, अतिसार, असम्यक नाभिनाल कर्तनजन्य व्याधि।
23. नवजात क्षुद्रविकार, छर्दि, विबंध, उदरशूल, पूय स्फोट, शिशु नेत्र अभिष्यंद।
24. सद्योजातासय अत्यायिक चिकित्सा, मुर्च्छा जल एवं अम्ल क्षार असंतुलन, आक्षेप, नवजात शिशु में रक्त स्त्राव जन्य विकार आदि।
25. प्रकिया – शिरो–पिचु अभ्यंग परिशेक, प्रलेप, गर्भोदक वमन, आश्च्योतन, नवजात शिशु में प्राण प्रत्यागमन कर्म, रक्त परीक्षण के लिए ब्लड सैम्पलिंग, नाभिकीय शिरा में कैथेटर लगाना बोन मैरो ऐस्पिटेशन, फोटोथैरेपी, नेजो गैस्ट्रिक ट्यूब इन्सर्सन, यूरेथ्रल, कैथेटेराईजेशन, एक्सचेंज ब्लड ट्रांसफ्यूजन, थोरैकोसेन्टेसिस, बोन मैरो इन्फ्यूजन लंबर पंक्चर।
26. पोषण : नवजात शिशु आहार, आयुर्वेद व आधुनिक परिपेक्ष्य में स्तनपान विधान, जल दुध व कैलोरी की नवजात शिशु में दैनिक आवश्यकता, पूर्वकालीक नवजात शिशु के लिए स्तनपान विधि, स्तन्य उत्पत्ति एवं प्रसुति, स्तन्य संगठन, स्तन संपत, स्तन्य संपत एवं महत्व, स्तन्य – पीयूष, स्तन्य – पानविधि, स्तन्य क्षय / स्तन्य नाश, स्तन्य परीक्षण, स्तन्य अभाव पथ्य व्यवस्था, स्तनपान की विभिन्न विधियां, टी.पी.एन. (टोटल पारएन्टरल न्यूट्रिशन), स्तन्य दोष, स्तन्य शोधन, स्तन्य जनन एण्ड वर्धन उपक्रम, धात्री, धात्रीगुण और दोष, ब्रेस्ट मिल्क बैंकिंगका सिद्धांत, लेहन।
27. बाल पोषण, शिशु एवं बालकों में दैनिक पोषण की आवश्यक मात्रा, सामान्य खाद्य स्त्रोत, सात्म्य एण्ड असात्म्य आहार, पथ्य एवं अपथ्य आहार, स्तन्यपानायन।
28. प्राणवह स्रोतोजन्य व्याधि– कास, श्वास, तमक श्वास (अस्थमा), श्वसनक ज्वर (न्यूमोनिया), राजयक्ष्मा, वक्षपूयता, वक्षवात पूर्णता।
29. अन्नवह स्रोतसजन्य व्याधि, ज्वर, छर्दि, अजीर्ण, क्षीरालसक, अतिसार, प्रवाहिका विबंध, उदरशूल, गुदभ्रंश ।
30. रस एवं रक्तवह स्रोतोजन्य व्याधि– पाण्डु और रक्तपित्त, विशिष्ट हृद् रोग , उच्चरक्तचाप, रक्त कैन्सर (ल्यूकेमिया)।
31. मांसवह स्रोतोजन्य व्याधि – मायोपैथीज।
32. मूत्रवह स्रोतोजन्य व्याधि– वृक्क शोथ, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात।
33. वातवह संस्थानजन्य व्याधि– अपस्मार, मस्तुलुंग क्षय, मस्तिष्क शोथ, मस्तिष्क व्रण शोथ।
34. बच्चों में विकलांगता और पुनर्वास– शैशवीय पक्षवध, अर्दित, पक्ष वध, एकांगघात, अधरांगवान, आमवात।
35. मनोवह स्रोतस व्याधि – ब्रेथ होल्डिंग स्पेल, शैय्या मूत्र, ऑटिज्म, ए.डी.एच.डी, लर्निंग डिसैबिलिटी, मेन्टल रिटार्डेशन, टेम्पर टेन्ट्रम, पाइका।
36. अंतः स्त्रावी एवं चयापचयजन्य रोग।
37. कुपोषण जन्य व्याधि– काश्य, फक्क, बालशोष पारिगर्भिक, जीवनीय तत्व व खनिज लवण की कमी तथा अधिकता।
38. कृमि एवम् औपसर्गिक रोग–कृमि, सामान्य रोगाणु व विषाणु जन्य रोग व टीकाकरण रोधी व्याधि : कुक्कुर खांसी, अपतानक, रोमांतिका, कर्णमुल शोथ, रूबेला, मसुरिका, आंत्रिक ज्वर, विषाणु जन्य यकृत शोथ, विषमज्वर, कालाजार,

क्रमशः

डेन्गु, एच.आई.वी एड्स, बालपक्षाघात (पोलियो), मस्तिष्कावरण शोथ मस्तिष्क शोथ, चिकनगुनिया।

39. त्वक विकार– अहिपुतना, शकुनी, सिध्म, पामा, विचर्चिका, चर्मदल, गुदकुट्ट।
40. अन्य व्याधि– जलोदर, गण्डमाला, अपची, कुकुणकादि, अक्षिरोग, हाडकिन तथा नान हाडकिन लिम्फोमा, असामान्य विकास कम, वामनता, निरूद्ध प्रकर्ष, परिदग्ध छवि, उत्फुल्लिका।
41. संघात–बल प्रवृत्त रोग (दंष्ट्रा), श्वान दंष्ट्रा (कुत्ता काटना) सर्प दंष्ट्रा (सर्प काटना), बिच्छु दष्ट्रा (बिच्छु काटना) आदि।
42. आत्यायिक बालरोग प्रबंधन, मूर्च्छा (शॉक) और तीव्र ग्राहिता (एनाफाईलेक्सिस) बल और अम्ल क्षार संतुलन, जलमग्नता (डूबना), विजातीय द्रव्य निगलना (आहरण), अपस्मार की तीव्र अवस्था, तीव्र रक्तस्त्राव, तीव्र वृक्काघात, ज्वरिक आक्षेपक, अस्थमा की तीव्र अवस्था, दग्ध, तीव्र विषमयता।
43. बालग्रहः – ग्रह रोग का वैज्ञानिक अध्ययन।
44. जीवन शैली जन्य विकार।
45. काश्यप संहिता का महत्वपूर्ण योगदान, अरोग्य रक्षा कल्पद्रुम और अन्य आयुर्वेदिक ग्रंथ जैसे– हारीत संहिता, कौमारभृत्य का क्षेत्र साथ में वृहत्रयी संबंधी भाग।
46. पंचकर्मः–पंचकर्म का सिद्धांत (स्वेदन, हस्त पट–स्वेद आदि) और इनका बालकों में विस्तार से प्रयोग करना।
47. कौमारभृत्य में बालकों के चिकित्सकीय क्षेत्र में आद्य अनुसंधान के साथ आधुनिक ज्ञान।
48. बच्चों के वार्ड का विशेष महत्व के साथ अस्पताल व्यवस्था मौलिकता।

(10) व्याख्याता, शल्यतंत्र हेतुः-

1. शल्य के सिद्धांत एवं इसकी व्यवहारिक उपयोगिता में सुश्रुत का योगदान।
2. दोष, धातु मल सिद्धांत की विवेचना एवं इसकी शल्य चिकित्सा में उपयोगिता।
3. रक्त की वैशिष्टयता एवं महत्व चतुर्थ दोष के प्रतिपादन में।
4. यंत्र शस्त्र –प्राचीन एवं अर्वाचीन यंत्रषस्त्रों का परिचय एवं प्रयोग विधि ज्ञान।
5. त्रिविध कर्म – पूर्व कर्म, प्रधान कर्म व पश्चात कर्म का ज्ञान एवं महत्व।
6. असंक्रमित एवं संक्रमणरोधी उपाय। निर्जन्तुकरण– शल्य उपकरण जैसे लेप्रोस्कोप, वस्त्र व शल्य कर्म कक्ष आदि के निर्जन्तुकरण के विभिन्न प्रकार व विधि।
7. शल्यकर्म जन्य संक्रमण– पाक, टिटेनस एण्ड गैस गैंगरीन।
8. यकृतशोथ (हिपेटाइटिस), एच.आई.वी. एड्स, यौन संक्रामक रोग एवं अन्य संक्रामक रोगों से पीडित रोगी की चिकित्सा एवं उपाय।
9. अष्टविध शस्त्र कर्म का सैद्धांतिक ज्ञान एवं उसकी उपयोगिता शस्त्र कर्म के संदर्भ में।
10. सीवन सामग्री, सम्यक सीवन कर्म, विस्त्रावण एवं कृत्रिम अंगक प्रत्यारोपण।
11. मर्म एवं मर्म चिकित्सा सिद्धांत की शल्य चिकित्सा में उपयोगिता। मर्माघात – प्रकार एवं चिकत्सा।
12. रक्तस्त्राव– प्रकार लक्षण एवं चिकित्सा। रक्तस्तंभन–विधि (स्कंदन–संधान–पाचन–दहन व अन्य)। व्रणशोफ एवं विद्रधि।
13. ग्रंथि व अर्बुद – सौम्य एवं घातक, अर्बुद की उत्पत्ति एवं उसकी अनुवांषिकता। गुल्म व उदर रोग।
14. क्षुद्र रोग।
15. रक्ताधान– रक्त समूह, साधारण प्रतिक्रियाएं, योग्य रोगी, अयोग्य रोगी, उपद्रव व उसकी चिकित्सा।
16. शल्य चिकित्सा के संदर्भ में एंटिबायोटिक्स, वेदनानाशक दवा व आत्यायिक दवा या औषधि का ज्ञान।
17. योग्या विधि – प्रायोगात्मक एवं व्यवहारिक अभ्यास शल्यकर्माभ्यास के संदर्भ में – लेप्रोस्कोपिक एवं इंडोस्कोपिक एवं इंडोस्कोपिक कर्म का योगाविधि द्वारा कर्माभ्यास।
18. व्रण – चिकित्सा।
19. मूत्र रोग – मूत्र वह संस्थान के अवयव – वृक्क मूत्रवहस्त्रोतस, वस्ति, अष्ठीला, मेढ्र आदि की रचना शारीर व किया शारीर का ज्ञान, विकृति, परीक्षण (जांच), सम्प्राप्ति, हेतु शस्त्रोपचार सहित संपूर्ण चिकित्सा उपक्रम। अश्मरी का निदान, विकृति एवं शस्त्रोपचार।
    वृक्क एवं मूत्रवाहिनी– जन्मजात विकृति आघात जन्य रोग, संक्रमण, अर्बुद जलवृक्कमयता, जलपूर्ण मूत्रवाहिनी एवं रक्तमूत्रता के लक्षण, जांच एवं शस्त्रोपचार सहित संपूर्ण चिकित्सा।
    बस्ति– जन्मजात विकृति, आघात, संक्रमण, अर्बुद, डाइवर्टिकुलम, भगवस्ति भगन्दर, एटॉनी, सिस्टोसोमियासिस, यूरीनरी डाईवर्जन्स, मूत्राघात एण्ड मूत्रकृच्छ रोग के लक्ष्यण, जांच एवं शस्त्रोपचार सहित संपूर्ण चिकित्सा।
    मूत्रमार्ग (युरेथ्रा)– जन्मजात विकषति जैसे हाइपोस्पेडियस, इपिस्पेडियस, पश्चात् यूरेथ्रल वाल्व, आघात, संक्रमण व अर्बुद के लक्षण, जांच एवं शस्त्रोपचार सहित संपूर्ण चिकित्सा।
    पौरूष ग्रंथि एवं शुक्र नलिका –सौम्य (बी.पी.एच.) एवं घातक शोफ, पौरूष ग्रंथि में संक्रमण जन्य शोफ, पौरूष ग्रंथि विद्रधी एवं अश्मरी।
20. अस्थि रोग एवं मर्म चिकित्सा।
21. शल्य रोगों की चिकित्सा में आधुनिक शल्य चिकित्सा के मूलभूत चिकित्सा सिद्धांत के साथ–साथ शारीर रचना, शरीर किया व विकृति विज्ञान का ज्ञान।
22. सिर तथा कशेरूका के आघात जन्य विकारों का रोग विनिश्चय एवं शस्त्रोपचार। वक्षीय आघात एवं उदरीय अभिघात, विस्फोट अभिघात के लक्षण एवं उनकी चिकित्सा।
23. गलगत रोगों का ज्ञापक निदान व शल्य चिकित्सा जैसे लार ग्रंथियाँ, अवटु ग्रंथियां, थायरोग्लासल ग्रंथि तथा भगंदर, ब्रोंकियल ग्रंथि व भगन्दर, सिस्टिक हाइग्रोमा तथा लसिका ग्रंथि में विकृति।
24. स्तनरोगो का निदान, सौम्य व घातक स्तन अर्बुद का निदान तथा उनकी शल्य चिकित्सा।
25. जठरांत (गेस्टोइन्टेस्टाईनल) रोगों का निदान तथा शल्य चिकित्सा।
26. नाभि तथा उदरभित्ति (वाल्य) – जन्मजात विकार, संक्रमण, नाडी रोग, अर्बुद, उदर व्रण स्फुटन, रेक्टस उदर मांसपंशी का पृथक्करण, डेस्मॉइड अर्बुद व मिलेनीज गैंगरीन (कोथ)।
27. यकृत, पित्ताशय व पित्तनली के रोगों का निदान व शल्य चिकित्सा।
28. शिरा, धमनी, पेशी, स्नायु व कण्डरा की विकृतियों का निदान तथा शल्य चिकित्सा।
29. वृद्धि (हर्निया) रोग का निदान व शल्य चिकित्सा, वक्षणस्थ वृद्धि, और्विक वृद्धि, नाभिगत वृद्धि, इनसिजनल हर्निया व अन्य प्रकार वृद्धि रोग।
30. एण्डोस्कोपिक प्रक्रिया– एण्डोस्कोपी द्वारा आहारनाल, क्षुद्रान्त्र एवं वृहदान्त परीक्षण, (ऐसोफैगोगैस्ट्रोड्यूडेनोस्कोपी, सिग्माईडोस्कोपी एण्ड कोलनोस्कोपी)।
31. लेप्रोस्कोपी का निदानात्मक एवं चिकित्सात्मक प्रयोग।
32. संज्ञानाश परिभाषा, प्रकार, संज्ञाहरण द्रव्य या औषध, योग्य व अयोग्य रोग/रोगी, संज्ञानाश विधि, इसके उपद्रव व चिकित्सा।
33. शल्यतंत्र से संबंधित सुश्रुत संहिता का वृहद अध्ययन के साथ–साथ वृहत्रयी एण्ड लघुत्रयी का अध्ययन।
34. शल्य लेखा परीक्षण (सर्जिकल ऑडिट) का ज्ञान एवं महत्व।
35. न्याय विधि वैद्यक ज्ञान– ओमिशन एण्ड कमीशन्स अधिनियम, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, चिकित्सकीय पेशा, कानूनी चिकित्सा मामले जैसे दुर्घटना हमला आदि में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति।
36. शल्य नीति एवं सूचनात्मक सहमति।
37. शल्यतंत्र के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए प्रयोगात्मक विभिन्न शल्य मॉडल का ज्ञान।
38. संधान कर्म सिद्धांत –आयुर्वेद एवं आधुनिक।
39. अनुशल्य कर्म – 1. क्षारकर्म, क्षारसूत्र, अग्निकर्म और रक्तमोक्षण।
    2. अग्निकर्म – चिकित्सकीय अग्निकर्म, प्रस्तावना, अग्निकर्म का महत्व, पूर्व कर्म, प्रधान कर्म, पश्चात् कर्म, अग्निकर्म में उपयोगी शलाका एवं अन्य उपकरण न उनके प्रयोग के निर्देश, अग्निकर्म के योग्य– अयोग्य, अग्निकर्म के उपद्रव, निदान एवं चिकत्सा। स्नेह दग्ध, धूमोपहत, उष्णवात,
    आतपदग्ध, शीत दग्ध, विद्युत दग्ध इत्यादि का ज्ञान व चिकित्सा। आधुनिक अग्निकर्म के विभिन्न उपकरणों का ज्ञान एवं प्रयोगविधि जैसे– थर्मल, डायथर्मी, लेजर, माईक्रोव, अल्ट्रासिज़न, कायोटेक्निक विधि। अग्निकर्म का प्रभाव– त्वचा, मांस, नाड़ी (नर्वस), चयापचय, रक्तसंवहन, व संक्रमित स्थान में।
    3. रक्तमोक्षण – i. प्रकार, विधि, प्रस्तावना एवं महत्व।
    ii. रक्तमोक्षण के योग्य–अयोग्य, चिकित्सकीय उपयोगिता, प्रकार, विधि शस्त्रकृत रक्तमोक्षण– शिरा व्यधन, प्रच्छान। अशस्त्रकृत– श्रृंग, अल्पाषु, जलौका, घटी यंत्र। जलौका –निरूक्ति पर्याय, भेद, संग्रहण, जलौकाचारण विधि – पूर्व कर्म, प्रधान कर्म, पश्चात् कर्म। जलौका विज्ञान– अकारिकी, शरीर रचना, शरीर किया, जैव रासायनिक प्रभाव एवं लार में उपस्थित विभिन्न संघटक तत्व। रक्त – महत्व, उत्पत्ति, पंचभौतिकत्व, रक्तस्थान, गुण, प्राकृत कर्म, रक्तसार, पुरूष के लक्षण, शुद्ध एण्ड दुष्ट रक्त लक्षण, रक्त प्रदोषज व्याधियाँ।

क्रमशः

(11) व्याख्याता, शालाक्य हेतुः-

01. वृहतत्रयी, लघुत्रयी, योगरत्नाकर चक्रदत्त, भेल संहिता, हारीत संहिता एवं काश्यप संहिता में उपलब्ध नेत्ररोग विज्ञान साहित्य।
02. उपरोक्त ग्रंथो में नेत्र रोग विज्ञान का विशेष / महत्वपूर्ण विश्लेषण। सुश्रुत संहिता एवं वाग्भट्ट संहिता में पूयालस एवं वातहत वात। इन उपरोक्त साहित्यिक उदाहरणों में नेत्ररोग से सम्बंधित सूक्ष्म विश्लेषण।
03. नेत्र रोग विज्ञान के विकास में विभिन्न साहित्य, आचार्य एवं टीकाकारों का विशिष्ट योगदान।
04. प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य में नेत्ररोग से संबंधित व्याधियों का विशिष्ट विश्लेषण।
05. वैदिक काल में नेत्र रोग विज्ञान का कालानुक्रमिक विकास क्रम।
06. नवीनतम आप्थेल्मोलॉजी (OPHTHALMOLOGY) का विकास क्रम।
07. नेत्र रोग की संख्या एवं वर्गीकरण।
08. आयुर्वेद संहिता ग्रंथों में उपलब्ध नेत्र रोग– पक्ष्म, वर्त्म, संधि, शुक्ल, कृष्ण, दृष्टि, सर्वगत एवं बाह्य रोगी का निदान, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, लक्षण, उपद्रव, साध्यता, असाध्यता का वर्णात्मक अध्ययन। उपरोक्त रोगें का औषध एवं शल्य चिकित्सा व्यवस्था चिकित्सा में अष्टविध, त्रिविध कर्म एवं अनुशस्त्र द्वारा चिकित्सा में विशिष्ट दक्षता एवं विकास।
09. नेत्र क्रिया कल्प विधि सेक, आष्च्योतन, विडालक, पिण्डी तर्पण एवं पूटपाक विधि। क्रियाकल्प से संबंधित औषध कल्पना एवं उनके मानक शल्यक्रिया।
10. नयनभिघात प्रबंधन एवं शेकथाम के उपाय।
11. सुरक्षात्मक एवं सामाजिक नेत्र रोगों का ज्ञान। साथ ही राष्ट्रीय संधता निवारण कार्यक्रम एवं उसमें आयुर्वेद का महत्व।
12. सहज एवं नियोप्लास्टिक (NEOPLASTIC) नेत्र रोगों का आयुर्वेदिक सिद्धांत।
13. नेत्र रोग में उपयोग होने वाले विभिन्न नैदानिक विधि उपकरण एवं चिकित्सीय उपायों का अध्ययन एवं अनुप्रयोग।
14. अपवर्तक त्रुटि समंजन क्षमता विकार का विस्तृत अध्ययन एवं उनका प्रबंधन।
15. आई ऑर्बिट, लेक्राइमल, आपरेटस, लिड्स, कन्जंटाइवा, कार्निया, स्क्लेरा, युवियल ट्रेक्ट, लेन्स विट्रियस, रेटिना, ऑप्टिक नर्व, विजुअल पाथवे का वर्गीकरण, निदान, सम्प्राप्ति, चिन्ह एवं लक्षण, सापेक्ष निदान का साध्यासाध्यता एवं उपद्रव का विस्तृत ज्ञान तथा उनके औषध एवं शल्य चिकित्सा का विस्तृत ज्ञान।
16. नयनाभिघात आत्यायिक चिकित्सा एवं व्यवस्था।
17. आक्युलर मोटिलिटि डिसाडर्स और इसकी मेडिकल एवं सर्जिकल मैनेजमेंट।
18. नेत्र रोग को प्रभावित करने वाले न्यूरोलॉजिकल एवं सिस्टेमिक डिसाडर्स का अध्ययन एवं चिकित्सा।
19. नेत्र चिकित्सा में उपयोगी चिकित्सीय प्रक्रियाओं एवं औषध निर्माण, विधि का नवीनतम ज्ञान।
20. नेत्र रोगों में उपयोग होने वाले नवीन नैदानिक तकनीक नेत्र रोगों का चिकित्सकीय एवं शल्य प्रबंधन की तकनीक।
21. नेत्र रोगों की नवीन तकनीक एवं चिकित्सा।
22. चक्षुष्य द्रव्यों में हुए नीवनतम अनुसंधान का विस्तृत अध्ययन।
23. आयुर्वेदिक साहित्यों में वर्णित शल्य चिकित्सा की तुलना में आधुनिक शल्य चिकित्सा विधियों का तुलनात्मक एवं सूक्ष्म अध्ययन।
24. वृहतत्रयी, लघुत्रयी, काश्यप संहिता, योग रत्नाकर, चक्रदत्त, भेल संहिता, हारीत संहिता, एवं अन्य ग्रंथों में उपलब्ध शालाक्य तंत्र का विस्तृत अध्ययन।
25. कर्ण, नासा, गला एवं शिरोरोगी का परीक्षण।
26. कर्ण, नासा एवं शिरोरोग की संख्या, संप्राप्ति, निदान, पूर्वरूप वर्गीकरण का विस्तृत अध्ययन।
27. आयुर्वेदिक संहिताओं में उपलब्ध नासा रोगों की संख्या, निदान, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, रूप, उपद्रव, उपशय, अनुपशय साध्यता, असाध्यता तथा चिकित्सा का वर्णात्मक वर्णन।
28. आयुर्वेदिक संहिताओं में उपलब्ध कंठ रोगों की संख्या, निदान, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, रूप, उपद्रव, उपशय, अनुपशय साध्यता, असाध्यता तथा चिकित्सा का वर्णात्मक वर्णन।
29. शिर एंव कपाल रोगों की संख्या, निदान, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, रूप, उपद्रव, उपशय, अनुपशय साध्यता, असाध्यता तथा चिकित्सा का वर्णात्मक वर्णन।
30. कान, नाक, गला तथा शिरों रोगों के निदान में प्रयुक्त विभिन्न यंत्र तथा नवीन उपकरणों का वर्णात्मक ज्ञान, प्रायोगिक अनुप्रयोग।
31. कान, नाक, गला तथा शिरों रोगों की इटियोलॉजी, पैथोजिनेसिस, क्लीनिकल फीचर्स, डिफरेन्सियल डाइग्नोसिस, के साथ उनकी कम्प्लीकेशन्स का डिस्किप्टीव नॉलेज।
32. उपरोक्त वर्णित विकारों की चिकित्सा का विस्तृत ज्ञान। (कन्जरवेटिव एण्ड सर्जिकल)
33. इमेजिंग इन ई एन टी एण्ड हेड डिसॉडर्स, डिटेल्ड नॉलेज ऑफ लेजर्स रेडियोथेरेपी, कीमोथेरेपी एवं अदर रिसेन्टली एडवान्सड ट्रिटमेन्ट मोडेलिटिस लाइक स्पीच थेरेपी, कॉक्लीयर इम्प्लान्ट, रिहेबिलिटेशन ऑफ द डीफ एण्ड म्यूट, ई.टी.सी. रिलेटेड टू ईयर नोज–थ्रोट– एण्ड हेड डिसार्डर्स।
34. कर्ण नासा एवं शिरोरोगों की आत्यायिक चिकित्सा व्यवस्था।
35. नॉलेज ऑफ अग्रोपहरणीय एण्ड दी त्रिविध कर्म आई.ई. प्री. आपरेटिव, ऑपरेटिव एण्ड पोस्ट ऑपरेटिव मिजर्स नॉलेज ऑफ एट टाईप्स ऑफ सर्जिकल प्रोसिजर्स (अष्टविध शस्त्र कर्म) एण्ड पोस्ट ऑपरेटिव केयर ऑफ द पेशेन्ट विथ रेस्पेक्ट टू इ एन.टी. डिसॉर्डर्स (व्रणीतोपासनीय)।
36. कर्ण रोगों में प्रयुक्त नवीनतम शल्य चिकित्सा विधि जैसे– कन्सट्रक्टिव सर्जरी, सर्जरी ऑफ एक्सटर्नल एण्ड मिडल इयर, एक्सीजन ऑफ प्री ऑरिकूलर साइनस टिम्पैनोप्लास्टी, मैस्टॉइडेक्टोमी, आदि का प्रयोगिक ज्ञान
37. नोज– सेप्टोराइनोप्लास्टी, एस.एम.आर. फंशनल एण्डोस्कोपिक साइनस सर्जरी, काल्डवेल ल्यूक सर्जरी, एन्ट्रल पंकचर, एन्ट्रल लेवेल, टर्बिनेक्टोमी, पॉलीपेक्टोमी, वेरियस सर्जिकल प्रोसिजर्स डन फार मेलिग्नेन्सी ऑफ नोज एण्ड पैरानेजल साइनसेस, यंगस सर्जरी इ.टी.सी।
38. थ्रोट– एडिनोइटेक्टोमी, टॉन्सिलेक्टोमी, सर्जीकल प्रोसिजर्स फार फैरिन्जियल एब्सेसेस, कॉटेराईजेशन ऑफ फैरिन्जियल वाल ग्रेनूलेशन्स, ट्रेकियोस्टोमी, वोकल कार्ड सर्जरी, सर्जरी ऑफ वोकल कार्ड पैरालाईसिस, मैनेजमेन्ट ऑफ लैरिन्जियल ट्रोमा, लैरिन्जिक्टोमी इ.टी.सी.।
39. क्षार, अग्नि, शस्त्र एवं रक्तावसेचन जैसे चिकित्सा प्रक्रियाओं का समान्य ज्ञान, कर्ण, नासा, गला, सिरो रोग में इनका प्रयोगिक अनुप्रयोग। कान, नाक, गला और सिरो रोग में रक्त संधान हेतु प्रयुक्त चतुर्विध उपक्रम हिमोस्टेटिक मैनेजमेन्ट इन इ एन टी।
40. आयुर्वेदिक एवं आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अनुसार, कर्ण, नासा, एवं सिरो–रोग के बाहय शल्य (Foreign Body) का निर्हरण विधि।
41. कर्ण– सन्धान, नासा–सन्धान– आयुर्वेदिय सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक अनुप्रयोग।
42. शालाक्य शब्द की निरूक्ति, परिभाषा, महत्व, पर्याय। मुख एवं दंत रोगों का इतिहास एवं इनसे संबंधित विज्ञान का विकास। मुख एवं दंत शब्द की निरूक्ति, तुख एवं दंत का शारीर–रचना, आयुर्वेदिक एवं आधुनिक विज्ञान अनुसार, साथ ही लार ग्रंथी का ज्ञान।
43. ओरल केविटी एवं गस्टेटरी फिजियोलॉजी का विस्तृत अध्ययन।
44. ओरल हाइजिंन, ओरल हाइजिन का सामाजिक दृष्टिकोण, ओरल केविटी रोगों से बचाव हेतु उपाय, ओरल कैविटी रोगों के निदान, सम्प्राप्ति, पूर्वरूप, रूप तथा चिकित्सा प्रबंधन।
45. अग्रोपहरणीय, पूर्व, प्रधान एवं पश्चात् कर्म का ज्ञान, दंत एवं मूख रोग के संबंध में अष्टविध शस्त्रकर्म का अध्ययन।
46. दंत व्याधियों के लिए उपयोगी तथा चिकित्सकीय प्रबंधन का प्रायोगिक अध्ययन जैसे– कवल, गण्डूश, धूम्रपान, नस्य, मूर्धतैल मूखालेप एवं प्रतिसारण तथा उनके प्रकार, उपयोग निर्देश निषेध, प्रकीया, सम्यक लक्षण अतियोग, हीनयोग, एवं उसका प्रबंधन।
47. मुख एवं दंत रोगों में शोधन एवं शमन चिकित्सा का महत्व एवं मुख और दंत रोग में उपयोगी सामान्य नुस्खों का ज्ञान।
48. मुख एवं दंत रोगों में प्रयुक्त अनुशस्त्र कर्म का विस्तृत ज्ञान, विभिन्न चिकित्सा प्रकारों (भैषज्य, शस्त्र, क्षार, अग्नि) का सामान्य ज्ञान एवं उनका प्रयोगिक ज्ञान।
49. आयुर्वेदीय एवं आधुनिक विज्ञान में उपलब्ध दंत एवं मुख रोगों का विश्लेशणात्मक एवं विशिष्ट अध्ययन।
50. एक्जामिनेशन ऑफ ओरल केविटि पेरिओडोन्शिय एण्ड टीथ, टीथ इरप्शन एण्ड इट्स सिस्टेमिक डिस्टर्बेन्स इन ए चाईल्ड, क्लासिफिकेशन नंबर ऑफ टीथ एलॉन्स विथ डिटेल नॉलेज ऑफ एबनार्मल टूथ इरप्सन डेंटल डिसऑर्डर इन पिडियाट्रिक एजग्रुप, देयर प्रीवेन्शन एण्ड ट्रीटमेन्ट।
51. दन्त रोगों की संख्या, निदान, संप्राप्ति, पूर्वरूप, रूप, उपद्रव, एवं उनके प्रायोगिक अनुप्रयोगों का विस्तृत वर्णन आयुर्वेद अनुसार।
52. आयुर्वेद ग्रंथानुसार इटियोलॉजी पैथोजिनेसिस संबंधित लक्षण, नैदानिक लक्षण, असाध्यता एवं दंतमूल रोग से संबंधित पूर्वानुमान एवं आयुर्वेद के प्रायोगिक

क्रमशः

तथ्यों का प्रमाणिक विस्तृत वर्ण एवं दन्तमूल रोग के अनुकूलित उपचार का वर्णात्मक विवरण।

53. ओष्ठ, जीव्हा, एवं तालु संबंधित रोगों तथा इटियोलॉजी, से संबंधित विस्तृत तथ्य एवं उपचार उनके लक्षण तथा असाध्यता के चिकित्सकीय वर्णन तथा उपचार, रोग के पूर्वानुमानित लक्षणों का प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक विवरण युक्त।
54. संपूर्ण मुख से संबंधित रोगों का आयुर्वेदिक तथ्योनुसार विस्तृत वर्णन एवं इटियोलॉजी से संबंधित अध्ययन उपचार लक्षण, सामान्य असाध्यता, पूर्वानुमान एवं मुखरोग से संबंधित प्रायोगिक प्रबंधन का वर्णन।
55. दन्ताभिघात एवं मुख अभिघात से संबंधित ज्ञान, लक्षण एवं उचार का अध्ययन एवं प्रमाण।
56. इटियोलॉजी पैथोजिनेसिस की नैदानिक लक्षण, विवरण एवं असाध्यता का ज्ञान तथा विविध मुख तथा दंत संबंधी रोगों की व्याख्या आधुनिक साहित्य के ग्रंथों में संपूर्ण चिकित्सीय एवं उपचारात्मक ज्ञान की उपलब्धता है।
57. मुख एवं दंत संबंधित रोगों के उपचार, निदान, लक्षण का संपूर्ण विवरण एवं नैदानिक वर्णन एवं शल्य विधि वर्णन एवं महत्व ज्ञान।
58. आधुनिक औषधियों के आधारभूत तथ्य संवेदना हरण विधि की नैदानिक वर्णन एवं शल्य विधि वर्णन एवं महत्व ज्ञान।
59. नवीनतम एवं संशोधितकृत आधुनिक तंत्रों के अनुप्रयोग एवं परीक्षण नैदानिक एवं प्रबंधन का अध्ययन। विवरणात्मक ज्ञान मुख एवं दंत रोग के संबंध में।
60. विभिन्न दंत रोगों जैसे दंत निर्हरण, आर.सी.टी., डेन्टल फिलिंग, फिलिंग मटेरियल, टूथफिक्सेशन एण्ड टूथ इम्प्लान्ट आदि निर्दिष्ट शल्य क्रियाएं का नवीनतम ज्ञान, ओरल पेरियोडोन्टल एवं दंत रोगों का सार्वदैहिक प्रभाव।
61. दंत आहरण में जालन्धर बंध का महत्व एवं अनुप्रयोग।
62. बिना संज्ञाहरण के विशिष्ट उपदंत कल्पना।
63. दंत एवं मुखरोगों में क्रियाकल्प के आधुनिक अनुसंधान कार्य एवं चिकित्सीय अनुप्रयोग दत एवं मुख गुहा गत रोगों में वर्तमान उपलब्ध चिकित्सकीय एवं अनुसंधान क्रियाओं का विवरणात्मक अध्ययन।
64. दंत एवं मुख रोगों के निदान के लिए प्रयुक्त आधुनिक नैदानिक उपकरण, मुखगुहा गत अर्बुद (Benign & Malignant) का प्रबंधन एवं उन अवस्थाओं में आयुर्वेद का महत्व।
65. मुख एवं दंत रोगों के चिकित्सा में प्रयुक्त उपयोगी क्रियाएं एवं उनसे संबंधित मेडिकोलीगल क्रियाओं का अध्ययन।

(12) व्याख्याता, पंचकर्म तंत्र हेतुः-

1. अष्टांग आयुर्वेद में पंचकर्म एवं शोधन का महत्व।
2. आम एवं शोधन, शोधन के लाभ, शोधन के समिक्ष्य भाव।
3. स्नेहन से पूर्व पाचन का महत्व, पाचन की विधि, द्रव्य, पाचन की अवधि एवं मात्रा, पाचन के सम्यक लक्षण।
4. स्नेह एवं स्नेहन की व्युत्पत्ति और परिभाषा, स्नेहन के बारे में सामान्य विचार।
5. स्नेह, स्नेह–योनी के वर्गीकरण, चार प्रकार के मुख्य स्नेह–घृत, तैल, वसा एवं मज्जा की विस्तृत जानकारी, उनकी विशेषताओं, महत्व और उपयोगिता, उत्तम स्नेह के विभिन्न पहलुओं।
6. स्नेहन द्रव्य की गुण और उनकी व्याख्या, स्नेहन का प्रभाव, स्नेहन कल्पना, विभिन्न प्रकार के स्नेह पाक, तथा उनकी उपयोगिता, स्नेहन की योग्यायोग्यता।
7. स्नेहन का वर्गीकरण, बाह्य एवं अभ्यांतर स्नेहन, बाह्य स्नेहन एवं बहिः परिमार्जन, बाह्य स्नेहन की उपयोगिता व महत्व, बाह्य स्नेहन का वर्गीकरण।
8. निम्न के विधि, योग्यायोग्यता एवं विशिष्ट उपयोगः– अभ्यंग, मर्दन, उन्मर्दन, पादघात, संवहन, उद्वर्तन/ उदसादन, उद्घर्षण, अवगाह, परिषेप, लेप, प्रलेप, उपदेह, गण्डूष, कवल, कर्ण एवं नासा पूर्ण, अक्षि तर्पण, मूर्धनि तैल, शिरो अभ्यंग, शिरोधारा, शिरो–पिचु और शिरो वस्ति, शिरो लेप (तालपोतिच्छिल), तेलम एवं तकधारा आदि।
9. वसा के पाचन और चयापचय का ज्ञान, अभ्यंतर और बाह्य स्नेहन की कार्मुकता।
10. विभिन्न पाश्चात्य मालिश तकनीक का ज्ञान।
11. अभ्यांतर स्नेहनः बृहणार्थ, शमनार्थ एवं संशोधनार्थ, परिभाषा, विधि और बृहणार्थ और शमनार्थ स्नेहन की उपयोगिता। शमनार्थ एवं शोधनार्थ स्नेहन के बीच अंतर।
12. शोधनार्थ स्नेहन के तरीके, शोधानार्थ स्नेहनः अच्छपान और विचारणा, सद्यः स्नेहन के विभिन्न तरीकों और उपयोगिता, अवपीडक स्नेह।
13. स्नेह का मात्रा : हृसीयसी, ह्रस्व, मध्यम एवं उत्तम मात्रा उनके योग्य के साथ घृत, तेल, वसा एवं मज्जा आदि स्नेह के अनुपान।
14. विशिष्ट परिस्थितियों में स्नेहन करने से पहले रूक्षण की आवश्यकता और विधि, सम्यक रूक्षण।
15. शोधनांग स्नेहन विधि और मात्रा निर्धारण के तरीकें। स्नेहन के समय आहार का पथ्य, स्नेह जीर्यमाण, जीर्ण एवं अजीर्ण लक्षण का अवलोकन, स्नेह का सम्यक, अस्निग्ध और अति योग लक्षण, स्नेह व्यापद तथा उपचार, परिहार्य विषय और परिहार काल।
16. स्वेदन की व्युत्पत्ति और परिभाषा, स्वेदन के बारे में सामान्य विचार।
17. स्वेदन एण्ड स्वेदोपग द्रव्यों के गुण, स्वेदन की योग्यायोग्यता।
18. स्वेद और स्वेदन के विभिन्न वर्गीकरण, सुश्रुत के चार प्रकार के स्वेदों की उनकी उपयोगिता के साथ विस्तृत ज्ञान। हीन, मृदु, मध्य और महान स्वेद उनकी उपयोगिता के साथ एकांग और सर्वांग स्वेदन। 13 प्रकार के साग्नि ओर 10 प्रकार के निराग्नि स्वेद की उपयोगिता और विधि, शोधनांग एवं संशोधनीय स्वेद।
19. स्वेदन प्रक्रिया के दौरान महत्वपूर्ण अंगों (वर्ज्य अंग) की रक्षा करने के तरीके।
20. नीचे दिये गए स्वेदन प्रकियाओं की उपयोगिता के बारे में विस्तृत ज्ञान :–पत्र पिण्ड स्वेद, षष्टिक शाली पिण्ड स्वेद, चूर्ण पिण्ड स्वेद, जंबीर पिण्ड स्वेद, धान्य पिण्ड स्वेद, कुक्कुटाण्ड स्वेद, अन्न लेप, बालुका स्वेद, इष्टिका स्वेद, नाड़ी स्वेद, वाष्प स्वेद, क्षीर वाष्प स्वेद, अवगाह स्वेद, परिषेक स्वेद, पिजिच्छिल, धान्यमल धारा, कषाय धारा, क्षीरधारा एवं उपनाह स्वेद।
21. विभिन्न रोगों में अवस्थानुसारी स्वेदन, सम्यक, अयोग, और अतियोग लक्षण, स्वेद व्यापद और उनके प्रतिकार, स्वेदन के दौरान ओर उसके बाद की आहार कल्पना।
22. स्वेदन की कार्मुकता, सौना बाथ, स्टीम बाथ, इन्फारेड इत्यादि जैसे वर्तमान स्वेदन की रूपरेखाएं।
23. कटीबस्ति, जानु बस्ति और ग्रीवा बस्ति के साथ स्वेदन।
24. स्नेहन और स्वेदन का अध्ययन जो कि संहिता ग्रंथो में विभिन्न टिप्पणियों के साथ संबंधित है–वमन की व्युत्पत्ति, परिभाषा और सामान्य विचार, वामन और वमनोपग द्रव्यों के गुण, महत्वपूर्ण वामक द्रव्यों और उनकी कल्पना (वमन योग) की ज्ञान और उपयोगिता, अवस्थानुसार वमन और इसकी उपयोगिता वमन की योग्यता और कारणों के साथ अयोग्यता का वर्णन, स्नेहन के पहले पाचन, स्नेहन के साथ रोगी की तैयारी की विस्तृत जानकारी और विधि। वमन के पूर्वरूप के रूप में अभ्यंग एवं स्वेदन।
25. अंतर दिन (विश्राम काल) का आहार और प्रबंधन, उचित वमन के लिए कफ में वृद्धि की आवश्यकता, कफ वर्धक आहार।
26. वमन के सुबह रोगी का प्रबंधन।
27. वमन से पहले खाद्य प्रदार्थो का सेवन।
28. वमन एवं वमनोपग औषध द्रव्यों की प्रस्तुति, काल, अनुपान, सहपान, मात्रा और इसकी विधि।
29. वमन कर्म की विधि, स्वतः वमन वेग के लिए प्रतिक्षा, अवधि और उसकी अनुपस्थिति में अन्य उपाय।
30. वमन की शुरूआत से पहले जैसे कपाल प्रदेश पर पसीना, रोमहर्ष, उदर गौरव और जी मिचलाना आदि लक्षणों का निरीक्षण।
31. वमन के दौरान रोगी की निगरानी और सहायता।
32. वमन के वेग एवं उपवेग की गिनती, उल्टी की बातों के निरीक्षण और संरक्षण और उसके वजन।
33. वमन के सम्यक, अयोग और अतियोग।
34. लैंगिकी, वैगिकी, मानिकी एवं आन्तिकी शुद्धि।
35. तदनुसार हीन मध्य और प्रवर शुद्धि और उसके अनुसार संसर्जन कर्म।
36. संसर्जन कर्म के तरीकों का विस्तृत ज्ञान और इसके महत्व।
37. वमन के बाद कवल एवं धूमपान।
38. आयुर्वेद और आधुनिक औषधियों के साथ अयोग, अतियोग और वमन व्यापत के प्रतिकार।
39. परिहार्य, विषय और वमन काल।
40. वमन के कार्य शीलता के साथ इसकी कार्मुक्ता।
41. आहार के साथ विरेचन के लिए आभ्यंतर स्नेहन।
42. उचित विरेचन के लिए 03 अंतराल के दिनों में आहार और कम कफ के महत्व।
43. विरेचन के पूर्वकर्म के रूप में अभ्यंग एवं स्वेदन।
44. विरेचन की सुबह–सुबह मरीजों का प्रबंधन।
45. खाली पेट में विरेचन किया जाना चाहिए।

क्रमशः

46. विरेचन एवं विरेचनोपग औषध द्रव्यों की प्रस्तुति, काल, अनुपान, सहपान, मात्रा और इसकी विधि।
47. विरेचन कर्म की विधि।
48. विरेचन के समय निरीक्षण, वेग एवं उपवेग के दौरान इनकी गणना, मल और इसके वजन के निरीक्षण और संरक्षण।
49. विरेचन के सम्यक, अयोग और अतियोग।
50. लैंगिकी, वैगिकी, मानिकी एवं आंतिकी शुद्धि और विरेचन।
51. तदानुसार हीन, मध्य एवं प्रवर शुद्धि और उसके अनुसार संसर्जन कर्म।
52. संसर्जन कर्म के तरीकों का विस्तृत ज्ञान और उसके महत्व, तर्पण कर्म और इसके महत्व।
53. आयुर्वेद और आधुनिक औषधियों के साथ अयोग, अतियोग और विरेचन व्यापद के प्रतिकार।
54. परिहार्य विषय और विरेचन काल।
55. विरेचन के कार्य शीलता के साथ इसकी कार्मुकता।
56. वमन एवं विरेचन से संबंधित जठरांत्र प्रणाली के शारीरिक रचना और क्रिया।
57. टिप्पणियों के साथ संहिता ग्रंथो में वमन और विरेचन से संबंधित अंश का अध्ययन।
58. वमन एवं विरेचन के प्रभाव पर शोध की अग्रिम प्रगति।
59. वर्तमान में वमन और विरेचन के लिए अनुसंधान के अवसर।
60. स्वास्थ्य की रोकथाम और बीमारियों के उपचार को बढ़ावा देने में वमन और विरेचन का महत्व।
61. निरूहवस्ति की व्युत्पत्ति, परिभाषा और सामान्य विचार, कायचिकित्सा और आयुर्वेद की दूसरी शाखाएं में बस्ति के महत्व। बस्ति का वर्गीकरण, बस्ति में उपयोगी औषधि। बस्ति के योग्य और कारणों के साथ अयोग्य का वर्णन, रोगों के विभिन्न चरणों में इसकी भूमिका। बस्ति के विवरण, बस्ति नेत्र और बस्ति पुटक और उनके दोषों का वर्णन, संशोधित बस्ति यंत्र, उनकी योग्यताएं और दोष। निरूह और अनुवासन बस्ति की मात्रा का अनुसूची। निरूहबस्ति की व्युत्पत्ति, पर्याय, परिभाषा और वर्गीकरण एवं उपवर्गीकरण। बस्ति ओर प्रत्येक प्रकार के निरूह बस्ति का विस्तृत ज्ञान, इसके साथ योग्य अयोग्य और लाभों का वर्णन, विभिन्न प्रकार के निरूह बस्ति, उनके प्रस्तुति प्रणाली, बस्ति द्रव्यों के समिश्रण विधि। निरूहबस्ति के साथ विरेचन, शोधन, अनुवासन बस्ति का संबंध, निरूहबस्ति के लिए पूर्वकर्म, निरूहबस्ति के पूर्व समय और बाद में पथ्य विचार, विभिन्न निरूह बस्ति के प्रयोग के सभी पहलुओं। निरूहबस्ति के समय और बाद के निरीक्षण, प्रत्यागमन, सम्यक योग, अयोग एवं अतियोग लक्षण, आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के अनुसार निरूहबस्ति के विभिन्न व्यापद् और उनके प्रतिहार निरूहबस्ति के समय और बाद में प्रबंधन, परिहार्य विषय एवं परिहार काल।
62. अनुवासन बस्ति की व्युत्पत्ति, पर्याय, परिभाषा और वर्गीकरण, प्रत्येक प्रकार के अनुवासन बस्ति की विस्तृत ज्ञान के साथ योग्यायोग्यता और लाभ, अनुवासन बस्ति के उपयोगी विभिन्न प्रकार के घृत एवं तैल, वसा और मज्जा के साथ अनुवासन बस्ति इसके साथ उनकी गुण और दोष। अनुवासन बस्ति के साथ विरेचन, शोधन, निरूह बस्ति, स्नेहन का संबंध। अनुवासन बस्ति के लिए पूर्व कर्म अनुवासन बस्ति से पूर्व, समय और बाद में पथ्य विचार। विभिन्न अनुवासन बस्ति के प्रयोग तथा काल के सभी पहलुओं का विचार। अनुवासन बस्ति के समय और बाद की निरीक्षण, प्रत्यागमन, सम्यक योग, अयोग और अतियोग लक्षण अनुवासन बस्ति के विभिन्न व्यापद् और उनके प्रतिकार। अनुवासन बस्ति के समय और बाद में प्रबंधन, अनुवासन बस्ति के परिहार्य विषय, पथ्य और परिहार काल, विभिन्न संयुक्त बस्ति अनुसूचीयां जैसे कि कर्म, काल, योग वस्ति आदि, मात्रा वस्ति की विस्तृत जानकारी। विभिन्न बस्ति योगों की विस्तृत जानकारी जैसे कि पिच्छा बस्ति, क्षीर बस्ति, यापना बस्ति, माधुतैलिक बस्ति, एरण्ड मूलादि निरूह बस्ति, पंचप्रासृत्रिक बस्ति, क्षार बस्ति, वैतरण बस्ति, कृमिघ्न बस्ति, लेखन बस्ति, वृथ्थबस्ति, मंजिष्ठादि निरूहबस्ति, दशमूल बस्ति, अर्धमात्रिका बस्ति, सर्वरोगहर निरूहबस्ति, वृहण बस्ति, वातघ्न बस्ति, पित्तघ्न बस्ति और कफघ्न बस्ति आदि, और इनकी व्यावहारिक उपयोगिता।
63. उत्तर बस्ति की परिभाषा और वर्गीकरण, इसके नेत्र और पुटक बस्ति, उत्तर बस्ति, स्नेह और कषाय बस्ति की मात्रा, विभिन्न रोगों में विभिन्न उत्तर बस्ति कल्पना।
64. नस्य कर्म की व्युत्पत्ति, पर्याय, महत्व और परिभाषा, विभिन्न संहिता ग्रंथो के अनुसार नस्य द्रव्य, नस्य की वर्गीकरण और उपवर्गीकरण तथा इसके साथ प्रत्येक प्रकार के विस्तृत जानकारी, कारणों के साथ प्रत्येक प्रकार नस्य के योग्यायोग्यता, नस्य के लिए उपयोगी औषधि, मात्रा और उनकी प्रस्तुति प्रणाली, नस्य काल, नस्य के पहले और बाद में पथ्य, विभिन्न नस्यों की कालावधि, प्रत्येक प्रकार की नस्य के पूर्वकर्म, नस्य के समय और बाद में चिकित्सा के साथ प्रत्येक प्रकार के नस्य के प्रयोग की विस्तृत जानकारी, साधारण नस्य कल्पनाओं का विस्तृत जानकारी, जैसे षड्बिन्दु तैल, अणुतैल, क्षीरबला तैल, कार्पास शट्यादि तैल, ब्राम्ही घृत, प्रत्येक प्रकार नस्य का सम्यक योग, अयोग एवं अतियोग, इसका व्यापद् और उनका प्रतिहार, पाश्चात कर्म, नस्य के बाद धूमपान, कवल की भूमिका। नस्य कर्म के पूर्व, नस्य के समय और बाद में आहार और पथ्य, परिहार्य विषय, परिहार्य काल।
65. रक्तमोक्षण :– प्रत्येक प्रकार के रक्तमोक्षण की परिभाषा, महत्व, वर्गीकरण और विस्तृत जानकारी तथा उनके प्रयोग के तरीके, रक्तमोक्षण की सामान्य सिद्धांत और योग्यायोग्यता, जलौका अवचारण का विस्तृत जानकारी, योग्यायोग्यता, जलौका के विभिन्न प्रकार तथा इनके लाभकारी और हानिकारक प्रभाव, पूर्वकर्म और जलौकावचारण के पूर्व समय और बाद में पत्य, जलौकावचारण के समय और बाद में चिकित्सा।

निम्नलिखित रोगों के विभिन्न चरणों में पंचकर्म की भूमिका–ज्वर, रक्तपित्त, मधुमेह, कुष्ठ, श्वांस, उन्माद, अपस्मार, शोथ, प्लीहोदर, यकृत दाल्योदर, जलोदर, अर्श, ग्रहणी, कास, तमक श्वास, वातरक्त, वातव्याधि, अम्लपित्त, परिणामशूल, अर्धावभेदक, अनंतवात, आमवात, शीतपित्त, श्लीपद, मूत्रकृच्छ, मूत्रअश्मरी, मूत्राघात, हृदरोग, पीनस, दृष्टिमांद्य, पाण्डु, कामला, स्थौल्य, कृमि, मदात्यय, मूर्च्छा, पाददारी, मुखदुषिका, खालित्य, पालिव्य, निम्नलिखित विकारों में विभिन्न पंचकर्म प्रकियाओं का प्रयोग–माईग्रेन, पर्किंसन डिसिज, ट्राइजेमाइनल न्यूरालजिया, बेल्स पाल्सी, सेरिब्रल पाल्सी, मस्कुलर डिस्ट्राफी, हेमिप्लेजिया, पैराप्लेजिया, लम्बर डिस्क डिसार्डर, स्पान्डाइलोसिएसिस, एनकाइलोजिंग स्पान्डाइलोसिस, कार्पल ट्यूनल सिन्ड्रोम, कैल्केनियल स्प्रू, प्लांटर फेसाइटिस, जी.बी. सिण्ड्रोम, अल्जाईमर डिसिज, इरीटेबल बावेल सिन्ड्रोम, अल्सरेटिव कोलाईटिस, सोरिएसिस, हाइपोचायराडिज्म, हाइपरथाइराइडिज्म, हाइपरटेंशन, एलर्जिक राइनाइटिस, इकजिमा, डाइबिटिक मेलाइटस, क्रोनिक ऑब्सट्रेटिक्स, पल्मोनरी डिसीज, इनसोमनिया, रूमेटाईड ऑरथ्राइटिस, गाउट, ऑस्टियोआरथ्राइटिस, मल्टीपल स्केलेरोसिस, एस.एल.ई., मेल एण्ड फिमेल इन्फर्टिलिटी, सिरोसिस ऑफ लिवर, जॉन्डिस, जनरल एनजाइटी डिसार्डर।

□□□□□

Part-2 :: RELATED SUBJECTS ::

(01) Lecturer, Samhita Sidhant:-

1. Learning and Teaching methodology available in Samhita- Tantrayukti, Tantraguna, Tantradosha, Tachchilya, Vadamarga, Kalpana, Arthashraya, Trividha Gyanopaya, teaching of Pada, Paada, Shloka, Vakya, Vakyartha, meaning and scope of different Sthana and Chatushka of Brihatrayee.
2. Manuscriptology - Collection, conservation, cataloguing, Critical editing through collation, receion (A critical revision of a text incorporating the most plausible elements found in varying sources), emendation (changes for improvement) and textual criticism (critical analysis) of manuscripts. Publication of edited manuscripts.
3. Concept of Bija chatustaya (Purush, Vyadhi, Kriyakaal, Aushadha according to Sushrut Samhita).
4. Introduction and Application of Nyaya (Maxims) - Like Shilaputrak Nyaya, Kapinjaladhikaran Nyaya, Ghunakshara Nyaya, Gobalivarda Nyaya, Naprishtah Guravo Vadanti Nyaya, Shringagrahika Nyaya, Chhatrino Gacchhanti Nyaya, Shatapatrabhedana Nyaya, Suchikatah Nyaya.
5. Importance and utility of Samhita in present era.
6. Importance of ethics and principles of ideal living as mentioned in Samhita in the present era in relation to life style disorders.
7. Interpretation and co-relation of basic principles with contemporary sciences.
8. Definition of Siddhanta, types and applied examples in Ayurveda.
9. Ayu and its components as described in Samhita.
10. Principles of Karana-Karyavada, its utility in advancement of research in Ayurveda.
11. Theory of Evolution of Universe (Srishti Utpatti), its process according to Ayurveda and Darshana.
12. Importance and utility of Triskandha (Hetu, Linga, Aushadh) and their need in teaching, research and clinical practice.
13. Applied aspects of various fundamental principles: Tridosha, Triguna, Purusha and Atmanirupana, Shatpadartha, Ahara-Vihara. Scope and importance of Pariksha (Pramana).
14. Importance of knowledge of Sharir Prakriti and Manas Prakriti.
15. Comparative study of Principles of Ayurveda and Shad Darshanas.
16. Charak Samhita complete with Ayurved Dipika commentary by Chakrapani.
17. Introductory information regarding all available commentaries on Charak Samhita.
18. Sushrut Samhita Sutra sthana and Sharir- sthana. with Nibandha Samgraha commentary by Acharya Dalhana.
19. Ashtang-Hridayam Sutra Sthanamatram with Sarvanga Sundara commentary by Arun Dutt.

क्रमशः

20. Introductory information regarding all available commentaries on Sushrut Samhita and Ashtang Hridaya. Incorporated in Charak Samhita, Sushrut Samhita, Ashtanga Hridya, shtang Samgraha.
Analysis of principles specially loka-purusha samya, Shadpadartha, Praman, Srishti Utpatti, Panchmahabhuta,Pilupaka, Pitharpaka Karana- Karyavada, Tantrayukti, Nyayas (Maxims), Atmatatva siddhant.
21. Importance of Satkaryavad, Arambhavada, Parmanuvada Swabhavoparamvada, Swabhava Vada, Yadricha Vada, Karmvada.
22. Practical applicability principles of Samkhya- Yoga, Nyaya-Vaisheshika, Vedanta and Mimansa.
23. Post independent Development of Ayurveda: Education, Research.
24. Globalisation of Ayurved.
25. Introduction of department of AYUSH, CCIM, CCRAS, RAV.
26. Tridosh Siddhant.
27. Panchabhautik Siddhant.
28. Manastatva and its Chikitsa Siddhant.
29. Naishthiki Chikitsa.
30. Practical applicability principles of Charvak, Jain & Bauddha Darshana.
31. Journals, types of Journals review of Articles.

(02) Lecturer, Rachana Sharir:-

1. Etymology of Garbhavakranti Shaarira, features of Shukra and Shonita, description of Beeja, Beejbhaga, Beejbhagavyava and Garbhotpadakabhava, Garbha Poshana Krama, Garbhavriddhikar Bhav, Masanumashiki Garbhavriddhi, Foetal circulation. Explanation of lakshana occurring in Ritumati, Sadhyah Grihita Garbha.
2. Yamal garbha, Anasthi garbha.
3. Explanation of Basic Embryology, and Systemic embryology.
4. Knowledge of basic facts in advancement in Anuvanshiki (Genetics) and Garbhajavikara (Teratology).
5. Detail etymological derivation of 'Koshtha' and Koshthanga, including detail study of structure of each Koshthanga. Male and Female genital organs.
6. Definition, detail description.
7. Etymology, Definition, description of Seven Kala with their Modern component and applied aspects.
8. Snayu, Kandara, Rajju, Sanghata, Jalaetc. and their general description.
9. Etymological derivation, definitions, synonyms, number and types of Sira, Dhamani and Srotas, anatomical differences among Sira, Dhamani and Srotas, description of Vedhya and AvedhyaSira (Puncturable and Non puncturable Veins) and clinical importance of Sira, Dhamani and Srotas including Modern Anatomical counterparts.
10. Derivation and definitions of the term Marma and their features, characteristics and number of Marma according to Sushruta Divisions of Marma on morphological basis (Rachana Bheda), Shadangatvam (Regional), Abhighataja (Prognostic) classification, Trimarma according to Charaka. Knowledge of 'Marmaabhighata', MarmaViddha, Detailed study of individual marma with their clinical and Surgical importance. Importance of Marma in Shalyatantra.
11. General introduction and description of Asthi, differences among number of Asthi.Types of Asthi. Detail study of each bone with its ossification &Applied anatomy.
12. Etymological derivation,description, features, number, types and Applied anatomy of all Sandhi (joints).
13. Etymological derivation,description, features, number, types and Applied anatomy of all Peshee (Muscles).
14. Description of Panchgyanendriya – Ayurved and Modern aspects. (Sensory organs (Eye, Ear, Nose, Tongue and Skin with their Applied anatomy).
15. Shat Chakra - Location and significance in Yoga. Description of Ida, Pingala, Sushumnanadi.
16. Anatomy of brain and spinal cord, Peripheral nervous system (explanation of Nerve Plexuses and peripheral nerves, Cranial nerves and Autonomic nervous system, Cerebrospinal fluid, Venous sinuses of Brain, Ventricular system of Brain, Blood supply of Brain, Meninges with Applied Anatomy.
17. Antah Sravi Granthi and Bahih Sravi Granthi :- Detail study of Exocrine &Endocrine glands.

(03) Lecturer, Kriya Sharir:-

1. Theory of Pancamahâbhûta.
2. Principle of Loka-Purusa Sâmya.
3. Importance of Sâmânya - Vicesa principle.
4. Different views on the composition of Purusa and the importance of Cikitsya Purusa.
5. Importance of Gurvâdi Guna in Ayurveda.
6. General description of Tridosa theory.
7. Mutual relationship between Triguna-Tridosa-Pancamahâbhûta-Indriya.
8. Mutual relationship between Rtu-Dosa-Rasa-Guna.
9. Biological rhythms of Tridosa on the basis of Day-Night-Age-Season and Food intake.
10. Role of Dosa in the formation of Prakrti of an individual.
11. Role of Dosa in maintaining health.
12. General locations (*Sthâna*), general attributes (*Guna*) and general functions (*Sâmânya Karma*). Five subdivisions of *Vâta* with their specific locations, specific properties, functions.
13. Pitta Dosa: General locations (Sthâna), general attributes (Guna) and general functions (Sâmânya Karma). Five subdivisions of Pitta with their specific locations, specific properties, and specific functions (Pâcaka, Ranjaka, Âlocaka, Bhrâjaka, Sâdhaka). Similarities and differences between Agni and Pitta.
14. Kapha Dosa: General locations (Sthâna), general attributes (Guna) and general functions (Karma) of Kapha. Five subdivisions of Kapha with their specific locations, specific properties, and specific functions (Bodhaka, Avalambaka, Kledaka, Tarpaka, Œlesaka).
15. Applied physiology of Tridosa principle. Kriyâkâla, Dosa Vrddhi-Dosa Ksaya.
16. Process of nourishment of Dhâtu. Description of various theories of Dhâtu Posana (Ksîra-Dadhi, Kedârî-Kulya, Khale Kapota etc).
17. Dhâtu: General introduction and definition of Dhâtu. Formation, Definition (Nirukti), Distribution, Attributes, quantity, classification, Pânbcabhautika composition and Functions of all seven Dhâtus in detail: Rasa, Rakta, Mâmsa, Meda, Asthi, Majjâ, Ûukra.
18. Applied physiology of Dhâtu: Manifestations of Ksaya and Vriddhi of each Dhâtu. Description of Dhâtu Pradosaja Vikâra.
19. Description of Âûraya and Âûrayî kind of relationship between Dosa and Dhâtu.
20. Description of the characteristic features of Astavidha Sâra. Description of Rasavaha, Raktavaha, Mâmsavaha, Medovaha, Asthivaha, Majjâvaha and Sukravaha Srotâmsi.
21. Definition, locations, synonyms, Formation, Distribution, Properties, Quantity, Classification and Functions of Ojas. Description of Vyâdhiksamitva. Bala Vrddhikara Bhâva. Classification of Bala. Relation between Slesmâ, Bala and Ojas.
22. Applied physiology of Ojas: Etiological factors and manifestations of Ojaksaya, Visramsa and Vyâpat. Physiological and clinical significance of Ojas.
23. General introduction and Definition of the term 13 Upadhâtu. Formation, Nourishment, Quantity, Properties, Distribution and functions of each Upadhâtu.
24. Characteristic features and methods of assessing Suddha and Dûsita Stanya, Manifestations of Vrddhi and Ksaya of Stanya.
25. Characteristic features of Ûuddha and Dûsita Ârtava. Differences between Raja and Ârtava, physiology of Ârtavavaha Srotâmsi.
26. Study of Tvak.
27. Definition of the term 'Mala' Definition, Formation, Properties, Quantity and Functions of Purîsa, Mutra. Manifestations of Vrddhi and Kshaya of Purîsa and Mûtra.
28. Definition, Formation, Properties, Quantity and Functions of Svedavaha Srotâmsi. Formation of Sveda. Manifestations of Vrddhi and Ksaya of Sveda.
29. Definition, Formation, properties, Quantity, Classification and Functions of each Dhâtumala.
30. Various definitions and synonyms for the term 'Prakrti'. Factors influencing the Prakrti. Classification of Deha-Prakrti.
31. Physiological description of Pancajnanendriya and physiology of perception of Sabda, Sparsa, Rûpa, Rasa, Gandha. Indriya-panca-pancaka, Physiological description of Karmendriya.
32. Definition, location (sthana), Properties, Functions and Objects of Manas.
33. Definition, Properties of Âtmâ. Difference between Paramâtmâ and Jîvâtmâ, Characteristic features of Âtmâ.
34. Location, Types, Functions of Buddhi; Physiology of Dhî, Dhrti and Smrti.
35. Definition of Nidrâ, Classification of Nidrâ. Tandra, physiological and clinical significance of Nidra; Svapnotpatti and Svapnabheda.
36. Physiology of special senses. Intelligence, Memory, Learning and Motivation.
37. Physiology of sleep, Physiology of speech and articulation; Physiology of Pain and temperature.
38. Âhâra: Definition and significance of Âhâra.
39. Âhârpâchana: Âhâra Pâka Prakriyâ, Description of Annavaha Srotâs. Description of Avasthâpâka and Nishthapaka. Role of dosha in Âhârapâka. Sâra and Kitta Vibhajana. Absorption of Sâra. Utpatti and Udeeran of Vâta-Pitta-Kapha.
40. Definition of the term Kostha. Physiological classification of Kostha and the characteristics of each kind of Kostha.
41. Agni: Description of the importance of Agni. Classification of Agni. Locations, properties and functions of Jâtharâgni, Bhûtâgni, and Dhâtvagni.
42. Applied physiology of Agni in Kriyâ Sârîra and Cikitsâ.
43. Description of the aetiology and features of Annavaha Srotodusti. Applied physiology of Annavaha Srotâs: Arocaka, Ajîrna, Atisâra, Grahanî, Chardi, Parinâma Sûla Agnimândya.
44. Description of the process of digestion of fats, carbohydrates and proteins in human gastrointestinal tract. Different digestive juices, their enzymes and their mechanisms of action. Functions of Salivary glands, Stomach, Pancreas, Small intestine, Liver and large intestine in the process of digestion and absorption.
45. Movements of the gut (deglutition, peristalsis, defecation etc.) and their control.
46. Applied physiology of gastrointestinal tract: Vomiting, Diarrhoea, Malabsorption etc.
47. Recent understandings related to the gut microbiota and their role in health and disease.
48. Introduction to biochemical structure, properties and classification of proteins, fats and carbohydrates.
49. Description of the processes involved in the metabolism of proteins, fats and carbohydrates.
50. Vitamins: sources, daily requirement and functions. Physiological basis of signs and symptoms of hypo and hyper-vitaminosis.
51. Physiology of Nervous System. General introduction to nervous system: neurons, mechanism of propagation of nerve impulse.
52. Study of CNS, PNS and ANS. Sensory and motor functions of nervous system. Functions of different parts of brain and spinal cord, Hypothalmus and limbic system.
53. Physiology of Endocrine system, Male and female reproductive physiology, Adipose tissue and its Function, Physiology of immune system, Physiology of Cardio-Vascular system, Physiology of Respiratory system, Functions of Haemopoetic system, Physiology of muscles. Physiology of excretion, Structure and functions of skin, sweat glands and sebaceous glands.
54. Physiograph, Computerised spirometry, Biochemical Analyzer, Pulse oxymeter, Elisa Reader, Hematology Analyzer, Tread mill, Recent studies in biorhythms.
55. Recent advances in Neuro-Immune-Endocrine physiology.
56. Recent advances in stem cell research.

(04) Lecturer, Dravyagun:-

1. Importance of Namagyana of Dravya, origin of Namarupagyana of Aushadhi in Veda, etymological derivation of various names and synonyms of Aushadhi.
2. Rupagyana in relation to Aushadhi. Sthula and Sukshma description (Macroscopic and Microscopic study) of different parts of the plant.
3. Synonyms of dravyas (aushadha and Ahara) mentioned in Vedic compendia, Brihatrayee, Bhavaprakasha and Rajanighantu.
4. Basonyms, synonyms and distinguish morphological characteristic features of medicinal plants listed in Ayurvedic Pharmacopoeia of India (API).

क्रमशः

5. Knowledge of Anukta dravya (Extrapharmacopial drugs) with regards to namarupa. 6. Sandigdha dravya (Controversial drugs) vinischaya.
6. Knowledge of biodiversity, endangered medicinal species.
7. Knowledge of TKDL, Introduction to relevant portions of Drugs and cosmetic act, Magic remedies Act, Intellectual Property Right (IPR) and Regulations pertaining to Import and Export of Ayurvedic drugs.
8. Knowledge of tissue culture techniques.
9. Knowledge of Genetically Modified Plants.
10. Fundamental principles of drug action in Ayurveda and conventional medicine.
11. Detailed study of rasa-guna- virya- vipaka-prabhava and karma with their applied aspects and commentators (Chakrapanidatta, Dalhana, Arunadatta, Hemadri and Indu) views on them.
12. Comprehensive study of karma as defined in Brihatrayee & Laghutrayee.
13. Detailed study of Guna and Karma of dravyas listed in API and Bhavaprakasha Nighantu along with current research review.
14. Detailed study of aharadravya/ ahara varga ascribed in Brihatrayee and various nighantus along with Kritanna varga.
15. Pharmacologycal principles and knowledge on drugs acting on various systems.
16. Basic knowledge on experimental pharmacology for the evaluation of - analgesic, anti pyretic, anti inflammatory, anti diabetic, anti hypertensive, hypo lipidemic, anti ulcer, cardio protective, hepatoprotective, diuretics, adaptogens, CNS activites.
17. Knowledge on Heavy metal analysis, pesticidal residue and aflatoxins.
18. Knowledge on evaluation of anti microbial and antimycotic activities.
19. Bhaishjya Prayog Siddhant [Principles of drug administration] - Bhaishajya Marga (routes of drug administration), Vividha Kalpana (Dosage forms), Principles of Yoga Vijnan (compounding), Matra (Dosage), Anupana (Vehicle), Aushadha grahankal (Time of drug administration), Sevankal avadhi (duration of drug administration), Pathyapathya (Dos' /Donts' /Contraindications), complete Prescription writing (Samagra Vyavastha patraka).
20. Samyoga- Viruddh Sidhanta and its importance.
21. Amayika prayoga (therapeutic uses) of important plants ascribed in as well as Brihattrayee, Chakradutta, Yoga ratnakara and Bhavaprakasha.
22. Knowledge of Pharmaco-vigilance in Ayurveda and conventional system of medicine.
23. Knowledge of clinical pharmacology and clinical drug research as per GCP guide lines.
24. Knowledge of Pharmacogenomics.
25. Etymology of nighantu, their relevance, utility and salient features.
26. Nighantus with their authors name, period and content- Paryaya ratnamala, Dhanvantari nighantu, Hridayadipika nighantu, Ashtanga nighantu, Rajanighantu, Siddhamantra nighantu, Bhavaprakasha nighantu, Madanpala nighantu, Rajavallabha nighantu, Madhava Dravyaguna, Kaiyadeva nighantu, Shodhala nighantu, Saligram nighantu, Nighantu ratnakara, Nighantu adharsha and Priya nighantu.
27. Detailed study Aushadha kalpana mentioned in Sharangadhara samhita and Ayurvedic Formulary of India (AFI).
28. General awareness on poshaka ahara (Nutraceuticals),Varnya (cosmoceuticals), food addictives, Excipients etc.
29. Knowledge of plant extracts, colors, flavors and preservatives.
30. Review of important modern works on classical medicinal plants published by Govt of India, department of AYUSH and ICMR.

(03) Lecturer, Ras Shastra and Bhaishajya Kalpana:-

1. History and Chronological evolution of Rasashastra, concept of Raseshwara darshan. Fundamental Principles of Rasashastra Technical terminologies (Paribhasha) used in Rasa shastra.
2. Detailed knowledge of ancient and contemporary Yantropakarana and their accessories used in aushadhikaran and their contemporary modification such as yantras, mushas, putas, Koshthis, bhrashtris, muffle furnaces and other heating appliances, ovens, driers etc. used in manufacturing of Rasaushadhis in small scale and large scale along with their applications.
3. Study of Samskara, Role of agni (Heat), jala and other dravas (water and other processing liquids), kala (Time span), paatra (container) etc. and their significance in aushadhikarana.
4. Concept of Bhavana, study of Mardana and its significance and knowledge of ancient and contemporary grinding techniques.
5. Detailed Knowledge of different procedures of Shodhana, Jarana Murchana and Marana, concept of Puta, definition, types and specifications of different Putas. Significance of different Putas in relation to Bhasmikarana and therapeutic efficacy of dravya under process. Bhasma pariksha vidhi and its significance in relation to contemporary testing procedures. Amritikaran and Lohitikarana.
6. Detailed knowledge of Satva and Druti, Satva shodhan, mrudukaran and Maran of Satva, its significance, in relation to therapeutic efficacy of dravya under process.
7. Concept of Pratinidhi dravya and discussion on controversial drugs.
8. Detailed ancient and contemporary knowledge of Parada and its compounds with reference to source, occurrence, physico-chemical characterization, graahya agraahyatva, Parada dosha, Parada gati, Parada shodhan, Study of Ashta sanskara, ashtadasha sanskara etc., Hingulottha Parada. Concept of Parada jaran, moorcchana, bandhan, pakshaccheda and marana etc. Therapeutic properties and uses of Parada.
9. Detailed ancient & contemporary knowledge with Geochemical / mineralogical / biological identification, source, occurrence, physico-chemical characterization, graahya-agraahyatva, Shodhan Maranadi vidhi and therapeutic properties and uses of dravyas etc. included in Maharasa, Uparasa, Sadharana rasa, Dhatu, Upadhatu, Ratna, Uparatna, Visha, Upavisha, Sudha varga, Lavana varga, Kshara varga, Sikata varga and other miscellaneous drugs used in Rasashastra.
10. Detailed knowledge of manufacturing, pharmacopeial standards, storage, shelf life, therapeutic efficacy, dose, anupana, vikarashanti upaya and development of technology with Standard Operating Procedures of processing, standardization, quality control of Bhasmas and Pishtis.
11. Bhasma - Abhraka Bhasma, Svarnamakshika Bhasma, Kasis Bhasma, Svarna Bhasma, Rajata Bhasma, Tamra Bhasma, Loha Bhasma, Mandur Bhasma, Naga Bhasma, Vanga Bhasma, Yashad Bhasma, Trivanga Bhasma, Pittala, Kamsya and Varthaloha Bhasma, Shankha Bhasma, Shukti Bhasma, Kapardika Bhasma, Godanti Bhasma, Praval Bhasma, Mrigashringa Bhasma, Mayurpiccha Bhasma, Kukkutand twak Bhasma, Hiraka Bhasma, Manikya Bhasma.
12. Dravaka - Shankha Dravaka.
13. Pishti - Praval pishti, Manikya Pishti, Mukta pishti, Jahara mohara pishti, Trinakanta mani pishti etc.
14. Detailed knowledge of manufacturing, storage, shelf life, pharmacopeial standards, therapeutic efficacy, dose, anupana and development of technology with Standard Operating Procedures of processing, standardization and quality control of Kharaliya rasa, Parpati, Kupipakva rasa and Pottali rasa.
15. Study of classical texts with respective commentaries and special emphasis on Rasarnava, Rasahridaya tantra, Rasa Ratna Samucchaya, Rasendra Chintamani, Rasendra Chudamani, Rasa Ratnakara, Rasadhyaya, Rasa Kamdhenu, Anandkanda, Siddha Bheshaja Manimala, Ayurveda Prakash, Rasatarangini, Bhaishajya Ratnavali, Rasamritam etc. and the books mentioned in the Schedule I of D & C Act – 1940. Relevant portions of Brihatrayi.
16. History and Chronological evolution of Bhaishajya Kalpana, Concept of Bheshaja and Aushadh, fundamental principles of Bhaishajya Kalpana. Technical terminologies (Paribhasha) used in Bhaishajya Kalpana.
17. Classical and Contemporary concepts of Collection, storage, Saviryata Avadhi and preservation methods of different fresh and dry Aushadhi dravyas and their graahya agraahyatva.
18. Detailed knowledge of routes of drug administration, Aushadha matra, Anupana, Sahapana, Aushadha Sevana Kala, Kala Avadhi, Pathya, Apathya (Posology).
19. Detailed knowledge of manufacturing, standardization, quality control, pharmacopeial standards, storage, shelf life and development of innovative technology with Standard manufacturing Operating Procedures of following dosage forms Panchavidha Kashaya, Churna, Rasakriya, Ghana, Avaleha, Pramathya, Mantha, Panaka, Sarkara, Kshirapaka, Ushnodaka, Aushadha Siddha Udaka, Sadangodaka, Tandulodaka, Laksharasa, Arka, Sarva, Kshara, Lavana, Masi, Gutika, Vatika, Modaka, Guggulu and Varti etc. Sneha Kalpana: Concept of accha sneha and sneha pravicharana and Murchhana. Sneha paka, types of sneha paka and sneha siddhi lakshana, Avartana. Sneha kalpa karmukata (Pharmacokinetics and dynamics of sneha kalpa). Role of Sneha in relation to absorption of drug. Kritanna and Bheshaja Siddha Anna Kalpana, Aharopayogi varga, concept of medicinal and functional food, dietary supplements and neutraceuticals etc. Sandhana kalpana: Madya varga and Shukta varga. Asava yoni. Alcoholic and acidic fermentation. Sandhana kalpa karmukata (Pharmacokinetics and dynamics). Advancements in fermentation technology. Knowledge of regulations in relation to alcoholic drug preparations. Bahya Prayogartha Kalpana : Lepa, Upanaha, Udvartan, Avachurnana / Avadhulana, Abhyanga, Dhupana, Malahara. Mukha, Karna, Nasa, Netropacharartha Kalpana.Basti Kalpana: Basti Yantra Nirmana, Types of basti. Anuvasana and Asthapana basti. Karma, kala and yoga basti etc. Basti Kalpa (Madhutailika, Piccha basti etc.), Comparison of Asthapana and Anuvasana basti with evacuation and retention enema.
20. All the following procedures are to be studied in relevance to Ayurvedic Bhaishajya Kalpas.
21. Methods of Expression and Extraction: Maceration, percolation, distillation, infusion and decoction.
22. Liquids: Clarified liquid, syrup, elixir, filtration techniques 23. Solid dosage Forms: Powders: Size reduction, separation techniques, particle size determination, principles of mixing. Tablets: Methods of tableting, suppositories, pessaries and capsules, sustained release dosage forms.
24. Semisolid dosage forms, emulsions, suspensions, creams and ointments, sterilization of ophthalmic preparations.
25. An introduction to various cosmetic preparations.
26. Drying, open and closed air drying, freeze drying, vacuum drying and other drying methods pharmaceutical excipients.
27. Study of classical texts with special emphasis on Chakradatta, Sharangadhara Samhita, Bhaishajya Ratnavali, Bhava Prakasha, Yogaratnakara, relevant portions of Brihatrayi, Ayurvedic Pharmacopeia of India, Ayurvedic Formulary of India.
28. Rasachikitsa, Kshetrikaran, Rasajirna, Lohajirna, Aushadhi Sevana Vikarashanti Upaya. Ashuddha, Apakva, Avidhi Rasadravya Sevanajanya Vikara evam Vikara shanti upaya.
29. Detailed knowledge of Aushadhi patha Nischiti and sanyojan (formulation composition), dose, anupana and method of administration, therapeutic efficacy and uses (indications and contra-indications), probable mode of action etc. of the following Aushadhi yogas

1. Kharaliya Rasa : Shwasa kuthara Rasa, Tribhuvana kirti Rasa, Higuleshwara Rasa, Ananda bhairava Rasa, Maha Lakshmivilasa Rasa, Vasnata kusumakara Rasa, Vasanta malti Rasa, Brihat vata chintamani Rasa, Laghu suta shekhar Rasa, Suta shekhara Rasa, Ram ban Rasa, Chandra kala Rasa, Yogendra Rasa, Hridyarnava rasa, Grahani kapata Rasa, Garbha pala Rasa, Jalodarari Rasa, Mrityunjaya Rasa, Madhumalini vasanta Rasa, Arsha kuthara Rasa, Krimi mudgara Rasa, Suchika bharana Rasa, Tri netra Rasa, Smruti sagara Rasa, Vata gajankusha Rasa, Agni kumar Rasa, Ekangavir Rasa, Kama dugha Rasa, Purna chandrodaya Rasa, Pratap lankeshwara Rasa, Maha vata vidhwansaka Rasa, Kasturi bhairava Rasa, Ashwa kanchuki Rasa, Gulma kuthara Rasa, Maha jwarankusha Rasa, Chandra mrita Rasa, Kapha ketu Rasa, Prabhakara Vati, Pravala Panchamrita, Gandhaka Rasayana, Chaturbhuj rasa, Navajivan rasa, Shonitargal rasa, Raktapitta kulakandan rasa, Amavatari Rasa, Kravyada Rasa, Garbha chintamani Rasa, Chintamani Rasa, Trilokya chintamani Rasa, Pradarantaka Rasa, Vangeshwara Rasa, Brihat vangeshwara Rasa, Shwasakasa Chintamani Rasa, Arogya vardhini Vati, Chandra prabha Vati, Agni tundi vati, Shankha Vati.
2. Kupipakva Rasa: Rasa Sindura, Makaradhwaja, Sidha makaradhwaja, Samira pannaga Swarnavanga, Malla sindura, Rasa karpura, Rasa pushpa, Manikya Rasa.
3. Parpati Rasa : Rasa Parpati, Loha Parpati, Tamra Parpati, Suwarna Parpati, Gagana Parpati, Vijay Parpati, Panchamrit Parpati, Shwet Parpati, Bola Parpati.
4. Pottali Rasa: Rasagarbha pottali, Hemagarbha pottali, Mallagarbha pottali, Hiranyagarbha pottali, Shankagarbha pottali, Lokanatha rasa, Mriganka Pottali.
5. Loha evam Mandura Kalpa: Ayaskriti, Loha Rasayana, Amla pittantaka loha, Chandanadi loha, Dhatri loha, Navayasa loha, Putapakva vishama jwarantaka loha, Shilajatwadi loha, Tapyadi loha, Saptamrita loha, Dhatri loha Amritasara Loha, Shankaramat loha, Pradarantaka loha, Rohitaka loha. Punarnava Mandura, Shatavari Mandura, Tara Mandura, Triphala Mandura, Mandura Vataka etc.

क्रमशः

30. Detailed knowledge of Aushadhi patha Nischiti and sanyojan (formulation composition), dose, anupana and method of administration, therapeutic efficacy and uses (indications and contra-indications), probable mode of action etc. of the following Aushadhi yogas; Panchavidha Kashayas and their Upakalpa: Ardraka swarasa, Tulasi swarasa, Vasa putapaka swarasa, Nimba kalka, Rasona kalka, Kulattha Kwath, Punarnavasthaka kwatha, Rasna saptaka kwatha, Dhanyak hima, Sarivadi hima, Panchakola phanta, Tandulodaka, Mustadi pramathya, Kharjuradi mantha, Shadanga paniya, Laksha rasa, Arjuna kshirapaka, Rasona kshirapaka, Chincha panaka, Candana panaka, Bamapsha sharkara, Nimbu sharkara, Amrita satva, Ardraka satva, Ajamoda arka, Yavanyadi arka ii. Kritanna and Bheshaja Siddha Ahara Kalpana: Yavagu, (Krita and Akrita), Ashtaguna manda, Laja manda, Peya, Vilepi, Krishara, Yusha, Mudga yusha, Kulattha yusha, Saptamushtika yusha, Khada, Kambalika, Raga, Shadava, Mamsarasa, Veshavara, Dadhi, Katvar Dadhi, Dadhi Mastu, Takra, Ghola, Udasvita, Mathita, Chhacchika etc., Churna: Sitopaladi Churna, Talisadi Churna, Triphala Churna, Hingvashtaka Churna, Avipattikara Churna, Swadishta Virechana Churna, Bhaskar Lavana Churna, Sudarshana Churna, Maha Sudarshana Churna, Gandharva Haritaki Churna,
Pushyanuga Churna, Ajamodadi Churna, Hingvadi Churna, Eladi Churna, Dadimashtaka Churna, Trikatu Churna, Vaishwanara Churna, Gangadhara Churna, Jati phaladi Churna, Narayana Churna etc.,Gutika: Arogya vardhani vati, Chandra prabha vati, Chitrakadi Gutika, Sanjivani Vati, Lasunadi vati, Lavangadi Vati, Vyoshadi vati, Khadiradi Vati, Kankayana Vati, Abhayadi modaka, Marichyadi gutika, Amalakyadi gutika, Samshamini Vati, Kutaja Ghana vati, Amarasundari Vati, Shiva Gutika, Eladi Vati, Kasturyadi Gutika, Arshoghni Vati. Guggulu: Yogaraja Guggulu, Maha yogaraja Guggulu, Trayodashanga Guggulu, Kanchanara Guggulu, Rasnadi Guggulu, Triphala Guggulu, Simhanada Guggulu, Gokshuradi Guggulu, Kaishora Guggulu, Panchatikta Guggulu, Amritadi Guggulu, Vatari Guggulu, Lakshadi Guggulu, Abha Guggulu, Navaka Guggulu, Nava Karshika Guggulu.

31. Sneha Kalpana - Sneha Moorchhana - Ghrita Murchana, Taila Murchhana, Siddha Ghrita - Shatavari Ghrita, Jatyadi Ghrita, Phala Ghrita, Dadimadi Ghrita, Kshirashatpala Ghrita, Mahatriphala Ghrita, Dhanvantari Ghrita, Amritaprasha Ghrita, Kalyanaka Ghrita, Brahmi Ghrita, Changeri Ghrita, Panchatikta Ghrita, Sukumara Ghrita, Panchagavya Ghrita Siddha Taila - Maha Narayana Taila, Maha Masha Taila, Bala Taila, Nirgundi Taila, Shadbindu Taila, Vishagarbha Taila, Sahacharadi Taila, Jatyadi Taila, Apamarga Kshara Taila, Tuvaraka Taila, Kshirabala Taila (Avartita), Lakshadi Taila, Anu Taila, Kumkumadi Taila, Hingutriguna Taila, Kottumchukadi Taila, Prasarinyadi Taila, Taila, Brihadavadi Taila, Irimedadi Taila, Chandanadi Taila, Panchaguna taila, Arka taila, Pinda Taila, Kasisadya TailaRasakriya, Avaleha, Khanda etc.. Darvi Rasakriya, Vasa Avaleha, Brahma rasayana, Chyavanprasha Avaleha, Kushmanda Avaleha, Dadima Avaleha, Bilvadi Avaleha, Kantakaryavaleha, Haridra Khanda, Narikela khanda, Saubhagya shunthi paka, Amrita Bhallataka, Kamsa Haritaki, Chitraka Haritaki, Vyaghri Haritaki, Bahushala Guda, Kalyana Guda Sandhana Kalpa: Lodhrasava, Kumaryasava, Ushirasava, Chandanasava, Kanakasava, Sarivadyasava, Pippalyasava, Lohasava, Vasakasava, Kutajarishta, Draksharishta, Raktamitrarka, Dashamularishta, Abhayarishta, Amritarishta, Ashokarishta, Sarasvatarishta, Arjunarishta, Khadirarishta, Ashwagandha Arishta, Vidangarishta, Takrarishta, Mahadrakshasava, Mritasanjivani sura, Maireya, Varuni, Sidhu, Kanji, Dhanyamla, Madhu Shukta, Pindasava. Anya Kalpa : Phala varti, Chandrodaya varti, Arka lavana, Narikela lavana, Triphala masi, Apamarga kshara, Snuhi kshara, Ksharasutra, Atasi upanaha, Sarjarasa malahara, Gandhaka malahara, Sindhuradi Malahara, Shatadhouta Ghrita, Sahasra Dhouta Ghrita, Siktha taila, Dashanga lepa, Doshaghna lepa, Bhallataka taila patana, Jyotishmati Taila, Bakuchi Taila, Dashanga dhupa, Arshoghna dhupa, Nashadi Netra bindu, Madhutailika Basti, Piccha Basti, Yapana Basti.

32. General Pharmacology:- Principles of Pharmacology, Pharmcodynamics & Pharmacokinetics: Absorption, distribution, Metabolism & excretion, mechanism of action, dose determination and dose response, structure activity relationship, Routes of drug administration, Factors modifying drug effect, Bioavailability and Bioequivalence, drug interactions, adverse drug reaction and drug toxicity, Preclinical evaluation: experimental pharmacology [bioassay, in vitro, in vivo, cell line studies, animal ethics.

33. Clinical pharmacology: Evaluation of New Chemical Entity – phases and methods of clinical research. Ethics involved in human research.

34. Elemental constituents of human body and its physiological importance. Deficiencies and excess of various elements (micro-nutrients).

35. Toxicity of heavy metals and chelation therapy.

36. Knowledge of toxicity and pharmacological activities of herbo-mineral compounds.

37. Detailed Knowledge of Pharmacovigilance – National and International Scenario. Pharmacovigilance of Ayurvedic Drugs.

38. Scope and evolution of pharmacy. Information resources in pharmacy and pharmaceutical Science.

39. Pharmaceutical dosage form design (Pre-formulation)

40. Packaging materials and Labeling

41. Management of pharmacy, store and inventory management, personnel management, Good Manufacturing Practices related to Ayurvedic drug industry.

42. Pharmaceutical Marketing, product release and withdrawals.

43. Hospital, Dispensing and Community pharmacy.

44. Patenting and Intellectual Property Rights.

45. Laws Governing Ayurvedic drugs - Relevant regulatory provisions of Ayurvedic drugs in Drug and Cosmetics Act - 1940 and Rules – 1945, Laws pertaining to Drugs and Magic remedies (Objectionable Advertisement) Act – 1954, Prevention of Food Adulteration (PFA) act, Food Standards and Safety Act – 2006, Laws pertaining to Narcotics, Factory and Pharmacy Acts, Consumer Protection Act -1986.

46. Regulatory Affairs related to International Trade and Practices of Ayurvedic Drugs.

47. Introduction to Ayurvedic Pharmacoepia of India, Ayurvedic Formulary of India.

48. Introduction to Indian Pharmacoepia, British and United States Pharmacoepia, Pharamcoepial Codex.

49. Introduction to Traditional Knowledge Digital Library.

(06) Lecturer, Agad Tantra:-

1. Agada Tantra, its sequential development during Veda kala, Samhitha kala, Samgraha kala and Adhunika kala.

2. Definition of Visha, properties of visha and its comparison with madya and oja, visha samprapti, visha prabhava, visha-vega, vegantara and visha karmukata (toxicodynamic and toxicokinetic study).

3. Descriptive and comparative study of Upavisha in unison with Contemporary Toxicology.

4. Examination of poisons as per Contemporary and Ayurvedic Methods.

5. Descriptive study of sthavara visha, definition, classifications, classical signs and symptoms of poisoning including vanaspatic (phyto poison), khanija (mineral) and compound sthavara visha.

6. Study of Jangama visha and their sources (Animal poisoning and Zoonotic Diseases). Descriptive study of snakes according to ancient and contemporary knowledge. Causes of snake bite and its types. Composition of snake venom and its pharmacological actions. Signs and symptoms of envenomation and its prognostic signs. Clinical features of Vrischika (scorpion), Luta (spider), Grihagodhika (Lizard), Mushaka (rats), Alarka (dogs), Makshika and Mashaka (mosquitoes) and their pathologic manifestations including their role in the manifestation of communicable diseases. Shanka visha and its management. Visha sankat and Visha Kanya.

7. Garavisha and Dushi visha, their varieties, signs, symptoms and management with contemporary relevance. Detailed study of Allergies including allergic manifestations in the eyes, nose, lungs and skin.

8. Detailed study of Madya visha and substances acting on the nervous system, substance abuse.(Diagnosis, Management and De-addiction)

9. Detailed study of the contemporary knowledge about vishajanya Janpadodhvansaniya roga (community health problems due to poisons - Environmental pollution, water pollution, soil pollution, air pollution, Industrial pollutions etc. their features and management according to ancient and recent concepts.

10. Concept of Virudha aahara, Aahara visha and Satmyasatmyata in contemporary and Ayurvedic views
    1) Conceptual study - Drug interactions and incompatibility, Pharmacovigilance
    2) Fundamental Principles for treatment of poisoning
    3) General and specific treatment of different types of Sthavara visha.
    4) General and specific treatment of different types of Jangama visha (animal poisons, insect poisons, snake bites and other zoonotic diseases).
    5) Emergency medical management of poisoning including preparation, administration and complications of antivenoms/antisera.
    6) Chaturvimsati upakrama (24 management procedures).
    7) Management of Garavisha and Dushivisha. Treatment of Allergies including allergic manifestations in the eyes, nose, lungs and skin.
    8) Diagnosis and Management of Drug Induced Toxicity
    9) Management of the toxic manifestations caused by the contact poisons (paduka, vasthra, abharana, mukhalepa- vishabadha etc).
    10) Management of food poisoning.
    11) Death due to poisoning, Duty of physician in poisoning, in cases of suspected poisoning. Post mortem findings in poisoning.
    12) Extra -corporeal techniques (dialysis etc) for removal of poisons.

11. Definition of Vyavahara Ayurveda, its evolution in ancient and contemporary periods.

12. Personal identity and its medico-legal aspects

13. Death and its medico-legal aspects (Medical Thanatology)

14. Asphyxial deaths and its medico-legal importance.

15. Death due to starvation, heat and cold, lightening and electricity. Suspended Animation

16. Medico-legal autopsy.

17. Injuries due to explosions, chemical and nuclear warfare.

18. Medico-legal aspects of injuries and wounds.

19. Impotence and sterility-Its medico-legal aspects. Regulations of Artificial Insemination. Medico –legal aspects of surrogate motherhood.

20. Sexual offences and perversions.

21. Medico-legal aspects of virginity, pregnancy, delivery, abortion, infanticide and legitimacy with related acts.

22. Indian Penal Code, Criminal procedure code and study of related acts like Indian Evidence Act, Pre Natal Diagnostic Test Act, Nursing Home Act, Human Organ Transplantation Act, Drugs and Cosmetic Act 1940, Narcotic drugs and Psychotropic substances Act 1985, Pharmacy Act 1948, Drugs and Magical Remedies (Objectionable Advertisements) Act 1954, Medicinal and Toilet Preparations Act 1955 and Anatomy Act etc. Any related act enacted by the government from time to time.

23. Courts and Legal procedures, Forensic Science Laboratory, Medico legal aspects of mental illness

24. Duties and privileges of physician. Structure of Central Council of Indian Medicine, its jurisdiction and functions. Code and Conducts as per the CCIM, Rules and Regulations there under.

25. Respective State Council of Indian Medicine, its structure, power, voluntary duties. Doctor - patient relationship.

26. Rights and privileges of patients; Euthanasia, Professional secrecy and privileged communication. Professional negligence and malpractice, Indemnity Insurance scheme. Consumer Protection Act related to medical practice.

27. Ethics as in classics. Types of physicians and methods of identification, Pranabhisara and Rogabhisara Physicians, qualities of physician, responsibilities of Physicians, Chathurvidha vaidya vriti, duties of physicians towards patients, Vaidya sadvritam, Apujya Vaidya who is accepting fees, relationship with females. Study of process for sodhana, marana and samskarana of poisonous drugs. Pharmaco-dynamics of different formulations used in Agadutantra Study of pharmacology and usage of antidotes as per the Ayurvedic and contemporary science.

28. Fundamentals of pharmaceutics according to Ayurvedic and contemporary point of view. Chemical, analytical, laboratory examination of poisons and suspicious substance. Introduction of different instruments /equipments used in the examination of poisons. Introduction to Clinical toxicology, Introduction to Experimental toxicology Introduction to Toxico – genomics,Survey and study of the traditional and folklore vishachikista sampradaya

क्रमशः

(07) Lecturer, Swasthavritta:-

1. Concept of holistic health according to Ayurveda.
2. Spectrum of health, Iceberg phenomenon of diseases, dimensions of health.
3. Dinacharya – Detailed accounts by Charaka, Sushruta, Vagbhata and Bhavamishra.
4. Probable Physiologic effect of Dinacharya procedures.
5. Ratricharya – Bhavamishra and other classics.
6. Day and night pattern in various countries.
7. Ritucharya – Classical description by Charaka, Sushruta, Vagbhata, BhelaSamhita and Bhavamishra.
8. Ritus prevalent in various Indian states.
9. Ritu pattern in various countries of the world.
10. Shodhana Schedule for Ritusandhis.
11. Concept of Vegas, types and the physiology behind each vega and vegadharana.
12. Ahara – Classical food items in Charaka, Sushruta, Vagbhata and Sharangadhara.
13. Aharavargas and comparison with todays' food items.
14. Staple diet of various States of India.
15. Staple diet of various countries in correlation with their climate.
16. Principles of dietetics. Balanced diet for healthy adult, adolescent, elderly people, pregnant ladies and lactating mothers.
17. Food intervention in malnutrition, under nutrition and over nutrition.
18. Rules of food intake acccording to Charaka, Sushruta and Vagbhata.
19. Pros and Cons of vegetarian and Non vegetarian foods.
20. Viruddhahara – Classical and modern day examples.
21. Sadvritta – Compare Charaka, Sushruta and Vagbhata.
22. Prajnaparadha – Causes, Effects and solution.
23. AcharaRasayana, Nityarasayana.
24. Rasayana procedures for Swastha
25. Vajeekarana for Swastha.
26. Mental Health and the role of Ayurveda in it.
27. Vyadhikshamatva – Modern and Ayurvedic concepts.
28. Principles of Health Education.
29. Genetics in Ayurveda and Modern Science
30. Concept of community health.
31. Concept of Prevention according to Ayurveda.
32. Concept of prevention according to Modern medicine. Levels of prevention. Stages of intervention.
33. Web of causation of diseases, Multifactorial causation.
34. Natural History of diseases.
35. Ecology and community health.
36. Disinfection practices for the community – Modern and Ayurvedic.
37. Immunization programmes. Possible contribution of Ayurveda.
38. Environment and community health (Bhumi, Jala, Vayu, Shuddhikarana, Prakasha,Shabda, Vikirana)
39. Housing –W.H.O Standards. Design of Aaturalaya(hospital), Sutikagara, Kumaragara, Panchakarmagara and Mahanasa (Kitchen)
40. Disposal of Wastes- Refuse, Sewage. Methods of Sewage disposal in sewered and unsewered areas.
41. Occupational Health. Ergonomics. Role of Ayurveda in ESI.
42. Medical Entomology- Arthropods of Medical Importance and their control measures.
43. Knowledge of parasites in relation to communicable diseases.
44. School Health Services and possible contribution of Ayurveda.
45. Demography and Family Planning.
46. Family Welfare Programme and the role of Ayurveda in it.
47. Old age problems in community. Role of Ayurveda in Geriatrics.
48. Care of the disabled.
49. Life Style disorders (Non Communicable diseases) in community and the role of Ayurveda in them.
50. Health tourism. Ayurvedic Resort Management- Panchakarma and allied procedures.
51. Medical Sociology.
52. Modern Concept of Epidemiology
53. Critical evaluation of Janapadodhwamsa.
54. Epidemiology of different Communicable diseases in detail.
55. General investigations for Communicable diseases.
56. Sexually Transmitted Diseases and their control
57. Ayurvedic view of Samkramaka Rogas.
58. Investigation of an Epidemic
59. Control of Epidemics.
60. Host Defenses.
61. Ayurvedic methods of Vyadhikshamatva.
62. Health advice to travelers.
63. Hospital, Isolation ward and bio medical waste management
64. National Health Programmes. Contribution of Ayurveda in National Health Programmes.
65. Health administration under Ministry of H &FWD.
66. AYUSH , NRHM, NUHM administration, functions and programmes.
67. National and International Health Agencies and their current activities.
68. Disaster management
69. Statistics related with Infectious diseases at International, National and State levels.
70. Vital Statistics
71. History and evolution of Yoga
72. Different Schools of Yoga
73. Rajayoga –(Ashtanga yoga) philosophy of Patanjali according to Yogasutras
74. Hathayoga - according to Hathayogapradeepika, GherandaSamhita and Shivsamhita.
75. Karmayoga – Philosophy according to Bhagavad Gita
76. Mantrayoga, Layayoga, Jnanayoga and Bhaktiyoga.
77. Physiological effect of Yoga on Body and mind – Ancient and modern concepts.
78. Concept of Sthula, Sukshma and Karana Shariras.
79. Concept of Panchakoshas, Concept of Shad chakras and Kundalini
80. Shad Kriyas and their therapeutic effects.
81. Therapeutic effect of yogic practice in the following diseases - Diabetes, Hypertension, Cardiovascular disorders, Obesity, Asthma, Piles, Irritable Bowel Syndrome, Eczema, Psoriasis, Stress Disorders, Eye disorders, Head Ache, Juvenile Delinquency, Mental retardation, Depression, Neurosis, Sexual Dysfunction, Uterine Disorders, Cancer.
82. Yoga in Ayurveda –Concept of moksha,Tools for Moksha,Naishthikichikitsa, TatvaSmriti, Satyabudhhi, yoginamBalamAishwaram (charakaSamhitaSharirasthana chapter 1 & 5)
83. History of Nisargopachara.
84. Basic Principles of Western School of Nature Cure
85. Basic Principles of Indian School of Nature Cure – Panchabhuta Upasana and its therapeutic utility.
86. Different types of Massage and their therapeutic effects
87. Concepts of Acupuncture and Acupressure.
88. Principles of Chromotherapy and Magnetotherapy

(08) Lecturer, Prasuti Tantra - Stri Rog:-

1. Applied anatomy of female Genito urinary system, pelvis and Pelvic floor. Pelvic assesment and foetal skull.
2. Physiology, neuro endocrinology and pathology of puberty and Neuroendocrine control of menstrual cycle.. Artava, Rituchakra, Streebija, Pumbija.
3. Garbha sambhava samaagri, Garbhadhanam, Pre-conceptional counseling and care, Pumsavana, Garbhasya shad dhatvatmakata, Garbhavakranti, Matrijadi bhava, Garbha vriddhi, role of panchamahabhutas in the formation and development of foetus. Garbhasya avayavotpatti, Fundamentals of reproduction – gamatogenesis, Fertilization, Implantation and early development of human embryo.
4. Apara, Garbhodaka Jarayu, Nabhinadi.
5. Placenta, amniotic fluid, membranes and umbilical cord -their formation, structure, Functions and abnormalities. Garbha-poshana, Garbha shareerkriya vaishishtyam, Garbha lingotpatti, Garbha varnotpatti, Garbhasya masanumasika vriddhi. Foetal physiology, circulation, Foetal growth and development
6. Bija – Bijabhaga – Bijabhagavayava janya garbhanga vikruthi. Genetics, Birth defects and other teratologic abnormalities
7. Garbhini nidana, sapekshanidana, Garbhakalina matrigata parivartana, lakshana, Dauhrida. Diagnosis and differential diagnosis of pregnancy, anatomical and physiological changes during pregnancy, Endocrinology related to pregnancy, Immunology of pregnancy.
8. Garbhiniparicharya, Masanumasika Pathya Apathya evum Garbha upaghatakara bhava. Ante Natal care, examination investigations and management,
9. Garbhasankhya nirnay, Bahu apatyata, Multiple pregnancy.
10. Garbhavyapad - causes, clinical features, complications, management and treatment of Garbhasrava and Garbhapata , Upavishtaka, Nagodara / Upashushka, Lina garbha, Goodagarbha, Jarayu Dosha, Antarmrita garbha , Garbha shosha, Garbha kshaya, Bhutahrita garbha, Raktagulma.
11. Abortions, I.U.G.R, Intrauterine Foetal death Ectopic pregnancy and gestational trophoblastic neoplasia,
12. Garbhini vyapad – nidana panchaka and chikitsa of garbhini vyapad.
13. Early recognition, differential diagnosis and prompt management of pregnancy complications, Emesis and Hyperemesis gravidarium, Anaemia, Pregnancy Induced Hypertension, Pre-eclampsia, Eclampsia, Antepartum hemorrhage, Rh- incompatibility. Management of pregnancies complicated by medical, surgical or Gynecological disorders in consultation with the concerned specialties by team approach
14. Infections in pregnancy: Toxoplasmosis, Viral infections, Rubella, CMV, Hepatitis-B, Herpes, Syphilis and other Sexually Transmitted Infections including HIV, Prevention of mother to child transmission of HIV infection (PMTCT).
15. Jataharini related to garbhini avastha
16. Evaluation of Foetal and maternal health in complicated pregnancies by making use of diagnostic modalities.
17. Prenatal diagnosis of fetal abnormalities and appropriate care. PNDT Act and its Implications.
18. Vishesh adhyayan of – Ashtanghriday sharira - Adhyay -1st – Garbhavkranti Sushrutasamhita sharira - Adhyay -3rd – Garbhavkranti Charak Samhita sharira - Adhyaya - 8th Jatisutriya
19. Prasav paribhasha, Prasav kaal, Prasava prarambha karana, Prasava kalina garbha sthiti, Avi, Sutikagara.
20. Prasava avastha evum paricharya
21. Etiopathogenesis, clinical features, prevention and management of Garbhasanga, vilambita prasav, Mudhagarbha and Apara sanga.
22. Complications of different stages of labour
23. Obstetric management of high risk Pregnancies- Pre eclamptic toxaemia, Eclampsia, Diabetes, cardiac disease, asthma, Epilepsy, ante partum haemorrhage, preterm premature rupture of membranes, , Preterm, Post term, Multiple pregnancy, IUGR & HIV -AIDS
24. Still birth- diagnosis, complications and management.
25. Examination and management of neonate.
26. Management of birth asphyxia.
27. Detection of congenital malformation in newborn and timely referral for correction.
28. Sutika Paribhasha, kala maryada, paricharya, Sutika vyadhi and their chikitsa.
29. Stana sampat, Stanya utpatti, Stanya sampat, Stanya pariksha, Stanya vriddhi, kshaya and dusti karana, lakshan and its Chikitsa, stana shotha, stana vidhradhi.
30. Suppression of lactation
31. Normal and abnormal puerperium.
32. Raktadhana: blood transfusion and replacement of blood constituents.
33. Management of fluid and electrolyte imbalance in obstetrics.
34. Ashtanga Hridaya Sharira Sthana 2nd Adhyaya – Garbha vyapad Sushruta Samhita Nidana Sthana 8th Adhyaya – Mudhagarbha nidana Sushruta Samhita Chikitsa Sthana 15th Adhyaya – Mudhagarbha Chikitsa.
35. Disorders of menstruation and Female reproductive system. Congenital malformations of female genital tract , Artav dushti, artava vriddi, artava kshaya, asrigdara, anartava, and kashtartav, Genital infections including sexually transmitted infections, Abnormal vaginal discharges, Arsha, Yonikanda, Gulma, Granthi, Arbuda, Ab-

क्रमशः

normal uterine bleeding, Endometriosis, fibroid uterus, Adenomyosis, Polycystic ovarian syndrome and neoplasia of female genital organs, Endocrinological disorders affecting female reproductive system, Somarog

36. Detailed study of yoni vyapad mentioned by different Acharyas with their commentaries and all possible correlations with modern gynecological diseases.
37. Vandhyatva
38. Stanaroga: Detailed study of Stanashotha, Stanakilaka and stanavidradhi, stana granthi, stanarbuda. Examination of breast, diagnosis and differential diagnosis of breast lump.
39. Measures of contraception: Ayurvedic view of Garbha nirodha and Garbhapatkara yogas, Temporary Contraception, Recent studies in the field of contraception, National Health programme to improve maternal and Child health, social obstetrics and vital statistics (maternal and perinatal mortality).
40. Sthanik chikitsa
41. Detailed study of Pichu, Varti, Dhupan, Dhavana, Parisheka, lepa, Kalkadharana, Uttarabasti, agnikarma and kshara karma.
42. Rajo Nirvritti - Climacteric and menopause.
43. Geriatric health care
44. Study of modern diagnostic techniques and Investigations.
45. Important drugs used in Streerog.
46. Panchakarma in streerog.
47. Vishesha Adhyayana of –
48. Charaka Samhita Chikitsa Sthana - 30th Adhyaya - Yonivyapad Chikitsa Sushruta Samhita Uttara Tantra - 38th Adhyaya – Yonivyapad Pratishedha Kashyapa Samhita Kalpa Sthana - Shatapushpa Shatavari, Lashuna kalpa Adhyaya
49. General principles of Gynecological and Obstetric Surgeries. Analgesia and Anaesthesia in Obstetrics and Gynaec operative procedures.
50. Operative Obstetrics Decision making, techniques, diagnosis and management of surgical complications.
51. Dilatation and evacuation, Hysterotomy, Provision of safe abortion services –selection of cases, technique and management of complications, septic abortion, criminal abortion, MTP Act. Cervical encirclage. Instrumental delivery (Forceps, vacuum extraction), Caesarean Section, Manual removal of Placenta, Caesarean Hysterectomy.
52. Operative gynecology - Selection of cases, technique and management of complications of minor and major gynecological procedures. Dilatation and Curretage, Cervical cauterization. Polypectomy, Myomectomy, Cystectomy, Oophorectomy. Surgical sterilization procedures. Hysterectomy. Surgical procedures for genital prolapse. Surgical management of benign genital neoplasm. Recent advances in Gynaecology and obstetrics – Diagnostic and therapeutics Shock and its management, Blood Transfusion, Fluid and electrolyte imbalance, Fluid therapy. Record keeping, ethical and legal issues involved in obstetrics and gynaecology. Medico-legal aspects – ethics, communication and counselling in obstetrics and Gynecology. Intensive care in Obstetrics and Gynecology.

(9) Lecturer, Kaumarbhritya:-

1. Prakrita Bija-Bijabhaga-Bijabhagavayava evam Tadjanya Vikriti (Genetics and related disorders)
2. Ayurvedic genetics with modern interpretations: Shukra, Shonita, Shukra Shonita Doshas, Bija-Bijabhaga-Bijabhagavayava Vikriti, Matrija and Pitraja Bhavas, Yajjah Purushiya and Atulyagotriya; Measures for obtaining good progeny
3. Modern genetics
4. 4. Basic concepts: Cell, cell division, nucleus, DNA, chromosomes, classification, karyotype, molecular and cytogenetics, structure of gene, and molecular Screening. Human Chromosomes – Structure, number and classification, methods of chromosome preparation, banding patterns, Single gene pattern inheritance: Autosomal & Sex chromosomal pattern of inheritance, Intermediate pattern and multiple alleles, Mutations, Non Mendelian inheritance, mitochondrial inheritance, Genomic imprinting, parental disomy, Criteria for multi-factorial inheritance.
5. Pathogenesis: Pathogenesis of chromosomal aberrations and their effects, recombinant DNA, genetic inheritance, inborn errors of metabolism, Chromosomal abnormalities. Autosomal & Sex chromosomal abnormalities, syndromes, Multifactorial pattern of inheritance. Teratology, Cancer Genetics – Haematological malignancies, Pharmacogenetics, Chromosomal disorders, Chromosomal aberration (Klinefelter, Turner and Down's syndrome, Genetic Counseling, Ethics and Genetics.
6. Prakrita Bija-Bijabhaga-Bijabhagavayava evam Tadjanya Vikriti (Genetics and related disorders): Garbha (embryo), Garbhawastha (gestation period), sperm, ovum; spermatogenesis; oogenesis, structure of ovum, Sperm in the male genital tract; sperm in the female genital tract, activation and capacitation of sperm, Garbha Masanumasika Vriddhi evam Vikasa (Ayurvedic and modern concepts of Embryo and Fetal development). First week of development, Second week of development, Third week of development, Fourth to eighth week of development (Embryonic period), Development from third month till birth (Fetal period)
7. Formation of Prakriti, their assessment in children viz. Bala, Kumara, Yauvana; Pathya-Apathya according to Prakruti.
8. Apara (Placenta) Apara Nirmana (Formation of placenta), Apara Karya (Functions of placenta), Apara Vikara (Placental abnormalities)
9. Nabhinadi (Umbilical Cord) Formation and features of umbilical cord Garbha Poshana (Nutrition- from conception to birth) Yamala Garbha (twins) Garbha Vriddhikara Bhavas, Garbhopaghatkara Bhavas. Effect of maternal medication, diet and illness over fetus.
10. eratology including defects of bija, atma karma, kal, ashaya etc.: causative factors for teratogenecity, mode of actions of teratogenes, critical periods.
11. Perinatal Care and Perinatal complications.
12. Scientific study of Jataharini specific to children.
13. Prenatal diagnosis.
14. Samanya Janmajata Vikara (Common congenital anomalies of different systems): Sahaja Hridaya Vikara (Congenital Cardiac Disorders) Jalashirshaka (Hydrocephalus), Khandaoushtha (cleft lip), Khanda-Talu (cleft palate), Sanniruddha Guda (Anal stricture / imperforated anus), Pada-Vikriti (Talipes equanovarus and valgus), Tracheoesophageal Fistula (TOF), Spina bifida, Meningocele, Meningomyelocele, Pyloric Stenosis.
15. Navajata Shishu Paribhasha, Vargikarana (Important definitions and classification related to neonates.)
16. Navajata Shishu Paricharya evam Prana-Pratyagamana (Care of the newborn including recent methodology for the resuscitation)
17. Samanya Navajata Shishu Paricharya (General Neonatal Care –Labour room onwards)
18. Samaya purva evam Samaya pashchat Jata Shishu Paricharya (Management of preterm, post term and IUGR newborn)
19. Prasava Kalina Abighataja Vyadhi (Birth injuries): Upashirshaka (Caput , cephalohematoma), Bhagna (Fractures), Mastishkantargata Raktasrava (ICH, IVH, Subdural hemorrhage)
20. Navajata Shishu Parikshana (Examination of new born): Ayu Parikshana (including Lakshanadhyaya) Modern approach of Neonatal Examination including gestational age assessment
21. Kumaragara: Navajata Shishu Kaksha Prabandhana (Nursery management), NICU, Nursery plan, staff pattern, medical records, Visankramnikarana (sterlization), Knowledge of equipments used in nursery.
22. Navajata Shishu Vyadhi (Early neonatal disorders): Hypothermia, Shvasavarodha (Asphyxia Neonatorum/Respiratory distress), Ulvaka (Aspiration pneumonia), Rakta Vishamayata (Neonatal septicemia), Kamala (Neonatal Jaundice), Akshepaka (Neonatal convulsion), Pandu (Anemia), Atisara (Diarrhea), Asamyaka Nabhinal kartanjanya vyadhi.
23. Navjata Kshudra Vikara (Minor neonatal ailments): Chhardi (Vomiting), Vibandha (constipation), Udara shul (Infantile colic), Puya Sphota (Pyoderma), Shishu Netrabhishyanda (Ophthalmia neonatorum).
24. Sadyojatasya Atyayayika Chikitsa (Management of neonatal emergencies): Shock, Fluid and electrolyte imbalance, Convulsion, Hemorrhagic diseases of Newborn etc.
25. Procedures: Shiro-Pichu, Abhyanga, Parisheka, Pralepa, Garbhodaka Vamana (Stomach wash), Ashchyotana Neonatal resuscitation techniques, Blood sampling, Intravenous canulation, Umbilical vein catheterization, Bone marrow aspiration, Phototherapy, Naso-Gastric tube insertion, Urethral catheterization, Exchange blood transfusion, Thoracocentesis, Bone marrow infusion, Lumbar puncture
26. Nutrition: A. Navjat Shishu Ahara (Neonatal feeding) - Specific Feeding methodology as per Ayurveda and recent advances; Day to day fluid, milk, caloric requirement for the newborn, feeding technique for the preterm baby, Stanyotpatti and Prasruti (Lactation physiology), Stanya Samghatana (Composition of breast milk), Stana Sampat (Characteristics of normal breast), Stanya Sampata evam Mahatva (Properties & importance of pure milk), Stanya-Piyusha (Colostrum); Stanya-Pana-Vidhi (Method for breast milk feeding), Stanyakshaya / Stanyanasha (Inadequate production and absence of breast milk), Stanya parikshana (Examination of breast milk), Stanyabhave Pathya Vyavastha (Alternative fueding methods in absence of breast milk), Various feeding methods, TPN(Total Parenteral Nutrition), Stanyadosha (Vitiation of Breast milk), Stanya Shodhana (Purification of breast milk), Stanya Janana and Vardhanopakrama (Methods to enhance breast milk formation), Dhatri (Wet nurse): Dhatri Guna and Dosha (Characteristics of Wet nurse), Concept of Breast Milk Banking. Lehana (Elucturies)
27. Bala-Poshana (Child Nutrition): -Daily requirements of nutrients for infant and children, Common food sources, Satmya and Asatmya Ahara (Compatible and incompatible diet) Pathya evam Apathya Ahara (Congenial and non-congenial diet) ,Stanyapanayana (Weaning)
28. Pranvaha Srotasjanya Vyadhi (Respiratory disorders)- Kasa (Cough), Shvasa (Respiratory distress Syndrome), Tamaka Shwasa (Childhood Asthma), Bronchiolitis, Shvasanaka Jwara (Pneumonia- bacterial, viral etc) Rajyakshma (tuberculosis), Vaksha-Puyata (Pyothorax),Vaksha Vata-Purnata (Pneumothorax)
29. Annavaha Srotasjanya Vyadhi (Gastrointestinal disorders): Jwar (Fever), Chhardi (Vomiting) Ajirna (Indigestion), Kshiralsaka, Atisara (Diarrhea), Pravahika, Vibandha (Constipation, Udarshula (Pain in abdomen), Guda bhramsh (Rectal prolapse)
30. Rasa evam Raktavaha Srotasjanya Vyadhi (Hematological and circulatory disorders): Pandu (Anemia and its various types like Nutritional,haemolytic etc) and , Raktapitta (Bleeding disorders), Vishishta Hridrog (Specific cardiac diseases- RHD etc), Hypertension, Leukemia.
31. Mamsavaha Srotasjanya Vyadhi: Myopathies
32. Mutravaha srotasjanya Vyadhi (Urinary System disorders): Vrikkashotha (Glomerulonephritis and nephrotic syndrome), Mutrakriccha (Dysuria), Mutraghata (Anuria),
33. Vatavaha Sansthanjanya Vyadhi (Nervous system disorders): Apasmara (Epilepsy), Mastulunga-Kshaya, Mastishka-Shotha (Encephalitis), Mastishkavrana-Shotha (Meningitis),
34. Pediatric disabilities and Rehabilitation: Cerebral palsy, Ardita (Facial paralysis), Pakshavadha (Hemiplegia), Ekangaghata (Monoplegia), Adharanga Vayu (diplegia), Amavata (Juvenile Rheumatoid arthritis)
35. Manovaha Srotasa Vyadhi: Breath holding spell, Shayya mutra (Bed wetting), Autism, ADHD (Attention Deficit and hyperactive disorders), Learning Disability, Mental retardation, Temper tantrum, Pica.
36. Antahsravi evam Chayapachayajanya Rog (Endocrine and Metabolic disorders)
37. Kuposhanjanya Vyadhi (Nutritional disorders): Karshya-Phakka-Balshosha-Parigarbhika (PEM and allied disorders), Vitamin-mineral and trace elements deficiency disorders, Hypervitaminosis.
38. Krimi evam Aupsargika Rog (Infestations and Infections):Krimi (Giardiasis and intestinal helminthiasis,Amoebiasis) Common bacterial, viral infections with special reference to vaccine-preventable diseases: Rohini (Diphtheria), Whooping cough, Aptanaka (Tetanus including neonatal tetanus), Romantika (Measles), Karnamula Shotha (Mumps), Rubella and Masurika (Chickenpox), Antrika Jwar (Typhoid and Paratyphoid), Viral Hepatitis,),, Vishama Jwar (Malaria) and Kala-azar, Dengu fever, HIV (AIDS), Poliomyelitis, Mastishkavaran Shotha (Meningitis), Mastishka Shotha (Encephalits), Chickengunia
39. Tvaka Vikara (Skin disorders): Ahiputana (Napkin Rashes), Shakuni (Impetigo), Sidhma, Pama, Vicharchika, Charmadal (Infantile atopic dermatitis), Gudakutta.
40. Anya Vyadhyi (Miscellaneous disorders): Jalodar (Ascites),Gandamala, Apachi (Cervical lymphadenitis), Kukunakadi Akshi Rog, Hodgkin & non-Hodgkin Lymphoma, Abnormal growth patterns, Short stature , Niruddha prakash (Phimosis), Paridagdha Chhavi, Utphullika.
41. Samghata- Bala Pravrita Rog (damstra): Dog bite, Snake bite, Scorpion bite etc

क्रमशः

42. Atyayika Balarog Prabandhana (Pediatric emergency management): Shock and Anaphylaxis, Fluid and electrolyte management, Drowning, Foreign body aspiration, Status epilepticus, Acute hemorrhage, Acute renal failure, Febrile convulsion, Status asthmaticus, Burn, Acute Poisoning
43. Balagraha: Scientific study of Graha Rogs
44. Life Style disorders
45. Significant contributions of Kashyapa samhita, Arogya raksha Kalpadrum and other texts /treatises of Ayurveda such as Harita Samhitain the field of Kaumarbhritya including relevant parts from Brihatrai
46. Panchakarma: Principles of Panchakarma [Swedan-Hasta-Pata sweda etc], and their application in pediatric practice in detail.
47. Update knowledge of clinical pediatrics including recent researches in Kaumarbhritya.
48. Fundamentals of Hospital management with special emphases on Pediatric Ward.

(10) Lecturer, Shalya Tantra:-

1. Sushruta's contributions in surgical concepts and practices.
2. Knowledge of Dosha, Dhatu and Mala Vigyan and their importance in surgical diseases.
3. Significance and importance of Rakta as the Chaturth Dosha.
4. Yantras and Shastras – Surgical Instruments - Ancient and recent advances.
5. Trividha Karma – Purva, Pradhana and Pashchat Karma and its Importance.
6. Asepsis and Antisepsis, Nirjantukarana – Sterilization – Various methods for surgical equipments, laparoscopes, linen and Operation theatre.
7. Surgical infections – Sepsis, Tetanus and Gas gangrene.
8. Care of patients suffering from Hepatitis, HIV-AIDS, STD and other associated infectious diseases.
9. Ashtavidha Shastra Karma – Critical knowledge and their application in surgical practice.
10. Suturing materials, appropriate use of sutures, drains, prosthetic, grafts and surgical implants.
11. Concept of Marma and their clinical application,Shock - Its varieties and management.
12. Raktasrava / Haemorrhage – Types, Clinical features and Management,Concept of Raktastambhana –Haemostasis, Vranasopha – Inflammation and Vidradhi - Abscess.
13. Granthi – Cyst and Arbuda – Benign and malignant Neoplasm – Concept of Oncogenesis and genetics of cancer, Gulma and Udara Roga.
14. Kshudra Roga.
15. Blood Transfusion – Blood groups, compatibility, Indications, Contraindications and complications with management.
16. Knowledge of antibiotics, analgesics, anti-inflammatory and emergency drugs in surgical practice.
17. Yogya Vidhi - Practical and Experimental training - Practice of surgical procedures on different models, Training of Laproscopic and Endoscopic procedures.
18. Vrana – Wound management.
19. Mutra Roga – Urological diseases :- Anatomical and physiological knowledge of kidney, ureter, urinary bladder, prostate, seminal vesicles, urethra and penis, Investigations of Mutravaha Srotas – Urinary tract, Aetiopathogenesis and surgical procedures of Ashmari – Urinary stone diseases, Kidney and ureter – Clinical presentation, Investigations and Management of Congenital anomalies, Trauma, Infection, Neoplasm, Hydronephrosis, Hydroureter and Haematuria, Urinary bladder - Clinical presentation, Investigations and Management of Congenital anomalies, Trauma, Infection, Neoplasm, Diverticulum, Vesico-vaginal fistula, Atony, Schistosomiasis, Urinary diversions, Retention of urine – Mutraghata and Mutrakruccha, Urethra - Clinical presentation, Investigations and Management of Congenital anomalies – Hypospadias, Epispadias, Posterior urethral valve, Trauma, Infection, and Neoplasm, Prostate and seminal vesicles – Benign and malignant enlargement of prostate, Prostatitis, Prostatic abscess and Calculi.
20. Asthi roga and Marma Chikitsa - Orthopaedics
21. Fundamentals of modern surgery and treatment of surgical disorders including surgical anatomy, physiology and pathology.
22. Diagnosis and Surgical treatment of head and spine injury, thoracic trauma and abdominal trauma. Blast injuries and Management.
23. Diagnosis and Surgical management of neck disorders e.g. salivary glands, thyroid, Thyroglossal cyst and Fistula, Branchial cyst and fistula, Cystic hygroma and Lympadenopathies.
24. Diagnosis and Surgical management of breast diseases, Benign and Malignant breast tumours.
25. Diagnosis and Surgical measures of diseases of Gastrointestinal system -
26. Umbilicus and abdominal wall – Congenital anomalies, Umbilical infections, Sinus, Neoplasm, Abdominal dehiscence, Divarication of recti, Desmoid tumor and Meleney's gangrene.
27. Diagnosis and surgical measures of diseases of Hepatobiliary system -
28. Diagnosis and surgical measures for disorders of Artery, Vein, Ligaments, Muscles and Tendons.
29. Diagnosis and surgical management of Hernias – Inguinal, Femoral, Umbilical, Incisional, Abdominal wall and other hernias.
30. Endoscopic procedures - Oesophagogastroduodenoscopy, Sigmoidoscopy and Colonoscopy.
31. Diagnostic and therapeutic laparoscopy.
32. Anaesthesia - Definition, Types, Anesthetic agents, Indications, Contraindications, Procedures, Complications and management.
33. Thorough study of the Sushruta Samhita including other relevant portions of Brihattrayee and Laghutrayee.
34. Knowledge and importance of Surgical Audit.
35. Medico legal issues – Understanding the implications of acts of omission and commission in practice. Issues regarding Consumer Protection Act, medical profession, national health policy - Implications in a medico-legal case like accidents, assaults etc.
36. Surgical ethics including Informed consent.
37. Knowledge of different type of experimental Surgical Model for Research in Surgery.
38. Sandhana Karma – Plastic reconstructive and cosmetic surgery. Fundamentals of Sandhana Karma
39. 1. Anushalya Karma – Parasurgical procedures i. Kshara Karma, Kshara Sutra, Agnikarma and Raktamoskhana.
2. Agnikarma – Therapeutic cauterization, Introduction, definition andimportance of Agnikarma, Agnikarma - Poorva, Pradhana and Paschat karma, various substances and Shalakas used for Agnikarma and their indications, contra-indications and complication, Diagnosis and management of Oil burn, Dhumopaghata, Ushnavata, Sunburn, Frost bite and Electric burn, Knowledge of modern thermal equipment - Diathermy, Laser therapy, microwave, Ultracission technique, Cryo Technique and its uses, Effect of Agnikarma on skin, muscle tissue, nerves, metabolism, blood circulation and infective lesions.
3. Raktamokshana – i. Bloodletting Procedures, Introduction and importance of Raktamokshana.
ii. Indication and contraindication of Raktamokshana,Justification of usage of different types of Raktamokshana in various therapeutic applications, Different types of Raktamokshana – Sastrakritha - Siravyadhana, Prachana and Asastrakritha - Shringa, Jaluka, Alabu and Ghati, Jalauka - Nirukti, Paryaya, Bhedha, Sangrahana,Samrakshana, Jalaukavacharana Vidhi - Poorva, Pradhana and Paschat karma, Knowledge of Leeches - Morphology, Anatomy, Physiology, Bio-chemical effects of its various constituents present in its saliva,Rakta- Importance, Formation, Panchabhoutikatva, RaktaSthana, Guna, Prakurta Karma and Rakta Sara Purushalakshanas. Suddha and Dushta Rakta Lakshanas. Rakta Pradoshaja Vyadhis.

(11) Lecturer, Shaalkya:-

1. Available literature of Netra roga vigyana in Brihattrayi, Laghuttrayi, Yogaratnakar, Chakradutta, Bhel Samhita, Harita samhita and Kashyap samhita.
2. Critical analysis of the available literature of netra roga vigyana in the above given classics e.g. Puyalasa and Vatahata Vartma In Sushruta samhita and Vagabhat samhita.
3. Unique/ specific contribution of different classics, Acharyas and commentators in the development of Netra roga vigyana.
4. Analytical determination of subjects related to eye disorders in ancient and modern literatures.
5. Update chronological development of Netra roga vigyana right from Vedic period.
6. Update chronological development of Ophthalmology.
7. Enumeration and classification of Netra Rogas.
8. Descriptive knowledge of *etiology, pathogenesis, prodomal symptoms, clinical features, complications and prognosis of* pakshma -vartma- *sandhi*- - shukla- Krishnadristi & sarvagata rogas along with exogenous eye diseases available in Ayurvedic classics. Medical and surgical Management of the above diseases with special skill development in Ashtavidha shastra & Trividha Anushastra chikitsa related to Netra roga.
9. Netra kriya kalpa procedures like seka, ashchiyotana, vidalaka, pindi, tarpan, putapaka & anjana and their practical application and analysis based on ocular pharmacology. Standard operative procedures for Kriyakalpas including Aushada kalpanas.
10. Study of nayanabhighata and, its management and prevention.
11. Knowledge of preventive and community ophthalmology along with national programme for control of blindness and role of Ayurveda.
12. Ayurvedic Concept of Congenital, developmental and neoplastic diseases of netra.
13. Knowledge and application of current diagnostic techniques and equipments and therapeutics in Ophthalmology.
14. Detailed study of refractive errors along with defects of accommodation and their management.
15. Detailed knowledge of classification, etiology, pathogenesis, signs and symptoms, differential diagnosis, prognosis and complications of diseases of eye orbit, lacrimal apparatus, lids, conjunctiva, cornea, sclera, uveal tract, lens, vitreous, retina, optic nerve and visual pathway with comprehensive knowledge of their medical and surgical management.
16. Ocular trauma, its emergencies and management.
17. Ocular motility disorders and their medical and surgical management.
18. Neurological and systemic disorders affecting the eyes and their management.
19. Update advances in the development of Ayurvedic drug formulations, therapeutic procedures and treatments of Netra roga.
20. Advanced technologies in the diagnosis of eye diseases, Advanced technologies & techniques in the medical & surgical management of Netra roga.
21. Advanced management and technologies in Ophthalmology.
22. Detailed study of recent research works on chakshushya dravyas.
23. Comparative and critical study of modern advances in surgical techniques over the surgical methods described in Ayurvedic classics.
24. Detailed study of Shalakyatantra from Bruhat trayee, Laghutrayee, Kashyap samhita, Yoga ratnakar, Chakradutta, Bhel samhita , Harita samhita and other granthas.
25. Examination of the ear, nose, throat and shira patients.
26. Karna-Nasa –Kantha –and Shira rogas samkhya samprapti, descriptive knowledge of etiology, pathogenesis, prodromal symptoms, classification, clinical features, Upasaya-Anupsaya(prognostic measures) sadhyasadhyatwa and, complications of ear disorders described in the classics of Ayurved. Detail description along with practical orientation of their management.
27. Nasa rogas samkhya samprapti, descriptive knowledge, etiology, pathogenesis, prodomal symptoms, classification, clinical features, Upasaya-Anupsaya (prognostic measures), sadhyasadhyatwa and complications of nasal diseases described in the classics of Ayurved. Detail description along with practical orientation of their treatment.
28. Kantha rogas samkhyasamprapti, descriptive knowledge about etiology, pathogenesis, prodromal symptoms, classification, clinical features, Upasaya- Anupsaya (prognostic measures),sadhyasadhyatwa and complications of kantha diseases described in the classics of Ayurved. Detail description along with practical knowledge of treatment.
29. Shira and Kapala (cranial vault) disorders samkhya samprapti, descriptive knowledge, etiology, pathogenesis, prodromal symptoms, classification, clinical features, Upasaya-Anupsaya (prognostic measures) and complications of Shira and kapala diseases described in the classics of Ayurved. Detail description along with practical knowledge of treatment.

क्रमशः

30. Descriptive knowledge of instruments and recent equipments available for diagnosis of ear – nose – throat – head disorders along with their practical application.
31. Descriptive knowledge of etiology, pathogenesis, clinical features, differential diagnosis, classification along with complications of different ear – nose- throat and
32. head disorders. Detail knowledge of the treatment (including conservative and surgical) of the above mentioned disorders.
33. Imaging in ENT and Head disorders, detailed knowledge of LASERS, radiotherapy, chemotherapy and other recently advanced treatment modalities like speech therapy, cochlear implant, rehabilitation of the deaf and mute, etc. related to ear – nose – throat – and head disorders.
34. Management of emergencies in ENT and head disorders
35. Knowledge of agropaaharniya and d trividha karma i.e pre operative, operative and post operative measures. Knowledge of eight types of surgical procedures (Astavidha Sasthra Karma) and post operative care of the patient with respect to ENT disorders (Vranitopasaniya).
36. Practical knowledge of updated surgical procedures in ear – like constructive surgery of external and middle ear,excision of pre auricular sinus, Tympanoplasty, Mastoidectomy, Stapedectomy, Endolymphatic sca surgery, Facial nerve decompression surgery, Cochlear implant, etc with their complications and their management
37. Nose – Septo-rhinoplasty, SMR, Functional Endoscopic sinus surgery,Caldwell luc surgery, Antral puncture,Antral lavage,Turbinectomy,Polypectomy, Various surgical procedures done for malignancy of Nose and paranasal sinuses,Young's surgery,etc
38. Throat - Adenoidectomy, Tonsillectomy, Surgical procedures for pharyngeal abscesses, cauterization of pharyngeal wall granulations, tracheostomy, vocal cord surgery, surgery of vocal cord paralysis, management of laryngeal trauma, laryngectomy,etc.
39. General introduction of four treatment procedures like Bheshaj– Kshar – Agni– Shastra and Raktavsechana with their applied aspects in ear nose throat and shiro disorders . Chaturvidha upakrama in raktasandhan vidhi related to ear nose throat and head disorders. Haemostatic management in ENT.
40. Removal of foreign bodies in the ear nose throat and shira as per Ayurveda and modern science.
41. Karna-Sandhan Nasa-Sandhan, fundamental and applied aspects of Ayurveda.
42. Etymology, definition and importance of the word 'Shalakya', History and development of the science of oral and dental diseases. Etymology and synonyms of the word 'Mukha' and 'Danta'. Ancient and recent knowledge of anatomy of oral cavity and teeth along with the knowledge of salivary glands.
43. Detailed study of Oral cavity and gustatory physiology.
44. Oral hygiene, Social aspect of oral hygiene, preventive measures in oral cavity diseases, general etiology, pathogenesis, prodromal symptoms, clinical features and general management of oral cavity diseases.
45. Agropaharaniya, knowledge of purva, pradhan and pashchat karma. Study of Ashta Vidha Shastra Karmas in relation to Danta and Mukha Roga.
46. Applied and detailed study of therapeutic measures for oral and dental disorders, like Kavala, Gandusha, Dhumapana, Nasya, Murdhtaila Mukhalepa and Pratisarana and their definition, types, indications, contraindications, procedure, features of proper,excess, deficient application and their management.
47. Importance of shodhan and shaman treatment in oral and dental diseases and knowledge of common recipes useful in oral and dental diseases.
48. General introduction of four types of treatment (Bheshja, Shastra, Kshara, Agni). Detail description of Anushastra karma, their practical knowledge in oral and dental diseases.
49. Analytical determination of related subjects of danta-mukha disorders available in ancient and modern commentaries of different Samhita.
50. Examination of oral cavity, periodontia and teeth. Teeth eruption and its systemic disturbances in a child, Classification, Number of teeth along with detail knowledge of abnormal tooth eruption. Dental disorders in paediatric age group, their prevention and treatment.
51. Danta gata rogas - Dental diseases detailed in the classics of Ayurved, their etiology, pathogenisis, prodromal symptoms, clinical features, complication and applied approach in the treatment of dental diseases.
52. Detailed study of etiology, pathogenesis, prodromal-symptoms, clinical features, complications and prognosis of diseases of the Danta-Mula Gata Roga (gum- periodontia) as detailed in the classics of Ayurved. Practical approach/orientation in Treatment of the periodontal diseases.
53. Oshtha (lip), Jihva (tongue) and Talu (palate) Rogas, detailed study of etiology, pathogenesis, prodromal - symptoms, clinical features, complications and, prognosis. Detailed description of their treatment along with practical orientation.
54. Sarvasara Mukharogas (Generalized oral diseases) available in ayurvedic classics. Detailed study of etiology, pathogenesis, prodromal-symptoms, clinical features, complications, prognosis and management of mukha rogas along with practical orientation.
55. Knowledge of Dantabhighata (dental trauma) and Mukhabhighata (oral injury) along with diagnostic and referral skills.
56. Detail study of etiology, pathogenesis, clinical features, classification and complication of various oral and dental diseases available in literature of Modern sciences. Detail study of their recent available medical therapeutics.
57. Detail description of diagnostic technology in the diagnosis of oral and dental disease.
58. Study of essential modern drugs, anaesthetic agents of diagnostic and surgical importance.
59. Descriptive Knowledge of up-to-date available modern instruments and their application for examination, diagnosis and management of oral, periodontal and dental diseases.
60. Up-to-date knowledge of applied and available surgical procedures indicated in various dental diseases like tooth extraction, RCT, Dental filling, filling materials, tooth fixation and tooth implants etc, Systemic Effects of oral, periodontal and dental diseases.
61. Jaalandhara Bandha, its importance and application in Tooth extraction
62. without anaesthesia, Vishishta Upadanta parikalpana (Dental Material and Prosthesis).
63. Recent Research studies and advanced clinical applications of Kriya Kalpas in Danta and Mukha Rogas, Detailed study of recent available medical therapeutics and Research studies in Dental and oral cavity disorders.
64. Adavnced diagnostic technology in Dentistry and oral pathology, Benign and malignant tumors of Oral Cavity, their management and role of Ayurveda in Such conditions.
65. Useful conducts for treatment of oral and dental diseases with study of related medico-legal aspects.

(12) Lecturer, Panchkarma:-

1. Panchkarma in Ashtanga Ayurved and Significance of Shodhana
2. Ama and Shodhana, benefits of Shodhana, Samikshya Bhavas in Shodhana,
3. Importance of Pachana prior to Snehana, methods, drugs, duration and dose for Pachana, samyak Lakshana of Pachana
4. Etymology and definition of Sneha and Snehana,General considerations about Snehana
5. Classifications of Sneha, Sneha-Yoni, detailed knowledge of four types main Sneha-Ghrita, Taila, Vasa and Majja with their characteristics, importance and utility, various aspects of Uttama Sneha
6. Properties of Snehana Dravya and their interpretation, Effects of Snehana, Sneha Kalpana, various types of Sneha Paka with their utility, Indications and contraindications of Snehana
7. Classification of Snehana: Bahya and Abhyantara Snehana, Bahya Snehana and Bahir-Parimarjana, utility and importance of Bahya Snehana, Classification of Bahya Snehana
8. Methods, indications, contraindications, specific utility of the followings Abhyanga, Mardana, unmardana, Padaghta, Samvahana, Udvartana/Utsadana, Udgharshana, Avagaha, Pariseka, Lepa, Pralepa, updeha, Gandusha, Kavala, Karana and Nasa Purna, Akshi Tarpana, Murdhni Taila: Shiro-abhyanga, Shirodhara, Siro Pichu and Siro Basti, Shiro Lepa (Talapotichil), Talam and Takradhara, etc.
9. Knowledge of digestion and metabolism of fat, Karmukata of Abhyantara and Bahya Snehan
10. Knowledge of different western massage techniques
11. Abhyantra Snehana: Brimhnartha, Shamanartha and Shodhanartha, definition, method and utility of Brimhanartha and shamanrtha Snehana, difference between Shamanartha and Shodhanartha Snehana, Methods of Abhyantar Snehana
12. Shodhanartha Snehana: Acchapana and Vicharana, Utility and various methods of Sadyasnehana, Avapidaka Sneha
13. Matra of Sneha : Hrasiyasi, Hrasva, Madhyama and Uttma Matra with their indications, specific utilty of Ghrita, taila, Vasa and majja; Anupana of Sneha
14. Need and method of Rukshana before performing Snehana in specific conditions and Samyak Rukshana Lakshana
15. Shodhannga Snehana Vidhi and methods of fixation of dose iet and Pathya during Snehana, Observation of sneha Jiryamana, Jirna and Ajirna Lkashana, Samyak, Asnigdha and Ati Yoga Lakshana of Snehana, Snehs vyapta and their management,Pariharya vishaya and Parihara Kala
16. Etymology and definition of Svedana, General considerations about Svedana
17. Properties of Svedan and Svedopaga Dravya, Indications and contraindications of Svedana
18. Various Classifications of Sveda and Svedna, Detailed knowledge of four types of Sveda of Sushruta with their utility; Utility and method of each of 13 types of Sagni and 10 types of Niragni Sveda, Shodhannga and Samshamaniya Sveda
19. Methods to protect the vital organs (varjya anga) during Svedan Procedure
20. Detailed Knowledge about Utility of below mentioned Svedan procedures:- Patrapinda Sveda, Shashtika Shalipinda Sveda, Churna Pinda Sveda, Jambira Pinda Sveda, Dhanya Pinda Sveda, Kukkutanda Sveda, Anna lepa, Valuka Sveda, Ishtika Sveda, Nadi Sveda, Bashpa Sveda, Kshira bashpa Sveda, Avagaha Sveda, Parisheka Sveda, Pizichil, Dhanyamla Dhara, Kashaya Dhara, Kshira Dhara and Upanaha Sveda.
21. Avasthanusari Svedana in various disorders, Samyak, Ayoga and Atiyoga Lakshana, Sveda Vyapat and their management, Diet and regimens during and after Svedana, Karmukata of Svedana
22. Current sudation modalities like Sauna bath, Steam Bath, Infrared, etc.
23. Svedana with Kati Basti, Janu Basti and Griva Basti
24. Study of Snehana and Svedana related portions in classics with commentaries: Etimology, definition and general considerations of vamana, Properties of Vamaka and Vamanopaga drugs, Knowledge and utility of important Vamaka drugs and their preparations (Vamana Yoga), Avasthanusara Vamana and its utility, Indications of Vamana, Contraindications of Vamana with reasons, Pachana prior to Snehana, Detailed knowledge and method of preparation of patient with Snehana, Abhyanga and Svedana as Purvakarma of Vamana
25. Diet and management of gap day Need of increasing of Kapha for proper Vamana, Kapha increasing diet
26. Management of Patients on the morning of Vamana
27. Administration of food articles prior to Vamana
28. Drug, time, Anupana, Sahapana, dose and method of administration of Vamana and Vamanopaga preparations
29. Method of Vamana Karma, waiting period for automatic Vamana Vega and manipulation in its absence
30. Observations prior to beginning of Vamana such as sweat on forehead, horripilation, fullness of stomach and nausea
31. Observation and assistance of the patient during Vamana
32. Vega and Upavega of Vamaana and its counting, observations and preservation of vomitus matter and its weighing
33. Samyak, Ayoga and Atiyoga of Vamana
34. Laingiki, Vaigiki, Manaki and Antiki Shuddhi,
35. Hina, Madhya and Pravara Shddhi and Samsajana Krama accordingly
36. Detail knowledge of methods of Samsarjana Krama and its importance
37. Kavala and Dhumapana after vamana
38. Management of Ayoga, Atiyog and Vyapat of Vamana with Ayurveda and modern drugs
39. Parihara Vishaya and Kala for Vamana
40. Vamana Karmukata with Pharmaco-dynamics of Vamana
41. Internal Snehana for Virechana with diet
42. Management of 3 gap day with diet and importance of low Kapha for proper Virechana
43. Abhyanga and Svednana as Purvakarma of Virechana
44. Management of Patients on the morning of Virechana

क्रमशः

45. Virechana should be performed in empty stomach
46. Drug, dose, time, Anupana, sahapana and method of administration of Virechana and Virechanopaga preparations
47. Method of performing of Virechana Karma
48. Observations during Virechana, Vega and Upavega of Virechana and its counting, observations and preservation of fecess and its weighing
49. Samyak, Ayoga and Atiyoga of Virechana
50. Laingiki, Vaigiki, Manaki and Antiki Shuddhi of Virechana
51. Hina, Madhya and Pravara Shddhi and Samsajana Krama accordingly
52. Detail knowledge of methods of Samsarjana Krama and its importance, and Tarpana krama and its importance
53. Management of Ayoga, Atiyog and Vyapat of Virechana with Ayurveda and modern drugs
54. Parihara Vishaya and Kala for Virechana
55. Virechana a Karmukata with Pharmaco-dynamics of Virechana
56. Applied anatomy and physiology of Gastrointestinal system related with Vamana and Virechana
57. Study of Vamana and Virechana related portions in classics with commentaries
58. Recent advances of researches on the effect of Vamana and Virechana
59. Scope of research for Vamana and Virechana.
60. Role of Vamana and virechana in promotion of health prevention and treatment of diseases
61. Niruha basti Etymology, synonyms, definition and classifications and subclassifications of Niruha Basti and detailed knowledge of each type of Niruha Basti along with indications and contraindications and benefits Contents of various types of Niruha Basti, their peoportions, methods of mixing basti Dravya, Relation of Virechana, Shodhana, Anuvasana Basti with Niruha Basti Purvakarma for Niruha Basti; Pathya before, during and after Niruha Basti; all the aspects of administration of various Niruha Basti Observations during and after Niruha Basti Basti Pratyagamana, Samyakyoga, Ayoga and Atiyoga Lakshana and Various Vyapat of Niruha Basti and their management according to Ayurved and Modern Systems of Medicines Management during and after Niruha Basti Pariharya vishaya and pariharakala,
62. Anuvasana basti Etymology, synonyms, definition and classifications of Anuvasana Basti and detailed knowledge of each type of Anuvasana Basti along with indications and contraindications and benefits Various types of Ghrita and Taila useful in Anuvasana Basti, Anuvasana Basti with Vasa and Majja along with their merits and demerits Relation of Virechana, Shodhana, Niruha Basti, Snehana with Anuvasana Basti Purvakarma for Anuvasana Basti; Pathya before, during and after Anuvasana Basti;all the aspects of administration of Anuvasana Basti including Kala Observations during and after Anuvasana Basti Anuvasana Basti Pratyagamana, Samyakyoga, Ayoga and Atiyoga Lakshana and Various Vyapat of Anuvasana Basti and their management. Management during and after Anuvasana Basti Pariharya vishaya, Pathya and pariharakala for Anuvasana Various combined basti schedules such as Karma, Kala, yoga Basti etc. Detailed knowledge of Matra Basti Detailed Knowledge of different basti formulations like Piccha Basti, Kshira Basti, Yapana Bastis, Madhutailika Basti, Erandamuladi Niruha Basti, Panchaprasrutika Basti, Kshara Basti, Vaitarana Basti, Krimighna Basti, Lekhana Basti,Vrishya Bsti,Manjishtadi Niruha Basti,Dashamula Basti, Ardhamatrika Basti,Sarva roghara Niruha Basti,Brimhana Basti, Vataghna Basti, Pittaghna Basti and Kaphaghna Basti etc, and their practical utility.
63. Uttara basti :- Definition and Classification of Uttara Basti, its Netra and Putaka. Dose of Uttara Basti Sneha and Kashaya Basti. Different Uttara Basti Kalpanas in various diseases.
64. Nasya Karma :- Etymology, synonyms, importance and definition of Nasya, Nasya drugs according to various Samhita, Classifications and sub-classifications of Nasya with detailed knowledge of each type, Indications and contraindications of each type of Nasya with reasons, Drugs useful for Nasya with Dose and methods of preparations and their doses, Nasya Kala and Pathya before, during and after Nasya; Duration of different Nasyas, Purvakarma of each types of Nasya, Detailed knowledge of administration of each type of Nasya with management during and after Nasya, Detailed knowledge of common Nasya formulations such as Shadabindu Taila, Anu taila, Kshirabala Taila, Karpasastyadi Taila, Bramhi Ghrita, Samyak yoga, Ayoga and Atiyoga of each types of Nasya, its Vyapat and their management, Pashchata Karma; Role of Dhumapana, Kavala after Nasya, Diet and Pathya before, during and after Nasya Karma, Pariharya vishaya, Parihara Kala,
65. Raktamokshana- Definition, importance, classifications and detailed knowledge of each type of Raktamokshana with their methods of performance, General principles, indications, contraindications of Raktamokshana, Detailed knowledge of Jalaukavacharana: Indications and contraindications of Jalaukavacharana, various tyoes of Jalauka with their beneficial and harmful effects.

Disease-wise Panchakarma- Role of Panchakarma in Different Stages of the following Diseases: Jvara, Raktapitta, Madhumeha, Kushtha, Shvitra, Unmada, Apasmara, Shotha, Plihodara, Yakridaluodara, jalodara,, Arsha, Grahani, Kasa,Tamaka Shwasa, Vatarakta, Vatavyadhi, Amlapitta, Parinama Shula, Ardhavabhedaka, Ananta Vata,, Amavata, Sheetapitta, Shleepada, Mutrakruchchra, Mutrashmari, Mutraghata, Hrudroga, Pinasa, Drushtimandya, Pandu, Kamala, Sthaulya, Krimi, Madatyaya, Moorchcha, Padadari, Mukhadushika, Khalitya, Palitya, Use of Various panchakarma Procedures in the following disorders - Migraine, Parkinson's Diseasse, trigeminal neuralgia, Bell's palsy, cerebral palsy, Muscular dystrophy, hemiplegia, paraplegia, Lumbar Disc disorders, Spondylolisthesis, Ankylosing spondylosis, Carpel Tunnel Syndrome, Calcaneal Spur, Plantar fascitis, GB syndrome, Alzhiemer's disease, Irritable Bowel Syndrome, ulcerative colitis, psoriasis, hypothyroidism, hyperthyroidism, hypertension, allergic rhinitis, , Eczema, diabetes mellitus, Chronic obstructive pulmonary Disease, Insomnia, Rheumatoid Arthritis, Gout, Osteoarthritis,multiple sclerosis, SLE, male & female infertility, cirrhosis of liver, Jaundice, General Anxiety Disorders.

❑❑❑❑❑